UNIVERSAL LIBRARY
OU_178917
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 85 V78S Accession No. G. H. 1842

Author विनोबा

Title सर्वोदय यात्रा 1952

This book should be returned on or before the date last marked below.

राजेन्द्र-स्मृति ग्रन्थ-माला—८

सर्वोदय यात्रा

विनोबा

★

सर्वापदामन्तकरं सर्वोदय-तीर्थमिदं तवैव ।
—आचार्य समन्तभद्र

भारत जैन महामण्डल, वर्धा
१९५१

प्रकाशक :
रिषभदास रांका
अध्यक्ष,
भारत जैन महामण्डल, वर्धा

पहला संस्करण ५५००

मूल्य : एक रुपया

मुद्रक :
जमनालाल जैन
व्यवस्थापक
श्रीकृष्ण प्रि० वर्क्स, वर्धा

प्रकाशक की ओर से

तीसरे सर्वोदय सम्मेलन शिवरामपल्ली (हैदराबाद) में सम्मिलित होने के लिए जाते हुए पू० विनोबाजी रास्ते के मुकामों पर जो प्रार्थना-प्रवचन दे रहे हैं उन में से शुरू से लेकर ता० २८ मार्च तक इस संकलन में दिए गए हैं।

सर्वोदय का आदर्श बहुत प्राचीन है। दो हजार वर्ष पूर्व जैनाचार्य समन्तभद्र ने 'सर्वोदय-तीर्थ' की भावना व्यक्त की थी। उन्होंने कहा था, 'सर्वोदय-तीर्थ सब की समस्त आपदाओं को दूर करनेवाला है।' आज के युग में बापू ने इसे व्यवहार में लाया और विनोबा तो अब उस के यात्री ही बन गए हैं।

महामण्डल की ओर से इन प्रवचनों को प्रकाशित करते हुए हमें विशेष आनन्द हो रहा है। हम पू० विनोबाजी और ग्राम सेवा-मण्डल, नालवाड़ी के विशेष कृतज्ञ हैं, जिनकी कृपासे हमें यह सद्भाग्य प्राप्त हुआ। और जिन मित्रों की मेहनत और तत्परतासे यह संकलन शीघ्र निकाला जा सका, उन्हें भी नहीं भुलाया जा सकता। उनके हम आभारी हैं।

हमें आशा है यह पुस्तिका नैतिक विकास, चरित्र निर्माण तथा देश मे सेवा भावना और समभाव बढ़ाने में मददगार साबित होगी।

राजेंद्र-स्मृति ग्रंथमाला का यह आठवा पुष्प है।

वर्धा
३-४-५१

ऋषभदास रांका
अध्यक्ष, भारत जैन महामण्डल

अनुक्रमणिका

प्रास्ताविक		श्री वल्लभस्वामी	
प्रवचन			
१	संकल्प	...	१
२	परंधाम आश्रम से बिदा	...	३
३	वर्धा वासियों से बिदा	...	६
४	देहात के मजदूरों का प्रश्न	...	९
५	जन सेवा ही परमेश्वर की पूजा	...	१४
६	हाथ-चक्की और हरि-नाम	...	२१
७	स्त्रियों की जिम्मेवारी	...	२६
८	श्रम और प्रेम से स्वराज्य का उदय	...	२८
९	स्वराज्य लक्ष्मी का आवाहन	...	३१
१०	नाम जैसा ही काम	...	३५
११	आत्म-जाग्रति से ही दुख मिटेगा	...	४२
१२	भगवान का ही काम और नाम	...	४८
१३	लघु-आरम्भ का दीर्घ-फल	...	५१
१४	सेवा ही तीर्थ-यात्रा है	...	५४
१५	ग्रामोद्योग न छोड़ें	...	५७
१६	व्यापार सेवा के लिए	...	६३
१७	देहात के काम	...	७०
१८	ग्राम राज्य	...	७६
१९	सर्वोदय की महिमा	...	८२
२०	सच्चा वर्णाश्रम धर्म	...	९०
२१	गांव गोकुल बने	...	९६
२२	सच्चा स्वराज्य	...	९९
२३	हमारे पाप	...	१०३
२४	सज्जनों का समाज	...	११८
२५	गांव स्वर्ग-भूमि है	...	१२३
२६	पैदल-यात्रा का इतिवृत्त	दत्तोबा दास्ताने	१२९

प्रास्ताविक

शिवरामपल्ली (हैदराबाद द.) में ता. ८ से ११ अप्रैल '५१ को होने वाले सर्वोदय-सम्मेलन में भाग लेने के लिए विनोबाजी परंधाम (पवनार) से ८ मार्च को सुबह पैदल निकले हैं। सारे देश में इससे आनंद की लहर फैल गयी है और साथ ही प्रेरणा की भी, क्योंकि जिस चीज की आज देश को जरूरत है, और जिसकी साधना के लिये कुछ काल के लिये ही क्यों न हो, परंधाम पर ही स्थिर रहने का तय करके विनोबाजी साम्ययोग के प्रयोग में जुटे हुये थे, वह साधना है—अर्थ की अनर्थकारी, परावलंबी और सुखाभासी बेड़ियों में से आम जनता को छुड़ा कर श्रम की श्रेयस्कारी, स्वावलंबी, सात्विक और सुखदायी जीवन-क्रम की प्रतिष्ठापना। उसको इस यात्रा से खूब चालना मिली है, मिल रही है, मिलने वाली है।

देश की पुकार प्रतिध्वनित हुई

देश के अन्य लोगों के समान ही विनोबाजी के निकट परिचितों के लिए भी यह यात्रा-निर्णय आनंददायी और अनपेक्षित है। खुद विनोबाजी के लिये भी यह अनपेक्षित है और इसीलिए उन्होंने इस निर्णय का वर्णन 'ईश्वर-प्रेरित' ऐसे शब्दों में किया है। ता० ६ मार्च को सर्व-सेवा-संघ की बैठक थी। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी की विनती से सातवें नयी-तालीम-संमेलन के निमित्त से ता० २७ फरवरी से ७ मार्च तक सेवाग्राम में रहना विनोबाजी ने तय किया और इसीलिए सर्व-सेवा-संघ की ता० ६ मार्च की बैठक भी वहीं रखी गयी। बैठक के सामने शिवरामपल्ली-संमेलन का कार्यक्रम और विषय-सूची वगैरह तय करने का मुख्य कार्य था।

दो

इसी सिलसिले में सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-संघ में परस्पर संबंध क्या हैं, क्या हों, आदि चर्चा भी छिड़ी, क्योंकि इस बारे में बहुतेरों के ख़याल साफ़ नहीं हैं—यद्यपि अंगुल संमेलन के बाद 'सर्वोदय' मासिक में विनोबाजी की लिखी हुई 'सर्वोदय-समाज और सर्व-सेवा-संघ' नाम की एक टिप्पणी को देखते हुए कोई ग़लतफहमी, दुविधा या असमंजसता का कारण नहीं रहना चाहिए। चर्चा के दौरान में एक भाई ने विनोबाजी से पूछा कि आप संमेलन में आने वाले हैं या नहीं? विनोबाजी ने कहा, "आने का विचार नहीं है।" निकट परिचितों के लिए यह उत्तर अनपेक्षित नहीं था, क्योंकि इस बारे में पहले भी बातें हो चुकी थीं। लेकिन प्रश्नकर्त्ता भाई के लिए यह उत्तर शायद अनपेक्षित और आज के कुल हालात को देखते हुए अप्रस्तुत भी था। उन्होंने बड़े दर्द के साथ, लेकिन उतनी ही दृढ़ता से और 'एक घाव-दो टूक' शब्दों में कहा कि "सर्वोदय-समाज और संमेलन आपकी ही प्रेरणा का फल है, अभी वह बाल्यावस्था में है। दूर-दूर से सेवक सत्संग के लिए आते हैं एवं ख़ास नेतृत्व न मिलने से निराश-से लौटते हैं। ऐसी हालत में आप न आवें तो कैसे चलेगा? इसके बजाय तो संमेलन बंद कर देना बेहतर होगा।" विनोबाजी के न आने में क्या जिम्मेवारियाँ और दिक्कतें हैं, उनका भी फिर थोड़ा-सा जिक्र हुआ। फिर भी विनोबाजी जानते थे कि उस भाई की कही हुई बात ही हम सबके भी मन में है। क्षण-भर के लिए विनोबाजी स्तब्ध रहे। न मालूम उन्होंने उस क्षण में क्या-क्या विचार किया! किसे मालूम कि जिस "भूत मात्र में हरि भावना" का इन दिनों वे चिंतन, उच्चारण और आचरण तीव्रता से कर रहे हैं, करने को कह रहे हैं, उसी भावना से उन्होंने हम सबकी इच्छा की ओर देखा हो। नहीं आने की बात जितने शब्दों में और जिस तटस्थता से कही थी,

उतने ही शब्दों में और उतनी ही तटस्थता से उन्होंने कहा, "अच्छा, मैं आता हूँ।" जवाब का उच्चारण करने के पहले उन्होंने पूछ लिया कि संमेलन-स्थान यहाँसे कितनी दूर है। जवाब मिला—तीन सौ मील समझ लीजिये। विनोबाजी के आने की बात सुन कर सबको आनंद हुआ, लेकिन शायद ही किसी के खयाल में आया हो कि विनोबाजी संमेलन में पैदल आवेंगे।

अपवाद भी नहीं

बैठक के बाद तुरंत ही आश्रम की प्रार्थना थी। प्रार्थना के अंत में विनोबाजी ने संमेलन में जाने की बात का जिक्र किया और कहा कि "कल सुबह यहाँ से परंधाम जाने का पहले से तय ही है, वहांसे परसों याने ८ तारीख को संमेलन के लिए पैदल निकलूंगा। वाहन का उपयोग न करने का मैंने कोई व्रत नहीं लिया है और अर्थोच्छेद की मेरी कल्पना में, जो कि आज सुबह की प्रार्थना में मैंने कही है, रेल्वे आदि का परित्याग अनिवार्य है ऐसी भी बात नहीं है, फिर भी मैंने पैदल जाने का ही तय किया है। क्योंकि जो विचार पूरा विकसित नहीं हुआ है, जिसका सांगोपांग दर्शन हमें अबतक नहीं हुआ है, उस अविकसित दशा में अपवाद करने की मेरी मनोवृत्ति नहीं है। इसलिए पैदल के बजाय वाहन से जाने के लिए मुझे कायल करने में मित्र लोग अपनी बुद्धि-शक्ति न चला कर, पैदल यात्रा कैसे सुखकर-शुभकर होगी इसका खयाल करें।"

सेवाग्राम-आश्रम का श्रम-जीवन-संकल्प

प्रार्थना के बाद निकटवर्ती लोगों का यही काम रहा कि नक्शे देख कर किस रास्ते से, किन मुकामों से जाना आदि विनोबाजी से तय करें। दूसरे लोग मिलने और एक तरह से विदा लेने-देने के लिए आते-जाते थे। ता० ७ की सुबह की प्रार्थना में महादेवी ताई ने "जेथे जातो

तेथें तूं माझा सांगाती'–'जहाँ जाता हूँ वहाँ तू मेरा साथी है।' यह तुकाराम का अभंग गा कर मानों प्रस्थान का आरंभ कर दिया। प्रार्थना के अंत में बोलते हुए विनोबाजी ने एक तरह से आश्रमवासियों से बिदा ली। कहा कि 'आश्रमवासी और अन्य संबंधितों की परसों की बैठक में यह तय हुआ है कि १ जनवरी, १९५२ से आश्रम पैसे में से मुक्त हो जायगा। आश्रमवासियों द्वारा खेती आदि में किये हुए परिश्रम और लोगों से मिलने वाले श्रमदानपर ही आश्रम चलेगा। यह एक शुभ निर्णय है और यही शोभा देता है, क्योंकि बापू के बाद आश्रम यहाँ चलता है, तो वह आखिरी आदर्श के अनुरूप चलाने की कोशिश हो, वरना वह बंद रहे, यह अच्छा है। आश्रम यहाँ न चलता हो तो भी लोगों को इस स्थान से स्फूर्ति तो मिलती ही रहेगी। पैसे के दान पर आश्रम चला कर भी एक तरह की सेवा होगी। लेकिन वैसे देखें तो कौन सेवा नहीं कर रहा है? एक किसान भी सेवा करता है, लेकिन आज जरूरत है लोगों के दिलों में क्रांति करने की। वह बिना परिश्रम के, बिना प्रचलित अर्थ-व्यवस्था को तोड़े नहीं होगी।"

देखि रे मैंने निर्बल के बल राम'

निकलने के नियत समय के कुछ पहले तालीमी संघ का सारा कुटुंब सुबह की प्रार्थना के लिए विनोबा के निवासस्थान के पास आ पहुंचा। विनोबा के साथ सबने खड़े-खड़े प्रार्थना की, 'सुने री मैंने निर्बल के बल राम' यह भजन गाया गया। आखिर में विनोबाजी ने दो शब्द कहे: "आप नयी तालीम का महान् काम कर रहे हैं। आशादेवी और आर्यनायकम्जी ने अपने को इसमें खपा दिया है। उन दोनों का प्रेम मुझे हमेशा मिलता रहा है। आपने यहाँ आ कर प्रार्थना कर के मेरी पैदल यात्रा के लिए खूब बल दिया है। अभी तक के सब संतों का अनु-

भव है–'निर्बल के बल राम।' मेरे जीवन का भी यही अनुभव है। हा, मैं लिखने बैठूं तो "सुने री" के बदले लिखूंगा कि 'देखि रे मैंने निर्बल के बल राम।"

आत्मानुभूति का साक्षात्कार

सेवाग्राम से सीधे पवनार जायेंगे ऐसा अंदाज था, लेकिन विनोबा जी ने कहा, मैं बजाज-वाड़ी में किशोरलाल भाई से मिल कर वहां से पवनार आऊंगा। किसीने हिसाब किया, कुल ९ मील चलना पड़ेगा। विनोबाजी ने कहा, हररोज १०-१२ मील चलना ही है न? आज ९ मील से शुरू कर दें। फिर वे महिलाश्रम में लड़कियों से बिदा लेते हुए बजाजवाड़ी पहुंचे। किशोरलालभाई आदि से मिल कर गोपुरी हो कर पवनार करीब ११ बजे पहुंचे होंगे। पवनार के ग्रामवासी विशेष संख्या में शाम की प्रार्थना में हाजिर थे। वे विनोबाजी के दो शब्द सुनने को आये थे। आज भी हमेशा के मुताबिक विनोबाजी ने ही प्रार्थना चलायी। प्रार्थना में स्वतः गाये हुए भजनों के द्वारा मानों वे बिदा ले रहे थे। ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ आदि के भजनों में से प्यारे भजनों के सिवा "हसतां रमतां प्रगट हरि देखुं रे, मारुं जीव्युं सफळ तंव लेखुं रे, नित्यानंदनो नाथ बिहारी रे, ओघा जीवनदोरी अमारी रे," ये चरण खास रूप से उन्होंने गाये। कृष्ण के मथुरा-गमन के बाद गोपी-जन को सांत्वना देने के लिये उद्धव गये थे, उस प्रसंग का यह वचन है। प्रार्थना के बाद जो प्रवचन हुआ वह आगे प्रवचनों में दिया है।

'भरत राम' से बिदाई

सुबह की प्रार्थना के बाद यथा-समय यात्रा आरंभ हुई। वैसे, सबसे तो पहले दिन ही बिदाई ले ली गयी थी, लेकिन 'भरत-राम' से बिदा लिये बिना विनोबाजी परंधाम से कैसे जा सकते थे? और वह बिदाई पेशगी में थोड़े ही ली जा सकती है! विनोबाजी अपने कमरे

से निकल कर ' भरत-राम-मंदिर ' में गये। 'भरत-राम-मंदिर' परधाम में प्रवेश करते ही सामने दिखाई देता है। उसका बाहरी आकार प्रचलित मंदिर का-सा नहीं है। एक सादी-सी झोंपड़ी है और उसमें वनवास से आने के बाद रामचंद्रजी की भरत से जो भेंट हुई, उस प्रसंग को अंकित करने वाली मूर्ति रखी हुई है, जो परंधाम के खेत में मिली है और जिसके लिये विनोबाजी को विशेष भाव है। विनोबाजी ने अपने हाथों उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की है। वहाँ जा कर वे भजनादि भी यथा-समय करते हैं। लोगों को इसका आश्चर्य होता है और वे विनोबाजी को पूछते हैं कि "आपके आश्रम में भी मूर्ति है और आप भी मूर्ति-पूजा करते हैं?" तब विनोबाजी कहते कि "मूर्ति-पूजा का मैं आग्रही नहीं हूँ, लेकिन भगवान खुद होकर मेरे यहाँ आ जाय तो उसे निकाल दूँ, ऐसा अभक्त भी नहीं हूँ।" इस मूर्ति के बारे में ' भगवान् खुद होकर आ जाय, यह अक्षरशः सत्य है। इतना ही नहीं, यहाँ तो भक्त की एक पावन कल्पना पूरी करने के लिये ही वह आया है, ऐसा मुझे लगता है। करीब उन्नीस साल पहले, ८-५-३२ को धूलिया जेल में गीता के बारहवें अध्याय पर प्रवचन देते हुए सगुण और निर्गुण भक्ति समझाने के लिये अनुक्रम से लक्ष्मण और भरत का उदाहरण दे कर आखिर में विनोबाजी ने कहा है कि " ऐसा चित्र यदि कोई निकाले, जिसमें दोनों की मुखाकृति समान हो, किंचित उम्र का फरक, चेहरे पर तपस्या वही और राम कौनसा व भरत कौनसा यह पहचाना नहीं जा सकता, तो वह चित्र बड़ा पावन होगा।" भक्त की यह अभिलाषा पूरी करने के लिये ही मानों १९३७ के बाद जब विनोबाजी परंधाम पर रहने गये और शरीर श्रम के तौर पर कुछ-न-कुछ खोदते थे, तब १९४०-'४१ में एक दिन उनकी कुदाली किसी पत्थर पर टकरायी। यहाँ मूर्तियाँ निकलती हैं, यह खयाल होने से उस पत्थर को हिफाजत से निकाला गया तो पाया गया कि औंधी रखी हुई

'भरत-राम-भेंट' की वह मूर्ति थी ! "धर्म जागो निवृत्तीचा" ('निवृत्ति' का धर्म जागृत रहे) इस ज्ञानदेव के अभंग के द्वारा भरत-राम की विदा माँग कर वे निकले। रास्ते में दादा धर्माधिकारी से नयी तालीम को लेकर काफी बातें होती रहीं।

लक्ष्मीनारायण-देवस्थान (वर्धा) में वर्धावासियों से विदा लेने को ठहरना था। यह देवस्थान हिन्दुस्थान का शायद सबसे पहला भव्य मंदिर है, जो हरिजनों के लिये खोला गया था। बजाज-कुल की देशभक्ति का वह बाह्य चिह्न है। वर्धा का वह एक दर्शनीय स्थान है। योगिराज भनसाळी को १९४२-४३ की चिमूर-पद-यात्रा में यहीं से विदा दी गयी थी। वह सारा प्रसंग नजर के सामने आ रहा था। महिलाश्रम की बहनों ने 'वैष्णव जन' और 'प्रेम मुदित मन से कहो राम-राम-राम' ये मधुर भजन गाये। माता जानकीदेवी बजाज ने वर्धा-वासियों की ओर से दो शब्द कहे। यहा पर विनोबाजी ने भी वर्धा-वासियों से विदा लेते समय कुछ शब्द कहे थे। उनका यह भाषण आगे प्रवचनों में दिया गया है।

और बाद में वे वायगांव के लिये रवाना हुए।

इस तरह पदयात्रा का आरंभ हुई है। पदयात्रा की पावन-शक्ति से हिंदुस्तान सदियों से परिचित है। जीवन-काल के आखिरी हिस्से में हिंदू-संस्कृति ने मनुष्य से अपेक्षा रखी है 'परिव्राजकता' की। परिव्राजक याने चारों ओर घूमने वाला। गीता के 'सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, सब धर्मों को छोड़ कर मुझको ही शरण आ,' इस आदेश को पालन करने वाला आदेश देते हुए गीता ने मानों उसका मर्म भी बता दिया। भगवान बुद्ध और महावीर के विहार से सारे प्रांत को ही 'विहार' नाम मिला। साधु-संतों के परिभ्रमण ने खंड-प्राय हिंदुस्तान को "अखण्ड" बनाया। बापू की दांडी-यात्रा और नोआखाली-यात्रा का चमत्कार तो हमारी आंखों के सामने ही हुआ है।

आठ

सर्वोदयी ' पद-यात्रा

आखिर में ज्ञानदेव के अद्रोह के विवरण के शब्दों में कहूँगा कि क्या अद्रोह का ही भावरूप शब्द सर्वोदय नहीं है ? जिस तरह गंगा दुनिया के पाप-ताप दूर करती हुई और किनारे के वृक्षों को पोषण देती हुई समुद्र तक पहुँचती है, या दुनिया का अंधापा दूर करता हुआ और शोभा के मंदिरों को प्रकट करता हुआ सूर्य जैसे प्रदक्षिणा को निकलता है, वैसे बद्धों को छुड़ाती हुई, डूबे हुओं को और दबे हुओं को ऊपर उठाती हुई एवं आर्त्तों के दुःख दूर करती हुई यह सर्वोदय-पद-यात्रा संपन्न हो।

—वल्लभस्वामी

*

: १ :

संकल्प

आज यह तय हुआ है कि आगामी सर्वोदय संमेलन के लिये मुझे हैद्राबाद जाना है। बहुत लोग मुझे अब तक आग्रह पूर्वक कहते रहे हैं कि मुझे संमेलन में जाना ही चाहिये। लेकिन मैंने न जाने का तय कर रखा था। न जाने के मेरे जो कारण थे वे भी बहुत महत्त्व के थे। अुनको देखते हुए मैं जाना नहीं चाहता था। लेकिन आज मित्रों ने आग्रह किया और आग्रहवश मुझे जाने का निश्चय करना ही पड़ा।

कल सबेरे यहाँ से पवनार जाऊंगा। परसों पवनार से हैद्राबाद के लिये पैदल निकलूंगा। रोज करीब पन्द्रह मील चलने की कल्पना है।

यह सब मैं जब प्रार्थना में जाहिर कर रहा हूं तो अपनी जिम्मेवारी महसूस करता हूं। वाहन में न बैठने का व्रत मैंने नहीं लिया है। क्योंकि व्रत तो सत्य-अहिंसा आदि का लिया जाता है। वित्त-विच्छेद की बात मैं कर रहा हूं तो उसका यह अर्थ भी नहीं है कि मुझे प्रवास छोड़ देना है। पैसे के छेद के कई पहलू मुझे दीख पड़ते हैं। उन पहलूओं के अनुकूल समाज हमें बनाना है। परमेश्वर चाहेगा तो इस काम में हमें जरूर यश देगा।

मित्रों से मेरी प्रार्थना है कि मेरे इस संकल्प को तोड़ने की बात वे न सोचें। संकल्प में शुरू से कुछ अपवाद भी नहीं रखना चाहिये। उससे मनुष्य की न संकल्पशक्ति बढ़ती है और न प्रतिभा। पैदल यात्रा की योजना बनाने में जो मदद देना चाहें वे जरूर दे सकते हैं।

सेवाग्राम आश्रम
६-३-५१

: २ :

परंधाम आश्रम से बिदा

आप लोगों को अब पता चल ही गया है कि कल से मैं पैदल चलकर हैदराबाद के सर्वोदय संमेलन के लिये जा रहा हूं। वहाँ जाने का पहले विचार नहीं था। लेकिन लोगों का आग्रह रहा और जाना तय भी हो गया। अचानक ही यह तय हुआ, और अब केवल तीस दिन ही बचे हैं। ज्यादा दिन ठहरने की अब गुंजाअिश नहीं रही है, अिसलिये मैं कल ही कूच कर रहा हूं।

चित्त-शुद्धि का कार्य

अपने यहाँ जो काम चल रहा है उस संबंध में मैं कअी बार आपके सामने बोल चुका हूं। यह काम यदि ठीक ढंग से रूप पकड़ लेगा तो उससे हम सबकी चित्त-शुद्धि होगी और समाज को भी कुछ शुद्धि प्राप्त होगी। अिस तरह दोनों का काम बनेगा। अिसलिये अिच्छा थी कि अिस काम का कुछ रूप आने तक यहीं रहें। वैसे मेरी तबियत भी बहुत अच्छी हुअी है अैसा नहीं कह सकते। लेकिन वह चीज गौण है। मुख्यतया यहां के काम का कुछ आकार आनेके बाद ही जरूरत पड़ी तो बाहर जा सकते हैं हो सकता है शायद बाद में बाहर जाने की जरूरत भी न पड़े— अैसी कल्पना थी। लेकिन बीच में जाने का तय हुआ है तो वह

भी परमेश्वर की इच्छा से ही प्रेरित हुआ है, ऐसा मैं देख रहा हूं। क्योंकि यह सारा अनपेक्षित-सा हो गया और अिस खबर से सब को आनंद भी हुआ है।

पैदल-यात्रा क्यों ?

सर्वोदय संमेलन में सब लोग जिस तरीके से जा सकते हैं उस तरीके से जाना ही अच्छा है। जो अिस तरह नहीं जा सकते हैं वे रेलगाड़ी से आयेंगे तो भी उसमें दोष नहीं है। लेकिन हो सके तो पैदल ही जाना अच्छा है। उससे देश का दर्शन होता है। जनता के साथ संपर्क आता है और उसे सर्वोदय का संदेश पहुंचा सकते हैं। वह संदेश सुनने और उसमें से सांत्वना प्राप्त करने के लिये लोग बहुत उत्सुक हैं। लोगों को इस समय सांत्वना की सख्त जरूरत है। किसी का मन अगर त्रस्त हुआ है और उसमें से मुक्त होने का कुछ रास्ता उसे मिल जाता है तो उसको शांति मिलती है। यही हाल आज जनता का हुआ है। इसमें किसी एक का दोष है ऐसी बात नहीं है। सबका मिलकर दोष है। लेकिन दोषों की चर्चा भी किस काम की है? जरूरत है दोष-निवारण की। और उसका मार्ग सीधा सादा, सब को करने योग्य और असरकारक भी है जो हमने यहां परंधाम में प्रयोग किया है। यद्यपि अभी तक जैसा हम चाहते हैं वैसा रूप नहीं मिला है, फिर भी शुभ भावना से तपस्या हो रही है। और अुतनी भी व्यथित मन को संतोष दे सकती है

यात्रा का ढांचा नहीं बनाया है

अिस प्रवास में अपनी कुछ भी कल्पना ले कर नहीं जा रहा हूं। सहजता से जो होगा वह होने दूंगा। फलाने ढंगसे

सफर करनी है, फलाना काम करवा लेना है, ऐसा कुछ भी मेरे मन में नहीं है। जगह जगह जो भी भले लोग मिलेंगे उनसे मिलना और लोगों की जो कठिनाइयाँ होंगी उनको हल करने का कुछ रास्ता बना सकूं तो बनाऊँ इतना ही मन में है। अब समय कम रहा है। इसलिए निश्चित रास्ते से ही जाना पड़ेगा। इधर उधर हो आने की गुंजाइश नहीं है। वापिस आते समय ऐसी कोई पाबंदी न होने के कारण अपनी इच्छा के मुताबिक घूम सकेंगे। लेकिन आगे का विचार अभी नहीं किया है। वह हैदराबाद पहुंचने के बाद तय होगा।

मेरा मन यहीं है

जो लोग यहां अिस काम में लगे हुए हैं उनके साथ मेरा शरीर यद्यपि नहीं दिखाई देगा तो भी मेरा मन यहीं है ऐसा अनुभव आपको आएगा। शरीर से यहां रहते हुए जितनी तीव्रता से मेरा मन यहाँ था उससे कम तीव्रता से वह नहीं रहेगा। शायद अधिक तीव्रता से ही रहेगा। मुझे उम्मीद है कि जिन नवयुवकों ने यह काम पूरा करने की शपथ ली है वे यदि यह काम ईश्वर का है अिस भावना से उसे निरहंकार पूर्वक करते रहेंगे तो उन्हें यहां की मेरी गैरहाजरी उत्साह देनेवाली ही साबित होगी।

परंधाम, पवनार
७-३-५१

: ३ :

वर्धावासियों से बिदा

बापू के प्रयाण के बाद मुझे हिंदुस्तान भर घूमना पड़ा। थोड़ा व्यापक रूप से देखने का मौका भी मिला। अनुभव से मेरे ध्यान में आया कि प्रवास का यह ढंग अुस काम के लिये अनुकूल नहीं है जो हमें करना है। आज कल राज-काजवाले तो हवा में घूमते हैं। समाज-सेवक भी अुसी ढंग से घूमने लग जायं तो वे भी राज-काजवालों के समान हो जायेंगे। यह हमारे लिये ठीक नहीं होगा।

स्वास्थ्य के कारण जब मुझे घूमना बंद करना पड़ा तब यह सब सोचने का मौका मुझे मिला। अिसी बीच परंधाम में वित्त-छेदन का प्रयोग शुरू हुआ। अुस काम के कुछ स्वरूप आने पर, जरूरत पड़ी तो फिर घूमने की मेरी कल्पना थी। लेकिन अितने में यह यात्रा का कार्यक्रम बन गया और बहुत ही सहज में बना। जो वस्तु सहज उपलब्ध होती है अुसे अीश्वर की अिच्छा समझ कर स्वीकारना चाहिये। अिसी खयाल से मैं निकल पड़ा हूं। संभव है, हैद्राबाद पहुंचने के बाद आगे भी बढ़ूं। अुस हालत में वापिस कब आअूंगा कह नहीं सकता। अिसलिये आज आपसे बिदा ले रहा हूं।

वर्धावासियों की जिम्मेवारी :

वर्धावालों से मेरा अिकतीस वर्षों से संबंध रहा है। हम लोगों ने तालीम की अेक पद्धति बनाअी और अुसे हमने 'सेवाग्राम-

पद्धति' कहा। लेकिन लोगोंने वह नाम नहीं अुठाया। 'वर्धा-शिक्षण-पद्धति' नाम चला। बापू के अनन्यभक्त जमनालालजी का नाम भी वर्धा से जुड़ा हुआ है। अितने पावन नामों का बल जब हमारे पास है, तो मेरा विश्वास है, वर्धा में बहुत कुछ काम हो सकता है। लेकिन यहां पर हमारी अितनी संस्थाअें होने पर भी वर्धा शहर में हम खास काम नहीं कर पाए हैं यह कबूल करना चाहिये। मैं अुसके कारणों में अभी नहीं जाऊंगा। संभव है अपने-अपने कामों में सभी अितने मशगूल रहे हों कि समय न निकाल सके हों।

बीच में हमने वर्धा शहर का सर्वे किया था। सैकड़ों लोगों ने अपने दस्तखत दिये और कुछ न कुछ सार्वजनिक काम करने की अिच्छा प्रकट की। यह छोटी बात नहीं है। लेकिन अुन लोगों से काम नहीं लिया गया। वैसे यहां काफी कार्यकर्ता हैं और रचनात्मक काम के लिये वातावरण भी अनुकूल है।

अनिंदावृत्ति की आवश्यकता

लेकिन जहां कार्यकर्ता अधिक होते हैं वहां अेक बात खास ध्यान में रखनी चाहिये। आज अभी वैष्णवगीत गाया गया जिसमें नरसी मेहता ने आदर्श भक्त के गुण बताए हैं। उनमें से अेक गुण की तरफ मेरा ध्यान इन दिनों विशेष रूप से जा रहा है। वह गुण है 'अनिंदा'। अेक जमाना था जब मैं कहता था कि अपने तो दोष देखने चाहिये और दूसरों के गुण। लेकिन अेक दिन सूझा कि हमें अपने भी गुण ही देखने चाहिये। क्योंकि आखिर

हम कौन हैं ? वही शुद्ध चेतन आत्मस्वरूप हम हैं। तो फिर दोष किसके देखें ? दोषों का भान हम जरूर रखें। लेकिन चिंतन तो गुणों का ही करना चाहिये। दोष तो सिर्फ गुणों की छायारूप होते हैं। बिना छाया के तसवीर नहीं खींची जा सकती। वैसे बिना दोषों के गुण भी अव्यक्त ही रह जाते हैं। दोषों को हम जानेंगे जरूर, लेकिन उनको दूर करने के लिये। और गुणों को बाहर आने का मौका देते रहेंगे। अिस तरह अगर हम हर जगह गुण-दर्शन ही करते जाएंगे तो तेजी से आगे बढ़ेंगे

महिलाश्रमवालों से

यहां महिलाश्रम की अितनी लड़कियां आई हैं। आरंभ से ही उस संस्था से मेरा संबंध रहा है। आज ऊपर से ऐसा दीखता है मानों मेरा महिलाश्रम से कोई संबंध नहीं है। लेकिन दर-असल मैं अपने को महिलाश्रम के काम से अलग नहीं समझता हूं। अिस वक्त सेवाग्राम में तालिमी संघ के संमेलन में मैंने महिलाश्रम का जिक्र बुनियादी तालीम का प्रयोग करनेवाली संस्था के तौर पर किया। आपको अपना अलग अभ्यासक्रम बनाने का अधिकार है। लेकिन यह बात ध्यान में रखें कि हिंदुस्तानभर की लड़कियों को यहां जो संस्कार मिलेंगे उनके द्वारा उनमें तेज तथा वैराग्य प्रकट होना चाहिये।

लक्ष्मीनारायण मंदिर, वर्धा
प्रातःकाल ८-३-५१

पहला दिन—

: ४ :

देहात के मजदूरों का प्रश्न

परंधाम का हमारा काम

आपके गांव में पहले मैं कब आया था मुझे याद नहीं है। लेकिन आपके पड़ोस में ही मैं रहता हूं। यहां से तेरह मील पर पवनार में परंधाम आश्रम है। वहां मैं रहता हूं और आप सब की चिंता करता हूं। किसान कैसे बचेगा, देहात कैसे सुधरेंगे, लोगों को सुख कैसे मिलेगा, दैन्य, दारिद्रय और दुःख कैसे मिटेगा, प्रेम कैसे रहेगा अिस विषय में मैं सोचता हूं। परंधाम में मैं और मेरे साथ पढ़े-लिखे लोग भी कुदाली से खोदते हैं, रहट हाथ से चलाकर कुएँ से पानी निकालते हैं, सूत कातते हैं, कपड़ा बुनते हैं, बढ़ई का काम करते हैं। ये सारे उद्योग कैसे पनपेंगे इसका विचार करते हैं।

मेरी पैदल यात्रा

आज मैं आपके गांव में आया हूं और यहां से घूमते घूमते तीन सौ मीलपर हैदराबाद है, वहां जाऊंगा। वहां सज्जन लोगों का एक संमेलन है। वहां मैं पैदल जा रहा हूं। आप कहेंगे यह क्या पागलपन अिसको सूझा? अिन दिनों तो लोग हवाई जहाज में जाते हैं। कल ही अेक बालक कह रहा था कि रेलगाड़ी से सफर

करने में बहुत समय लगता है। अब तेजीसे पहुंचाने वाले हवाई जहाज निकले हैं तो ऐसे जमाने में पैदल सफर करने का यह पागलपन कैसे ? लेकिन यह पागलपन आपसे मिलने के लिये है। आप देहात की जनता नारायण स्वरूप हैं। आपसे संपर्क बढ़े, अिस खयाल से मैं आया हूं। कल मैं रालेगांव जाऊंगा। सुबह पांच बजे चल देंगे। दोपहर को ग्यारह बजे वहां पहुचेंगे। फिर भोजन आदि होगा। कुछ लिखने का काम चलता है वह करेंगे, फिर शाम को पांच बजे लोगों से बातचीत करेंगे। रात को प्रार्थना करेंगे, सब मिलकर भगवान का नाम लेंगे और सब को सिखायेंगे। फिर रात को भगवान की गोद में सो जाएंगे। परसों सुबह उठ कर फिर से कूच करेंगे। ऐसा हमारा कार्यक्रम है।

देहात की चिंता देहात ही करे

आज भी यहां के लोगों से पांच बजे काफी चर्चा हुई। उन्होंने किसानों की दिक्कतों का जिक्र किया। गांव के मजदूरों को आगे शायद खाने के लिये ज्वार न मिले ऐसी हालत पैदा होने की आशंका उन्होंने प्रकट की। मैंने उनसे कहा, तुकाराम महाराज ने हमें सिखाया है कि

"तुझे आहे तुजपाशीं परि तूं जागा चुकलासी"

—तेरा तेरे पास ही है, लेकिन तू जगह भूल गया है और इधर उधर भटक रहा है। तुझे लगता है कि सरकार, डी. सी. या मंत्री मेरे लिये कुछ करेंगे। लेकिन तेरे लिये तू ही करेगा। तुझे थकान आयेगी तो तू ही सोयेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं सोयेगा। तुझे भूख लगेगी तो तू ही खायेगा, दूसरा तेरे लिये नहीं खायेगा। तू आया

था तब अकेला ही आया था, और जायगा तब अकेला ही जायगा। इसलिये तेरी जिम्मेवारी तुझे ही उठानी है, और वह तू ही उठा सकता है। भगवान ने कैसी योजना बनाई है यह तू नहीं देखता है? उसने हरेक को दो कान, दो आंख, दो हाथ, दो पांव दिये हैं और बुद्धि भी दी है। ऐसा क्यों दिया है? इसलिये कि हरएक अपने पांव पर खडा रहे और फिर एक दूसरे की मदद करे। वैसे देहातों को भी अपने सवाल खुद ही हल करने होंगे। और वे हो भी सकते है। हिन्दुस्तान में पांच लाख देहात हैं। उनके सवाल दिल्ली की सरकार, चाहे वह कितनी भी कुशल क्यों न हो, अकेली हल नहीं कर सकती। सवाल हल करने का इलाज आपके हाथ में है। वह कौनसा? पैसे के दर नीचे ऊपर होते हैं। एक रुपये में कभी चार पायली ज्वार तो कभी दो पायली। वह भी कभी मिलती है कभी नहीं। मैंने सुझाया कि साहूकारों की तरह आप मजदूरों को भी कुछ निश्चित प्रमाण में ज्वार क्यों नहीं देते? यह प्रमाण मैंने रोज की पचास तोला ज्वार सुझाया। स्त्री हो चाहे पुरुष, ज्वार में फरक न किया जाय। मजदूरी में जो भी फरक करना है, वह पैसे में किया जाय। ५० तोला ज्वार दे देने के बाद ऊपर से जो भी पैसे देने हैं उसमें चाहें तो फरक कर सकते हैं। अिस तरह मजदूरों को उनकी रोजी में कम से कम ५० तोला ज्वार और बाकी के पैसे देंगे तो आपके मजदूर भूखे नहीं रह सकेंगे॥ इस पर काफी चर्चा हुई। आखिर यह सुझाव उन लोगों को जंच गया। फिर मैंने कहा कि मेरे सामने आपने तय किया है तो वैसा प्रस्ताव अभी मेरी हाजिरी में ही कर लीजिये। न मालूम फिर

मैं कब आपके गांव में आऊंगा। बातचीत में गांव के बड़े बड़े लोग हाजिर थे। उन्होंने प्रस्ताव किया। वह आपको बाद में सुनाया जायगा। अिस प्रस्ताव के अनुसार अगर आप लोग चलेंगे तो गांव में कोई भी भूखा नहीं रहेगा। फिर आपके गांव का उदाहरण देखकर दूसरे लोग भी अुसका अनुकरण करेंगे और अिस तरह देहात का यह जटिल प्रश्न हल हो सकेगा।

पांच अंगुलियों की तरह रहो

और अेक बात। हम सब हाथ की पांच अंगुलियों की तरह रहें। हमारे हाथ की एक अंगुली छोटी है तो दूसरी बड़ी है। सब अंगुलियां समान नहीं हैं। फिर भी जो काम करना होता है वह सब मिल कर ही करती हैं। लोटा उठाना हो तो अंगूठा और अंगुलियां मिलकर उठाती हैं। वे अगर आपस में झगड़ा करने लगेंगी और परस्पर सहकार नहीं करेंगी तो कुछ भी काम नहीं हो पाएगा। तो हमें भी उनकी तरह प्रेम के साथ रहना चाहिये। कोई छोटा और कोई बड़ा यह तो दुनिया में रहेगा ही। लेकिन सबके दिल एक होने चाहिये। अपनी अंगुलियों से यह सबक हम सीखेंगे तो हमारा भला होगा।

भगवान का स्मरण कीजिये

एक आखिर की बात और है। मुझे आपका अधिक समय नहीं लेना है। लेकिन मैं जो कहता हूं उसपर अमल कीजिये। रामदास स्वामी ने कहा है—"समजले आणि वर्तले तेचि भाग्यपुरुष

झाले, येर ते बोलत चि राहिले करंटे जन"। जो भाग्यहीन होते हैं वे केवल बोलते ही रहते हैं और सुनते ही रहते हैं। लेकिन भाग्यवान वे ही होते हैं जो किसी विचार को समझने के बाद उसपर अमल करते हैं। इसलिये आप मेरी बात पर सोचें और वह जंच जाय तो उसपर अमल करें। मैं यह कहना चाहता हूं कि आप लोग सब अेक साथ बैठकर हर रोज नियमित रूपसे भगवान की प्रार्थना करें। मैंने सुना है कि यहां रोज प्रार्थना होती है। लेकिन उसमें हाजिरी पन्द्रह बीस लोगों की ही होती है और उसमें ज्यादातर छोटे लड़के ही होते हैं। ऐसा न करें। आप सब प्रार्थना में हिस्सा लीजिये। आखिर इस मनुष्य देह में आकर क्या करना है? मानव-देह में अिसलिये आते हैं कि हम एक दूसरे की मदद करें, एक दूसरे पर प्रेम करें और सब मिल कर परमेश्वर का ध्यान करें। उसीने हमें वाणी दी है। अिसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि जितने अधिक लोग जमा हो सकते ह उतने जमा होकर परमेश्वर का स्मरण कीजिये।

वायगांव (वर्धा)
सायंकाल
८-३-५१

दूसरा दिन—

: ५ :

जन-सेवा ही परमेश्वर की पूजा

प्रार्थना में निम्न पंक्तियाँ लोगों को गा कर समझायी गईं :

"नारायण असे विश्वी, त्याची पूजा करीत जावी
या कारणें तोषवावी, कोणी तरी काया"

—सारे विश्व में नारायण भरा है, अुसकी पूजा हर रोज करें। अुसके लिये किसी न किसी की सेवा करके अुसे संतोष देना चाहिये।

मेरी माँ ने बचपन में हमें अेक पहेली सुनाअी थी : "भाऊ भाऊ शेजारी भेट नाहीं संसारीं।" भाअी भाअी पडोस में रहते हैं लेकिन जिंदगी-भर में अेक दूसरे की मुलाकात ही नहीं होती। कौन हैं ये दो भाअी? अुसका जवाब है आँखें। दोनों आँखें बिलकुल अड़ोस-पड़ोस में हैं। लेकिन अेक आँख दूसरी को नहीं देख सकती। अैसा ही हाल आप का और मेरा हुआ है। मैं आप-के गांव से पचीस-तीस मील की दूरी पर ही रहता हूं। और वहां तीस साल से रहता हूं। लेकिन आज तक आपकी मुलाकात नहीं हो पाई थी। भगवान ने आज वह दिन ला दिया है।

सर्वोदय संमेलन का पूर्वेतिहास

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद में है। गांधीजी के जाने के बाद सब लोगों ने मिल कर तय किया कि सर्वोदय-समाज कायम करें। सर्वोदय-समाज याने क्या? जिस समाज में न कोई ऊंचा है न कोअी नीचा है। जिस समाज में सब अेक दूसरे पर प्रेम करते हैं उसका नाम है सर्वोदय-समाज। फिर हर साल जगह जगह मेले लगाये जायं। उन मेलों में सब लोग इकट्ठे हो कर भगवान का भजन करें, एक दूसरे से परिचय कर लें, और गांधीजी का स्मरण कर के देश के लिये अपने हाथ की कती सूत की अेक गुंडी समर्पण करें। तो अिसके अनुसार १२ फरवरी को हर प्रांत में मेले लगे। आप के प्रांत में पवनार में मेला लगा था। आप में से कुछ लोग शायद वहां पर आये होंगे लेकिन सब को आना चाहिये। और अपने साथ अेक अेक गुंडी ला कर भगवान के चरणों में समर्पण करनी चाहिये। यह अगले साल कीजिये। अिसके अलावा यह भी तय हुआ कि हिंदुस्तान भर के कार्यकर्ता सालभर में अेक दफा अिकट्ठे हो कर अगले साल के काम के बारे में सोचें।

नारायण के दर्शन के हेतु पैदल यात्रा

अिस साल सर्वोदय-समाज के सेवकों का संमेलन हैद्राबाद में होनेवाला है। वहां अगर मुझे जाना चाहिये तो मैं पैदल चलते चलते ही क्यों न जाअूं, अैसा मैंने सोचा है। अुससे आप जो लोग नारायण स्वरूप हैं अुनके दर्शन मैं कर सकूंगा। नदी समुद्र में

मिलने के लिये निकलती है। लेकिन जाते जाते रास्ते में कहीं अिस गांव को पानी दिया, कहीं अुस खेत को पानी दिया अैसा करते करते और सबकी सेवा करते करते समुद्र तक पहुंचती है। अुसी तरह मैंने भी सोचा कि हैद्राबाद जाना है तो रास्ते में लोगों से मिलते मिलते और लोगोंकी कुछ सेवा करते करते जाअूं। तो आज आप के गांव में आया हूं।

दुखियों की सेवा ही परमेश्वरकी पूजा है :

आप और हम सब यहां प्रार्थना में अिकट्ठे हुअे हैं। अिससे मुझे बहुत आनंद हुआ है। आज प्रार्थना में हमने अेक बात सीखी। सारी दुनिया में जो परमेश्वर भरा है अुसकी कुछ सेवा हमारे हाथ से होनी चाहिये। और परमेश्वर की पूजा याने दुखियों की सेवा। तो आप लोग हर रोज सोने के पहले अपने दिल से पूछें कि अपनी देहके लिये तो मैंने सब कुछ किया लेकिन दूसरे के लिये क्या किया? गांव के लिये क्या किया? कोअी बीमार था तो स्को दवा दी है? कहीं गंदगी पड़ी थी अुसको साफ किया है? मेरा देह और मेरा घर छोड़ कर गांव के लिये मैंने अगर कुछ नहीं किया है तो समझना चाहिये कि मेरा आज का दिन बरबाद हुआ। मैं व्यर्थ जिया। अिस तरह तो पशु, पक्षी सभी जीते हैं। भगवान ने हरेक को प्राण दिया है तो सब खाते हैं और जीते हैं। लेकिन दूसरे के लिये जीना, दूसरे की कुछ सेवा करना अिसमें जो समाधान मानव को प्रतीत होता है वह दूसरी किसी चीजमें नहीं होता। यह कल्पना की बात नहीं है। कोअी भी अिसका अनुभव ले सकता है।

दूसरे को खिलाने का आनंद चखो

बचपन की बात है। हमारे गांव में हमारा खुदका अेक कटहल का पेड़ था। जब फल निकलता था तब अुसे काट कर दो दो बीज हरेक घर में दे आने के लिये माँ हम से कहती थी। हमारा गांव पचास-साठ घरों का था। सब घरों में मैं बीज पहुंचा आता था। मैं उस समय सात साल का बच्चा था। बच्चों को तो खाने में बड़ा मजा आता है। लेकिन हमको उस फलके बीज पहले नहीं मिलते थे। मुझे अब भी याद आता है कि वे बीज दूसरों को बाँटने में मुझे कितना आनंद होता था। वह एक अजीब प्रकार का आनंद था। खुद खाने में जो आनंद आता है अुसका अनुभव तो हरेक को है। जानवरों को भी वह अनुभव आता है। लेकिन दूसरे को खिलाने में कैसा आनंद आता है यह अनुभव करके ही देखना चाहिये। जैसे शक्कर मुंह में डालते ही उसकी मधुरता का हरेक को अनुभव होता है, वैसे दूसरे को मदद देने में मधुरता है या नहीं, यह अनुभव करके ही देखना चाहिये। अगर वैसा अनुभव न आये तो आप आ कर मुझे जरूर कहें। इतनी अनुभव सिद्ध यह बात है।

दूसरे को सुख देने में ही मनुष्य-जन्म कृतार्थ होता है

आज की प्रार्थना में हम यह सबक सीखे हैं कि नारायण की कुछ सेवा अपने हाथ से हो। वह पूजा तुलसी, बेल या फूल से नहीं होगी। कुछ सेवा ही होनी चाहिये। किसी-न-किसी तरह भगवान को संतोष पहुँचाना ही होगा। रामदासस्वामी समझाते हैं कि

इस तरह संतोष पहुंचायेंगे तो ही नारायण की पूजा होगी। वही सिखावन आज मैंने प्रार्थना में आपके सामने रखी। आज पहले ही मैं आप के गांव में आया हूं। हम सब ने मिल कर प्रार्थना की, बहुत आनंद आया। फिर कब मिलेंगे कह नहीं सकते। इसलिये इतनी बात याद रखिये कि एक फकीर आया था और सुनाकर चला गया कि मनुष्य देह की कृतार्थता भोग भोगने में नहीं है बल्कि दूसरे को थोड़ा भी क्यों न हो, सुख देने में है।

मजदूरों को मजदूरी में कुछ ज्वार दीजिये

आज आप के गांववालों से चर्चा चल रही थी। मैंने सुझाया कि मजदूरों को हर रोज की मजदूरी में कुछ ज्वार देते जाइये। आधी पायली ज्वार (५० तोला) और फिर ऊपर से जो भी कम ज्यादह पैसा देना हो वह दें। अगर यह बात आप को जंचे तो दस्तखत करके प्रतिज्ञा कर लो। मुझे तीन दस्तखत मिले हैं। मुझे खुशी हुई। तीन कुछ कम नहीं है। अरे भाई, एक के हृदय में भी अगर भगवान जग गया तो सारी दुनिया बदल सकती है। ऐसे लोग हमने देखे हैं। बड़े लोग बड़े कैसे बनते हैं? गांधीजी हमारे सामने हो गये। वे किस कारण बड़े हुए? उनको क्या भगवान ने हमसे अधिक इन्द्रियां दी थीं? उनके पास क्या अधिक था? उनके हृदय में भगवान जग गया था और दूसरों की सेवा करने की लगन उन्हें थी। इसके सिवाय उनके पास क्या था? वैसी अगर हममें से एक को भी लगन लगी तो वह छोटी बात नहीं है।

तीन लोगों ने दस्तखत दिये, मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे उम्मीद है कि वे उसके अनुसार व्यवहार करेंगे।

मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखो

लेकिन एक भाई ने मुझे सावधान किया। उसने कहा "आप दस्तखत लेनेकी झंझट में न पड़ें। उसमें कोई सार नहीं है। हमारा गांव इतना लोभी है कि वचन भले ही दे देंगे लेकिन उसको निभायेंगे नहीं।" मैंने कहा "भाई, भरोसा करना मेरा धर्म है। मेरे हाथ में दंड-शक्ति नहीं है और न मैं चाहता हूं। यहां आकर एक बात मैंने कही और जिनको वह जंची उन्होंने उसके अनुसार चलने का वादा किया, तो मैं उनपर विश्वास ही रखूंगा। मनुष्य के हृदय पर भरोसा रखना ही चाहिये। अगर न रखें तो हम मनुष्यता गंवायेंगे। आपने मुझे सावधान किया, अच्छा हुआ। उससे वे लोग भी चेत जायेंगे। वचन अगर दिया है तो "प्राण जाइ बरु वचन न जाई।" लेकिन याद रखो कि मनुष्य के हृदय में परमेश्वर जागता है। कब जागेगा उसकी कल्पना नहीं कर सकते। किस निमित्त से जागेगा यह कह नहीं सकते। मैं एक फटा-टूटा आदमी आप के पास आया और ऐसा कहने की भगवान ने मुझे हिम्मत दी कि "अपने लिये तो हम जीते ही हैं, लेकिन दूसरे के लिये जीना सीखो" तुकाराम महाराज ने यही सिखाया। "तुका म्हणे फार थोडा करी परउपकार" —थोड़ा भी क्यों न हो परोपकार करो। यह देह दूसरों के लिये घिसने दो। अगर देह वैसी घिसेगी तो चंदन घिसने पर

जैसी सुगंध फैलती है वैसी देह घिसने पर सुगंध फैलेगी। वैसी सुगंध फैलने दो यह सिखावन हमारे सब संतों ने हमें दी और वही मैंने आज आप के सामने रखी।

मेरे मित्रो, मेरा भाषण समाप्त होता है। आपको मेरे प्रणाम हैं।

राळेगांव, (जि. यवतमाळ)
९-३-५१

तीसरा दिन—

: ६ :

हाथ-चक्की और हरि-नाम

यह एक छोटासा गांव है। छोटे गांव में सब के हृदय एक होते हैं। एक दूसरे की अच्छी पहचान होती है। किसी को कुछ तकलीफ हो तो उसका जल्दी पता चलता है और आप मदद के लिये दौड़ जाते हैं। यह सब अच्छा है। फिर आप का गांव रेलगाड़ी से और मोटर से बहुत दूर है जिस से आप बड़े सुख में हैं। लेकिन आगे-पीछे मोटर यहां तक पहुंच जायगी। तब भी आप अपना सादा जीवन और प्रेम न छोड़ें।

हाथ-चक्की का महत्त्व

आपके गांव में अभी हाथ-चक्की पर पीसा जाता है। यह अच्छा है। लेकिन मोटर नजदीक आ जायगी तो आटे की चक्की निकलेगी और आप अपना आटा वहां से पिसवा लेंगे। अगर ऐसा हुआ तो आप की बड़ी हानि होगी।

मैं बचपन में कोंकण में रहता था। आप के जैसा ही वह छोटा गांव था। सुबह चार बजे घर की स्त्रियां उठती थीं और सब से पहले जो कुछ पीसने का होता था, पीस लेती थीं। बाद में झाड़ू आदि लगा कर आंगन में पानी छिड़कती थीं। और फिर

प्रेम से भगवान का नाम लेती थीं। हर गांव में इस तरह चक्की चलती थी।

देश आधा घंटा देरी से उठने लगा

लेकिन तीस साल के बाद अब देहातों में से चक्की लुप्त होती जा रही है। मैं तो देख रहा हूं कि पहले से लोग देरी से उठने लगे हैं। यानी सारे देश का प्रातःकाल का अमूल्य आधा घंटा बरबाद हो रहा है। सुबह के दो-तीन प्रहर बहुत मूल्यवान होते हैं। उस समय नामस्मरण कर सकते हैं और गहरा अभ्यास आदि कर सकते हैं। इसलिये सुबह के प्रहर में आधा घंटा देरी से उठने के कारण सारे देश का उतना नुकसान हो रहा है। तो आप लोग सुबह जल्दी उठते जाइये और रात में जल्दी सोते जाइये।

पुरुष भी चक्की चलायें

और पीसने का काम केवल स्त्रियां ही क्यों करें? बहुत सारा तो वे पीसती हैं। लेकिन आप को भी थोड़ा पीसना चाहिये। हम जेल में पीसते थे। जेल में पुरुष पीसते हैं, यह तो सब जानते हैं। लेकिन हम परंधाम के हमारे आश्रम में हर रो पीसते हैं। पुरुष और स्त्रियां दोनों पीसती हैं। हर रोज ताजा आटा मिलता है। हाथ के ताजे आटे में जो ताकत है वह मिल के आटे में नहीं है। आपके गांव में अभी तक तो चक्की चल रही है। लेकिन मोटर आने पर भी आप यह नियम न छोड़ें। आलस्य को छोड़ दें। और परमेश्वर का नाम लेते लेते चक्की चलाते जाइये। कबीर

एक कविता में लिखते हैं कि लोग मंदिरों में पत्थर रखकर उसकी पूजा करते हैं; लेकिन "घर की चक्की कोई न पूजे, जा पर पीसा खाय।" जिस चक्की पर हम अपना आटा पीसते हैं और हमारी रोज की रोटी खाते हैं अुस चक्की की पूजा क्यों नहीं करते? वह भी परमेश्वर ही है। चक्की की पूजा बेल-फूल चढ़ाकर नहीं होती। उसको हर रोज साफ कर के उसमें तेल दे करके आटा पीसना यही उस चक्की की पूजा है।

व्यसन छोड़िये

इस तरह अगर हम आलस्य छोड़ेंगे, उद्योग करेंगे, तो छोटा गाँव होने पर भी हम सुखी रह सकते हैं। गांव में किसी प्रकार का व्यसन नहीं होना चाहिये। किसी को चिलम का व्यसन, किसी को बीड़ी का व्यसन, किसी को गांजा-अफीम का व्यसन, और आज कल तो चोरी से शराब का व्यसन भी शुरू हो गया है। आप ही सोचिये कि इन चीजों का न देह को उपयोग है न आत्मा को। इन व्यसनों के कारण तो मनुष्य गुलाम बन जाता है। मनुष्य देह में हम आये हैं तो गुलाम बनने के लिये थोड़े ही आये हैं? हम तो इस देह में मुक्ति का अभ्यास करने के लिये आये हैं। इसलिये गांव में किसी प्रकार के भी व्यसन न रहने दो।

हरि-नाम मत विसारो

यह छोटा गांव होते हुए भी करीब आधे गांव के लोग आये हैं। मैं जो बात अब कहूंगा वह ध्यान में रखो। हर रोज गांव के १५-२० लोग अेक जगह जमा हो कर प्रेम से प्रभु का भजन

करते जाइये। १५-१६ साल पहले मैं मेरे बचपन के देहात में गया था। उस गांव में स्कूल नहीं है। न कोई खास लिखना पढ़ना भी जानता है। दो दिन ही मैं वहां रहा। लेकिन एक दिन रात को दो बजे मेरी नींद खुली तो मुझे भजन की आवाज सुनाई दी। बुधवार का रोज था। मैं बिस्तर से उठा और जहां भजन चल रहा था वहां जाकर बैठ गया। घंटा-आधा घंटा उन लोगों ने भजन गाया। मुझे बहुत आनंद हुआ। मैं सोचने लगा जिस गांव में स्कूल नहीं है और लिखना-पढ़ना भी कोई नहीं जानता वहां इतना ज्ञान भी इन लोगों को किसने दिया? तुकाराम के चार अभंग ये लोग भक्तिपूर्वक गाते हैं तो उतनी अकल गांव में बची है; वरना कब स्कूलें निकलती और कब इनको ज्ञान मिलता? लेकिन भजन करने की आदत देहातों को रही तो चार अच्छे शुद्ध इनको कंठ हो गये हैं। इसलिये मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आप एकत्र हो कर प्रार्थना करते जाइये। जिनको पढ़ना आता है वे कुछ अच्छी किताब पढ़ कर सुनायें। जो गाना जानते हैं वे भजन सुनायें। आज मैंने जिस तरह आपको भजन करना और ताल पर ताली बजाना सिखाया वैसे आप छोटे बड़े एक साथ भजन कीजिये। पीठ सीधी रख कर बैठना चाहिये। और थोड़ी देर मौन रह कर ईश्वर का ध्यान करना चाहिये। ऐसा आप करेंगे तो स्कूलों से बढ़ कर शिक्षण आप को इस प्रार्थना में से मिलेगा। स्कूल तो देहात में होने

हीं चाहिये और आगे चल कर होंगे भी। लेकिन भक्तिपूर्वक की गई प्रार्थना से जो संस्कार और तालीम आपको मिलेगी वह तालीम स्कूल की तालीम से बढ़ कर होगी।

सखी–कृष्णपुर
१०-३-५१

खास स्त्रियों के लिए—

: ७ :

स्त्रियों की जिम्मेवारी

स्त्रियों को भी भजन करना चाहिये

अपने लोगों में आम तौर से केवल पुरुष लोग ही भजन करते दिखाई देते हैं। लेकिन क्या स्त्रियों के लिये कोई भगवान ही नहीं है? गांव की स्त्रियों को एक जगह जमा होकर प्रेम के साथ थोड़ी देर तो भजन करना चाहिये। गृहस्थी की गाडी के दो पहिये हैं। एक स्त्री और दूसरा पुरुष। जैसे पुरुषों को धर्म होता है वैसे स्त्रियों को भी होता है। पुरुष को आत्मा होती है वैसे स्त्री को भी होती है। भगवान के सामने स्त्री और पुरुष समान हैं।

धर्म की रक्षा स्त्रियों ने ही की है

आप देखेंगी कि हिंदुस्तान में स्त्रियों ने ही धर्म की रक्षा अधिक की है। पुरुषों में जितने व्यक्ति व्यसनी मिलते हैं उससे बहुत कम स्त्रियों में मिलेंगे। स्त्रियों ने दुनिया में सदाचार जिंदा रखा है। इसीलिये उनके बालकों की जिम्मेवारी होती है। बच्चों में अच्छी आदतें डालना और उनको साफ-सुथरा रखना स्त्रियों के हाथ में है। आप अपने बच्चों को सच्चरित्र बनायेंगीं तो देश को अच्छे नागरिक मिलेंगे। बच्चे तो आप की बड़ी इस्टेट हैं। इनसे बढ़ कर कौन

सा धन है ? कौसल्या की कोख में से भगवान रामचंद्रजी निकले और देवकी की कोख से भगवान श्रीकृष्ण। जितने भी सत्पुरुष हुए हैं उनकी मातायें धर्मपरायण थीं। जिस घर की स्त्रियां भगवान का स्मरण करती हैं, सत्य का पालन करती हैं, प्रेमभाव से रहती हैं उस घर में अच्छे पुरुष पैदा होते हैं यह बात दुनियाभर में प्रसिद्ध है। अिसलिये आपके हाथ में बड़ी शक्ति है यह बात ध्यान में रखिये।

पुरुष को सन्मार्ग पर लाना भी स्त्रियों का काम है

पुरुष झगड़ा करते हैं, शराब पीते हैं, लेकिन उनकी स्त्रियां चुपचाप सहन कर लेती हैं। उनका काम है कि वे अपने पतिसे इन आदतों को छोड़ देने को कहें। और अगर उनका कहना पुरुष न माने तो कहना चाहिये कि जब तक ऐसी आदतें आप नहीं छोड़ेंगे तब तक हम भोजन नहीं करेंगी। यह सारा काम स्त्रियों का है।

आप सब बहनें प्रेम से यहां आयीं मुझे बहुत अच्छा लगा। आप अपने पुरुषों को अच्छे रास्तेपर रखिये, बच्चों को सदाचारी बनाइये और एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार कीजिये। यह सब आप करेंगी तो आपके गांव में स्वर्ग उतरेगा। *

सखी–कृष्णपुर
१०-३-५१

* प्रार्थना के बाद गांव की बहुत-सी स्त्रियां विनोबाजी का प्रवचन सुनने को आईं। उनके लिए उन्होंने जो चार शब्द कहे थे, उसका सारांश यहां दिया गया है।

चौथा दिन—

: ८ :

श्रम और प्रेम से स्वराज्य का उदय

भगवान की देन

हम जो देहात के लोग हैं उनके पास धन संपत्ति नहीं है, लेकिन कुछ और चीज है या नहीं ? क्या भगवान ने हम को बिलकुल खाली ही रख छोड़ा है ? पटाके में बारूद भरी होती है इसलिये उसको बत्ती लगाते ही धमाका होता है। लेकिन बारूद न होती तो कैसे आवाज आ सकती थी ? तो देहात के लोगों में भगवान ने कुछ मसाला भरा है या नहीं ? मेरा कहना है कि भगवान ने हमें दो अहम चीजें दी हैं : काम करने के लिये दो हाथ, और हृदय में प्रेम।

हिम्मत रखनी चाहिए

अपने हाथ की ताकत से हम गंदगी साफ कर सकते हैं। आप देखते हैं कि घर घर में देवियां हैं इसलिये घरों के आंगन साफ रहते हैं। तो भगवान ने दो हाथों से काम करने की शक्ति हमें दी। और दूसरी चीज दी है प्रेम। तो देहात के लोगों के पास कुछ नहीं है, वे दीन हैं, दरिद्र हैं, दुबले हैं, लाचार हैं ऐसी अभद्र वाणी मुंह से मत निकालो। बल्कि यूं कहो कि हम भगवान के बड़े लाड़ले हैं। उसने हमें प्रेम दिया और काम करने के लिये हाथ दिये। कोई भी बाप अपने लड़के को कुछ न कुछ दिये बिना नहीं रहता। परमेश्वर हमारा पिता है, उसकी हम पर प्रीति है और उसने हमें बहुत बड़ी देन दी है। हम श्रीमान् हैं। दुनिया के सामने भीख मांगने की हमें क्या जरूरत है। इस तरह हिम्मत रखनी चाहिये।

बिना श्रम के खाना पाप समझें

वैसे देहात के लोग काम तो करते हैं। वे खेती करते हैं। लेकिन प्रेम और अभिमान के साथ नहीं करते। लाचारी से करते हैं। लगना यूं चाहिये कि बिना श्रम किये खाना पाप है इसलिये मैं श्रम करके ही जीऊंगा। अब देखिये आप सब लोगों के बदन पर कपड़ा है। लेकिन यह सारा आप खरीद कर लाते हैं। कपास आप के खेत में पैदा होती है वह आप बेच डालेंगे और बिनौले मोल लेते हैं, कपड़ा मोल लेते हैं। तिलहन आप के खेत में होती है, उसको आप बेचेंगे और खल्ली और तेल मोल लेंगे। यह क्या चल रहा है ? अगर देहात इस तरह आलसी बने तो वे कभी सुखी नहीं बन सकते। हमें भगवान ने पैसा नहीं दिया है लेकिन हाथों की ताकत दी है उसका उपयोग करना चाहिये।

आपसी अनबन

दूसरी बात प्रेम की। देहात छोटे से छोटा भी क्यों न हो लेकिन वहां पर तीन गुट, चार पार्टियां, और पांच पक्ष होते हैं। इसका उसके साथ बनता नहीं और उसका इसके साथ बनता नहीं। मैं एक देहात में गया था। रात के करीब नौ बजे मैंने आग लगी हुई देखी। मैंने पूछा "यह आग कैसे लगी ?" तो लोगों ने कहा, "लगी नहीं, बल्कि लगाई गई है।" उस गांव में धनिये का बड़ा व्यापार चलता था। दो आदमियों का झगड़ा था तो एक ने दूसरे के धनिये को आग लगा दी। मुझे यह भी कहा गया कि यह बात आज की नहीं, बल्कि हमेशा चलती है।

स्वराज्य का उदय काम से ही होगा

इस तरह हम न हाथों से काम करते हैं और न एक दूसरे से प्रेम करते हैं। तो फिर स्वराज्य की गरमी कैसे महसूस

होगी। आप किसी भी देहात में चले जाइये। आप को पाँच पचास आदमी बेकार बैठे हुए दिखाई देंगे। अगर आपको सभा करनी है तो किसी भी समय पचास लोग सभा के लिये आप को मिल ही जायंगे। स्वराज्य आया कहते हैं। लेकिन वह है कहां? कपड़ा बाहर से खरीदते हैं, तेल, खल्ली, गुड बाहर से खरीदते हैं। इतना ही नहीं रस्सियाँ भी आप बाहर से मोल लेते हैं। तो फिर स्वराज्य काहेका? एक आदमी को प्यास लगी थी। अब पानी कहां से मिलेगा? उस से कहा गया कि पानी चालीस मील की दूरी पर पैनगंगा नदी में हैं। वह दुखी हुआ। एक दूसरा आदमी था जो पैनगंगा नदी से एक मील के फासले पर था। वह भी प्यासा था। चालीस मील दूर रहने वाले आदमी ने उससे कहा "अरे तू क्यों दुखी होता है। पानी तो तेरे नजदीक पड़ा है।" उसने जवाब दिया, "अरे भाई नजदीक हुआ तो क्या हुआ। पानी गले में उतरेगा तभी न प्यास बुझेगी।" इसी तरह स्वराज्य लंदन से दिल्ली आ गया, और दिल्ली से नागपुर या यवतमाल भी आ गया। लेकिन वह तुम्हारे क्या काम का। सूर्य जब तक आप के गाँव में नहीं ऊगेगा, तब तक आप सूर्योदय हुआ ऐसा माननेको तैयार नहीं होंगे। स्वराज्य हमारे हाथ में है। हम और आप काम करने लग जायेंगे तभी स्वराज्य का उदय होगा।

रुंझा, जि० यवतमाल
ता० ११-३-५१

पाँचवाँ दिन—

: ९ :

स्वराज्य-लक्ष्मी का आवाहन

स्वराज्य-सूर्य की गरमी महसूस नहीं होती

हमारे देश को स्वराज्य मिले अब तीन साल हो चुके; लेकिन स्वराज्य का असली दर्शन इस देश में अब तक नहीं हो रहा है। सब जगह स्वराज्य का उदय सूर्योदय के समान माना जाता है। सूर्योदय के बाद अंधकार नहीं रहता। स्वराज्य आने पर भी सारी जनता उत्साह से काम करने लगती है, जिम्मेवार बनती है, परस्पर सहयोग बढ़ता है, और हमारे देश की लक्ष्मी कैसे बढ़ेगी, हमारे देश का सौभाग्य कैसे प्रकट होगा इसकी चिंता सब लोग करते हैं। वैसा अनुभव इस देश में अब तक नहीं आ रहा है, यह बड़े दुःख की बात है!

देश का उत्पादन कैसे बढ़ेगा

आज कल जो भी उठता है, कहता है कि देश की पैदावार बढ़नी चाहिये, उद्योग बढ़ने चाहिये। लेकिन पैदावार और उद्योग सिर्फ बोलने से नहीं बढ़ते। खेती करनी पड़ती है और उद्योग भी करने पड़ते हैं। आज आपके गाँव में कताई मंडल की स्थापना की गई है। मैं वहाँ गया था। दो-चार लोग कात रहे थे। इस शहर

की आबादी करीब दस हजार की है। इन सब को कपड़ा लगता है। बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब कपड़ा पहनते हैं; लेकिन सारा कपड़ा ये लोग मिल का ही खरीदते हैं। मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि जिन मिलों में इतनी पूँजी और इतनी अकल खर्च हो रही है, वे हिंदुस्तान को कितना कम कपड़ा देती हैं। इस ओर किसी का ध्यान ही नहीं है। पिछली लड़ाई के पहले हिंदुस्तान की मिलों में फी आदमी १७ गज़ कपड़ा तैयार होता था, अब लड़ाई के बाद याने दस साल बीत जाने पर फी आदमी १२ गज़ कपड़ा तैयार होता है। और इस साल कहा गया है कि हड़ताल आदि कारणों से कपड़ा और भी कम मिलेगा, करीब ११ गज़। १७ से १२ और १२ से ११। यह है मिलों का बारह साल का पराक्रम!

लोग दलील करते हैं, अब स्वराज्य आगया है तो मिलों को पूरा कपड़ा देना ही चाहिये। मैं बहस में नहीं उतरता। मैं पूछता हूं क्या आज मिलें पूरा कपड़ा दे सकती हैं? मामूली धोती जोड़ा भी काले बाज़ार में आज १५) २०) रुपये में मिलता है। काला बाजार क्यों होता है? कपड़ा थोड़ा है। श्रीमान लोग चाहे जितना दाम देने को तैयार होते हैं। इस लिये कपड़े की कीमत बढ़ती है और गरीब लोगों को पूरा कपड़ा नहीं मिलता।

इस हालत में लोग अगर खुद कातने लग जाँय और रोज का एक घंटा भी दें तो साल भर में फी आदमी १५ गज़ कपड़ा तैयार होगा। मैं कहता हूं आधा घंटा भी वे दें तो साढ़े सात गज

कपड़ा तैयार होगा। मिलों में बारह गज़ होता है उसमें यह साढ़े सात गज़ और बढ़ेगा तो देश को अधिक कपड़ा मिलेगा या नहीं? लेकिन यह सब बिना किये कैसे होगा? मैं विवाद में नहीं पड़ता। मिलों के जरिये अगर कपड़े का सवाल हल हो सकता है तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन जब तक ऐसा नहीं होता तब तक आप घर में सूत कातेंगे तो देश की संपत्ति में वृद्धि होगी या नहीं?

आज की जरूरत

आपके एक गाँव ने अपना कपड़ा तैयार करने का संकल्प अगर किया तो बहुत बड़ा काम होगा। जो बात कपड़े पर लागू है वही दूसरी चीजों पर भी है। मैं उम्मीद करता हूं कि जिन लोगों ने यहाँ कताई मंडल कायम किया है वे हारेंगे नहीं। खुद कातते रहेंगे, अपने मित्रों को सिखायेंगे, और इस तरह अपना मंडल बढ़ाते जायेंगे।

लोग कहते हैं, इस ज़माने में अगर हम चरखे पर सूत कातेंगे तो पुराने ज़माने में चले जाते हैं।' मैं उनसे कहता हूं 'पुराना ज़माना और नया ज़माना' इस बहस में क्यों पड़ते हो? आज आपको कपड़ा चाहिये। मिलें कपड़ा देती हैं, वैसे चरखा भी देता है। फिर चरखे पर सूत कातकर कपड़ा बना लेने में क्या हर्ज़ है? मैंने सुना है पांढ़रकवड़े की आबादी पहले नौ हजार थी अब आठ हजार होगई है। यह एक हजार संख्या कैसे कम हो गई? तो कहा गया कि यहाँ मज़दूरी नहीं मिलती इसलिये

मज़दूर गाँव छोड़कर शहर में चले गये हैं। लेकिन वहाँ भी उनको क्या उद्योग मिलने वाला है? देश में जब तक उद्योग नहीं बढ़ते हैं तब तक लोगों को मज़दूरी कैसे मिलेगी? स्वराज्य मिलने पर भी हम अगर आलसी रहें तो हमारा स्वराज्य भी सुस्त ही रहेगा। हम उद्योगी बनेंगे तभी स्वराज्य में लक्ष्मी रहेगी। लक्ष्मी का ऐसा बाना है कि वह उद्योगी पुरुष के घर में ही रहेगी। स्वराज्य आया है इसका अर्थ इतना ही है कि हमारी रुकावटें दूर हो गयी है, और काम करने की उमंग बढ़ी है। लेकिन एक बात साफ है कि देश का हरेक मनुष्य जब तक उत्पादन में हाथ नहीं बटायेगा तब-तक हमारे देश को सुख के दिन नसीब नहीं होंगे।

पांढरकवडा, (जि० यवतमाळ)
१२-३-५१

छठा दिन—

: १० :

नाम जैसा ही काम

पैदल यात्रा क्यों ?

अभी सर्वोदय संमेलन हैद्राबाद के नजदीक शिवरामपल्ली में होने जा रहा है। अगर इन दिनों रेलवे से जाते हैं तो वर्धा से हैद्राबाद एक रात का रास्ता है। लेकिन हमने तो सोची पैदल-यात्रा। और उसमें भी कोशिश यह करते हैं कि बने जहां तक छोटे छोटे गांवों में पहुंचें। अब लोग पूछ सकते हैं कि क्या आप रेलवे या विमान आदि नहीं चाहते हैं ? मैं कहता हूं कि ऐसी बात नहीं है। उलटे मैं तो आज से भी अधिक गति वाले विमान चाहता हूं। अगर घंटे भर में हम दिल्ली जा सकें तो जरूर जायेंगे। लेकिन हर चीज का अपना स्थान होता है। ऐनक की चाहे जितनी भी महिमा गाई जाय तब भी आंख की महिमा से वह नहीं बढ़ सकती। ऐनक आंख की मददगार है। लेकिन आंख की स्वयंभू महिमा है। वैसे हम विमान और दूसरे भी गतिमान साधन चाहते हैं। हमें उनसे नफरत नहीं है। फिर भी पांव की जो प्रतिष्ठा है सो है। पैदल-यात्रा के जो लाभ हैं वे विमान से हरगिज नहीं मिल सकते।

भारतवर्ष एक कैसे बना

हमारे पूर्वजों ने यात्राओं की महिमा बहुत गायी है। काशी-वाले को कहा कि तुमको रामेश्वर के दर्शन करने चाहिये। वैसे

तो काशी में भी गंगाजी हैं, विश्वनाथजी हैं। लेकिन उनके बावजूद काशीवाले की इच्छा होती है कि जिंदगी-भरमें कभी रामेश्वर हो आऊँ तो अच्छा है, और गंगाजी का पानी रामेश्वर के मस्तक पर चढाऊँगा तो धन्य होऊँगा ! तो इधर रामेश्वरवाले को क्या लगता है ? उसको शास्त्रकारों ने सिखाया कि समुद्र का पानी उठा लो और काशी ले जा कर विश्वनाथजी के मस्तक पर चढ़ाओ। इस तरह काशीवाले को रामेश्वर की प्रेरणा और रामेश्वरवाले को काशी की प्रेरणा। दोनों के बीच पन्द्रह सौ मील का अंतर। रेलवे तो उन दिनों थी नहीं। तो पैदल-यात्रा की ऐसी प्रेरणा हमारे पूर्वजों ने दी थी, और हजारों लोग जिंदगी-भरमें प्रायः पैदल जाने की हवस रखते थे। उससे लोगों के दिल एक-दूसरे से एकरूप हो जाते थे। यह एक ऐसा तरीका उन्होंने निकाला कि सारा भारतवर्ष एक बन गया।

पैदल-यात्रा में पारमार्थिक बुद्धि

आज हम देखते हैं कि इतने साधन बढ़ जाने पर भी देश में जातीयता बढ़ रही है, प्रांतों प्रांतों में वाद बढ़ रहा है। यह सब किस लिये हो रहा है ? इसीलिए हो रहा है कि लोग ज्यादा स्वार्थी बने है। वे दूर दूर जाते हैं तो मतलब के लिये जाते हैं। कोई बंबई जाता है तो कोई कलकत्ता जाता है। रोज गाड़ी भर भर कर जाती है। लेकिन टिकट घर पर जा कर देखो क्या तमाशा दीखता है। किसी को किसी की दरकार नहीं होती। हरेक अपनी अपनी टिकट कटाने की धुन में होता है। एक दूसरे की पूछ परख करने को फुरसत नहीं

और एक दूसरे की परवाह भी नहीं। रेल की मुसाफिरी तो बहुत बढ़ी है लेकिन उसके पीछे स्वार्थ है। अब पैदल अगर कोई मुसाफिरी के लिये निकलेगा तो क्या स्वार्थ ले कर जायगा। यहां तो काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। और दिन भी बहुत जायेंगे। अगर पारमार्थिक बुद्धि है तो ही यह काम किया जायगा। और पारमार्थिक बुद्धि से होनेवाले लाभ स्वार्थी बुद्धि से कभी नहीं मिल सकते। कोई अगर विमान में बैठ कर काशी या रामेश्वर पहुंच जाय तो यात्रा का जो फल है, उससे चित्त-शुद्धि की, [illegible] की और जनता से एकरूप होने की अपेक्षा कभी नहीं पूरी हो सकेगी। इसलिए हमने सोचा कि हम अपने देशवासियों से मिलते-जुलते, उनसे बातचीत करते करते सर्वोदय संमेलन के लिये जायंगे।

नाम अच्छे हैं लेकिन काम अच्छे चाहिये

आप पूछेंगे भला यह सर्वोदय क्या चीज है? अच्छे अच्छे नाम तो आज कल बहुत चल पड़े हैं। कोई अपने को समाजवादी कहते हैं। वे कहते हैं कि सारा समाज एक है और हम सारे समाज के सेवक हो जायेंगे। अपना अलग कोई व्यक्तित्व नहीं रखेंगे। निजी स्वार्थ जैसी कोई चीज नहीं। सारा समाज को समर्पण। इसका नाम है समाजवाद। कोई कहते हैं कि हम साम्यवादी हैं। सब के साथ समान व्यवहार होना चाहिये। न कोई ऊंच और न कोई नीच होना चाहिये। जाति का या अन्य कोई स्वार्थ नहीं होना चाहिये। सारा साम्य होना चाहिये यह हमारा उद्देश्य है। बहुत अच्छा उद्देश्य

है । साम्यवाद शब्द भी अच्छा है, समाजवाद शब्द भी अच्छा है। अब यह नया शब्द निकला "सर्वोदय"। यह भी अच्छा है। अच्छे शब्द तो बहुत निकले हैं लेकिन हमें काम अच्छे करने चाहिये तभी ये शब्द काम देंगे। नहीं तो वे हवा में रह जायेंगे। हमें तो इनको जमीन पर लाना है। सर्वोदय का मतलब है 'हरेक का भला।' याने एक का स्वार्थ दूसरे के स्वार्थ के विरोध में, या दूसरे की परवाह किये बगैर अपना स्वार्थ साधना यह बात नहीं होनी चाहिये। हम सब एक हैं और हम सब का उदय। यह है सर्वोदय का अर्थ। तो सर्वोदय में सब से जो पिछड़े हुए होते हैं उनकी फिक्र करना पड़ता है। इसीलिये हमने सोचा है कि हम छोटे-छोटे गाँव में पहुंचें और हो सके तो वहां मुकाम करें।

भारत की सभ्यता देहातों में ही

आखिर यह हिंदुस्तान है कहां ? हिंदुस्तान का प्रेम, भारत-माता का अभिमान, देशभक्ति आदि बातें हम सुनते हैं। लेकिन देशभक्ति याने क्या देश की जो मिट्टी होती है उसकी भक्ति ? वह तो जो हमारे देश में है वैसी दूसरे देशों में भी पड़ी है। भारतमाता की भक्ति का यही मतलब है कि अपने जो लाखों भाई देहातों में पड़े हैं उनकी भक्ति, उनकी सेवा, उनपर प्रेम। इन छोटे देहातों के इतिहास कौन लिखेगा ? बड़े शहरों के तो इतिहास लिखे जा चुके हैं। रोम एक बड़ी भारी नगरी हो गई। उसका इतिहास सुनो। लेकिन छोटे गांवों का इतिहास जब कोई लिखने बैठेगा तब उसको पता चलेगा कि ये गाँव दीखने में तो छोटे छोटे हैं लेकिन अति प्राचीन

काल से चले आ रहे हैं। ये देहात ही हिंदुस्तान की रगें हैं, असलियत हैं, आत्मा हैं। हिंदुस्तान की जो संस्कृति और सभ्यता है वह देहातों में देखने को मिलती है। आज भी हमारी पुरानी सभ्यता जितनी हम देहात में पाते हैं उतनी बड़े शहरों में नहीं पाते। एक मिसाल देता हूं। कल हमारी सभा एक शहर में हुई और आज की सभा देहात में हो रही है। कल की सभा में तो क्या शोर ही शोर मचा था। आज यहां भी छोटे बच्चे हैं लेकिन सारे शांति से सुन रहे हैं। ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यही है कि प्राचीन काल से हमारी जो सभ्यता चली आ रही है उसका अंश देहातों में मौजूद है। देहातों में आप देखेंगे कि वहां के लोग बहुत दीन बन गये हैं, खाने को भी उनको पूरा नहीं मिलता। लेकिन साथ साथ यह भी देखेंगे कि किसी के घर पर अगर भूखा आदमी पहुंच जाय तो किसी-न-किसी तरह उसको खिला ही देते हैं। उसका आदर करते हैं। गरीब से गरीब के घर में भी अतिथि का सत्कार पहले से आज तक होता आया है। इसका अर्थ यही है कि भारत की संस्कृति और भारत की आत्मा देहात में है। देहातों के काम करने के औजार भी करीब करीब पुराने जमाने के ही हैं। पुराने जमाने का ऋषि अगर आज देहात में आ जाय तो देहातियों की पोषाक में वह जरूर फरक देखेगा, लेकिन उसके जमाने की भावना का अंश वह आज देहातों में जरूर देखेगा, इसमें संदेह नहीं है।

देहात की करुण हालत

लेकिन आज इन देहातों में किसी को कुछ आकर्षण ही नहीं है। न यहां कोई मजा है, न यहां कोई सिनेमा है और न और कोई समाँ है। यहां कुछ है ही नहीं। शहर का आदमी यहां आता है तो कहता है यहां कुछ सूझता ही नहीं। देहातों में से भी बुद्धिमान लोग शहर में जा कर रहने लगे हैं। अगर कभी देहात में आते हैं तो उनकी जो कुछ इस्टेट यहां पड़ी होती है उसको देखने या यहां से कोई चीज उठा ले जाने के लिये आते हैं। लेकिन अपनी सारी अकल वह शहर को समर्पित कर देता है। अगर इस तरह देहात का धन, देहात की अकल शहर में चली जाय तो सारे देहात कंगाल हो जायेंगे और मिट जायेंगे। शहरों की आबादी बढ़ रही है। बीस साल पहले वर्धा शहर बीस हजार आबादी का था। अब कहते हैं कि चालीस हजार का हो गया है।

देहात का सर्वांगी विकास

इसलिये सर्वोदयवालों का काम है देहात की चिंता करना, उनकी देख-भाल करना। यह किस तरह होगा? देहातियों के जो उद्योग हैं वे उनके हाथ में रखने चाहिये। देहात के कुछ उद्योग ऐसे हैं जो उनके हक के हैं। वे अगर उनसे कोई छीन लेगा तो उसके खिलाफ बगावत करनी चाहिये और कहना चाहिये कि ये हमारे उद्योग हैं, हम नहीं छोड़ेंगे। जिन उद्योगों का कच्चा माल देहात में होता है उनका पक्का माल करने का उद्योग देहात में ही होना चाहिये। सिर्फ किसानी से याने

खेती से किसानों का कारोबार नहीं चलेगा। खेती के साथ गोसेवा का काम, कपड़ा बनाने का काम, कोल्हू चलाने का काम, गुड़ बनाने का काम, मकान बनाने का काम, यह सारा देहात में बनना चाहिये। ऐसा होगा तभी देहात ताजा-तवाना होंगे और दुनिया के सामने हिंदुस्तान हिम्मत के साथ खड़ा रहेगा।

देशकी की रक्षा देहाती ही कर सकेंगे

देहात अगर क्षीण होते गये तो अपने देश की रक्षा सिर्फ शहरवालों के भरोसे नहीं हो सकेगी। देश के लिये मर मिटने का प्रश्न आयेगा तब देहात के लोग ही मरने के लिये तैयार होंगे। क्योंकि अपने वतन का खेती का अभिमान और उसकी रक्षा करने की तीव्र वासना देहात को ही हो सकती है। क्योंकि देहातवाले जमीन से चिपके हुए हैं। हिंदुस्तान जैसा देश अपनी रक्षा के लिये अगर सिर्फ शहरवालों पर निर्भर रहा तो खतरे में रहेगा। इसकी रक्षा तो देहातियों से ही होगी। इसलिये सर्वोदय वालों ने यह संकल्प किया है कि हम देहातियों की सेवा करेंगे। और यही आप को कहने के लिये मैं आपके सामने उपस्थित हुआ हूं। भाइयो, सर्वोदय का विचार देहातियों की दृष्टि से थोड़े में मैंने आपके सामने रख दिया है।

पाटणबोरी, (जि० यवतमाळ)
१३-३-५१

सातवाँ दिन—

: ११ :

आत्म-जाग्रति से ही दुख मिटेगा

हरिनामसंकीर्तन का कार्यक्रम

आप लोग शायद जानते हैं कि हम लोग पैदल निकल पड़े हैं और हैद्राबाद में सर्वोदय संमेलन के लिये जा रहे हैं। जब मैंने पैदल चलने का सोचा तो एक भाई ने पूछा, "एक दिन के काम के लिये आप एक महीना लगा रहे हैं तो इस बीच आपका क्या कार्यक्रम रहेगा।" मैंने जवाब दिया, "मेरा कार्यक्रम तो यही रहेगा कि मैं हरिनाम लूं और सब को लेना सिखाऊं।" यह जबाब मैंने इसलिये दिया कि मैं अपने में सिवा राम-नाम लेने के और कोई ऐसी ताकत नहीं देखता हूं कि जिससे आपका काम बन सके।

अनेक धर्म, अनेक उपासनायें

आज हमारे देश के सामने बहुत बड़ी समस्यायें हैं। यह आश्चर्य की बात भी नहीं है। हमारा देश बहुत बड़ा है। फिर हमारी आजादी को भी अभी कितने साल हुए हैं? जिम्मेवारी एकाएक आ पड़ी इसलिये हमारे देश की नौका गहरे पानी में आ पड़ी। इन सबका हल एक राम-नाम के सिवा और किसी मानवी प्रयत्न में है, ऐसा मैं नहीं मानता हूं।

आखिर हरिनाम का क्या मतलब है ? जो हरिनाम लेगा वह और कोई नाम नहीं ले सकता । हमारे संतों ने हमें सिखाया है कि भाई, परमेश्वर की उपासना और पैसे की उपासना दोनों बातें साथ नहीं चल सकतीं । यदि आप अपने मन में परमेश्वर को स्थान देते हैं तो फिर दूसरी किसी चीज को आपके मन में स्थान नहीं हो सकता । हमारे यहां कई प्रकार के भेद पड़े हैं । इन्होंने हमारा रास्ता रोक रखा है । अगर ये मिटते हैं तो हमारा रास्ता साफ हो जाता है, और देश एक हो जाता है । हमारे देश में धर्म अनेक है यह बात दुख की नहीं है बल्कि सौभाग्य की है । जहां अनेक धर्मों की सम्मिलित उपासना होती है वहां धर्मों की यह विविधता देश के विकास में मददगार ही होती है । हिंदुस्तान के विकास में यहां के विविध धर्मों ने काफी मदद पहुंचाई है । भिन्न भिन्न धर्मों के जरिये एक परमेश्वर का नाम हम लें तो हजारों भेद मिट सकते हैं ।

हरिनाम में भेद मिटाने की शक्ति

एक दूसरे की भाषाओं का हमें अध्ययन करना चाहिये । हमारे विविध साहित्यों में अनेक खूबियां भरी हैं । लेकिन यहां तो एक दूसरे की भाषा का भी द्वेष शुरू हुआ है । कोई भी साहित्य द्वेष पर नहीं टिक सकता । इसी तरह प्रांत-भेद, प्रदेश-भेद, पक्ष-भेद भी हम में हैं । हिंदुस्तान में दुख तो सब तरफ पड़ा है । हमें जरूरत है सिर्फ सेवा में लग जाने की । पक्ष भेद आदि से सुरक्षित रहने की तरकीब अगर कोई है तो वह भगवान का नाम ही है । मैं लोगों को यह सुनाऊंगा कि हम सारे भगवान के पैदा किये हैं । वे

परमपिता हैं और हम सब उनके पुत्र हैं। हम अगर आपस में लड़ेंगे तो उनको बहुत दुख होगा। "अमृतस्य पुत्राः" सब के सब अमृत के पुत्र हैं। देह को क्या देखते हो? आखिर सब को खाक में ही मिलना है। फिर कौन सी खाक ब्राह्मण की है, कौनसी हरिजन की है या और किसी की है, यह पहचाना भी नहीं जायगा। आत्मा एक है, उसीका ध्यान रखो। हम देह में इसीलिये आये हैं कि अपने पड़ोसियों की, दीनों की और सबकी सेवा हम करें और परस्पर प्रेम करें। इसी में मानवदेह की सार्थकता है। और यही हरिनाम का अर्थ है।

और जो हरिनाम लेनेवाले हैं उनको सेवा में लग जाना है। पानी निकलता है समुद्र की ओर जाने के लिये; लेकिन रास्ते में जो कुछ सेवा वह कर सकता है करते हुए जाता है। समुद्र तक पहुंचने में अगर वह कामयाब रहा तो वहां तक पहुंच जाता है! अगर न पहुंच सका तो रास्ते में ही खतम हो जाता है। वैसे हमारी कोशिश यही होनी चाहिये कि हमारी जो भी ताकत है उससे हम दीन-दुखियों की सेवा करें।

दोनों हाथों का उपयोग करें

वैसे हिंदुस्तान में क्या कम है। जमीन पड़ी है, कितनी ही नदियां हैं, फिर भी हम भीख मांगते हैं। न खाने को अन्न है और न पहनने को कपड़ा। मेरी समझ में नहीं आता कि परमेश्वर ने हमें दो हाथ दिये हैं तो हमें हाथों से काम करने में क्या आपत्ति है? मानव की ही यह विशेषता है कि उसको भगवान ने दो हाथ

दिये हैं, जिससे कि वह कर्मयोग साध सके। स्वर्ग में देवता सुख ही सुख भोगते हैं, तो पृथ्वी पर जानवर दुख ही दुख भोगता है। जहां केवल भोग ही भोगना है वहां योग कैसे सधेगा? मनुष्य योनि में कर्मयोग की साधना हो सकती है इसीलिये देव योनि और पशु योनि से मानव योनि श्रेष्ठ समझी गयी है। तो भगवान ने हमें दो हाथ दिये यह उसकी बहुत बड़ी देन है। उनका हम उपयोग करेंगे तभी हमारे दुख मिटेंगे।

स्वराज्य के सही माने क्या हैं ?

लोग कहते हैं स्वराज्य आ गया। क्या किसी पार्सल से आया है ? स्वराज्य तो अपना निज का होता है। अपनी कमाई का होता है। स्वराज्य आया इसका अर्थ इतना ही है कि उजाला हो गया। अब काम करने में सहूलियत हो गई। लेकिन हम अगर काम ही न करें तो सिर्फ उजाले से क्या होनेवाला है ? स्वराज्य नहीं था तब हम जिम्मेवारी अधिक महसूस करते थे। अब सभी कहने लगे हैं कि सब कुछ सरकार को ही करना चाहिये। मैं पूछता हूं कि सरकार आप से भिन्न है क्या ? आप जिसे चाहते हैं उनको वोट दे कर चुन लेते हैं। आप अगर मजबूत बनेंगे तो आप-की सरकार मजबूत बनेगी। और आप दुर्बल रहे तो आप की सरकार भी दुर्बल ही रहेगी।

लोग कहते हैं कि अब तक हमने बहुत काम किया अब कुछ आराम करने दो। मैं कहता हूं आराम कैसा ? क्या पौर्णिमा आ गई है ? अभी तो अमावस्या खतम हुई है और चांद धीरे धीरे

बढ़ेगा। कुछ लोग कहते हैं अब तक हमें काँग्रेसवालों से आशा थी अब आप सर्वोदयवालों पर आशा रखी है। यह कितना बड़ा भ्रम है। सर्वोदय समाज कोई अमृत की पुड़िया तो नहीं है जिसे खा लिया और सर्वोदय अपने आप हो गया। हमको ऐसा व्रत लेना होगा कि हमारे जीवन के लिये हम दूसरे की सेवा नहीं लेंगे, बल्कि हो सकेगी उतनी दूसरे की सेवा करेंगे। ऐसा जो करते हैं वे सर्वोदय-समाज के सेवक बनेंगे। सर्वोदय-समाज सब का है। वह किसी प्रकार की शहादत नहीं मांगता। जो कहता है कि मुझे सर्वोदय समाज के उसूल मान्य हैं वह सर्वोदय समाज का सेवक है। कोई शराबी भी अगर सर्वोदय की बात मान कर शराब पीना कम कर देता है तो वह भी सर्वोदय-समाज का सेवक है।

आत्मा की पहचान ही सब दुख दूर करेगी

किसी ने मुझे बताया कि ढाई साल पहले यहां रजाकारों का बहुत जुल्म था। अब वह चला गया है फिर भी हमें दुख है। ऐसा होता ही है। जब तक मनुष्य की निज की आत्मा जाग्रत नहीं होती तबतक एक दुख मिटता है तो दूसरा शुरू होता है, पेशवाओं के राज में लोग दुखी थे। उनके बाद अंग्रेजों का राज आया। उनका पहला गवर्नर माउंट एलफिन्स्टन हुआ। उसकी व्यवस्था में हमारे लोगों ने सुख समझा। लोगों ने देखा कि सारे काम इनके जमाने में समय पर चलते हैं, व्यवस्था अच्छी है। राज कानून से चलता है। यह सब देख कर लोग बड़े खुश हुये, लेकिन थोड़े ही दिनों में लोग दुखी हो उठे। डाक्टरी इलाज का

ऐसा ही है। एक बीमारी के लिये दवा देते हैं, वह बीमारी अच्छी हुई ऐसा लगता है इतने में दूसरी बीमारी शुरू होती है। हिंसा में ऐसा ही होता है। रजाकारों से हमको किसने छुड़ाया। पुलिस ने और हथियारों ने। उससे हम तो पराधीन ही रहे। जीवन में कुछ परिवर्तन ही नहीं आया। इस तरह से जीवन सुखी नहीं होगा।

सर्वोदय के कार्यक्रम में रस क्यों नहीं ?

लोग कहते हैं कि सर्वोदय के कार्यक्रम में रस नहीं आता। तो अब मैं क्या प्रोग्राम बताऊं ? पाकिस्तान से लड़ाई छेड़ने का प्रोग्राम दूं ? लड़ाई के नाम से लोगों में उत्साह आता है, लेकिन वे यह नहीं सोचते कि फौज पर देश का पचहत्तर फी सदी से अधिक खर्च होता है। तो फिर गरीबों की सेवा कैसे कर सकेंगे ?

सारे मानव-सेवक बनें

भाइयो, मुझे इतना ही कहना है कि आप सब भेद भूल जाँय। आड़े गंध और खड़े गंध, भस्मी और बिना भस्मी, सर्वोदय वाले और बिना सर्वोदयवाले ये सब भेद मिटा कर आप एक भाव रखिये कि मैं मानव हूं और मानव का सेवक हूं।

आदिलाबाद (निजाम स्टेट)
१४-३-५१

आठवाँ दिन—

: १२ :

भगवान का ही काम और नाम

रास्ता छोड़ कर क्यों आया ?

मैं तो जा रहा था वर्धा से हैद्राबाद। लेकिन रास्ता छोड़ कर इधर आपके गाँव की तरफ आ गया। उसका कारण यह है कि इधर मांडवी में कस्तूरबा ग्रामसेवा केंद्र है। महात्मा गांधीजी की धर्मपत्नी कस्तूर बा का नाम तो आप सबने सुना ही है। उनके स्मरण में जगह जगह संस्थायें खोली गई हैं जो ग्रामीण स्त्रियों की सेवा कर रही हैं। मांडवी में जो बहन काम कर रही है उसने इच्छा प्रकट की कि मैं उसका काम देखने के लिये वहाँ जाऊं। इसलिये मैं वहाँ जा रहा हूं।

आपके कामों से प्रसन्नता

मुझे यहाँ इस बात की बहुत खुशी हुई कि आप लोगों ने भगवान के भजन सुनाये। इतने छोटे से गाँव में हरि-चर्चा रोज चलती है यह बहुत अच्छी बात है। हरि-चर्चा हर गाँव में चलनी चाहिये और रोज चलनी चाहिये।

दोपहर को मैं आपके गाँव में घूम आया। लोगों के घरों में भी हो आया। सौ साल की एक बूढ़ी स्त्री मिली। उसे बड़ी खुशी हुई।

आपने एक बड़ा अच्छा काम किया है। यहाँ का कुआँ और हनुमानजी का मंदिर सबके लिये, हरिजनों के लिये भी, खोल दिया है। यह काम मुझे बहुत अच्छा लगा। भगवान के सामने भेद-भाव रखना गलत बात है। हरिजनों के साथ छूत-छात रखना और उन्हें मंदिरों में आने से रोक-टोक करना अच्छी बात नहीं है। इसलिये आपने जो काम किया है वह बहुत अच्छा है।

फिर आप लोगों ने पानी आदि का छिड़काव देकर यह प्रार्थना की जगह साफ कर ली यह भी बहुत अच्छा किया। इससे आप लोगों को शिक्षण भी मिला।

पशु बलिदान गलत चीज

मैंने सुना कि यहाँ आप लोगों के दो देव हैं। एक हनुमानजी हैं और दूसरी है पोचम्मा देवी। यह देवी कौन हैं? उसे तो मुरगी चाहिये। बकरा भी चाहिये। क्या अपने बच्चों को खानेवाला भी कोई देव हो सकता है? इसलिये आप एक ही देवता की पूजा करें। और सब देव झूठे हैं। उसके नाम पर बकरे और मुरगी काटना धर्म नहीं हो सकता।

बुनकर क्यों नहीं?

मैंने और एक बात देखी। इस गाँव में बढई, लुहार, चमार कुम्हार तो हैं। लेकिन बुनकर नहीं है। मैं परेशान रह गया। कपड़ा तो आप सबको चाहिये। बच्चे, बूढे, स्त्री, पुरुष सबको। इतने पुरुष यहाँ बैठे हैं सब कपड़ा पहने हैं। लेकिन सारा कपड़ा खरीदा

जाता है यह शरम की बात है। गाँव का धन इस तरह बाहर भेजना ठीक नहीं है। मैंने यह भी सुना कि यहाँ स्त्रियाँ दोपहर में खेती पर नहीं जातीं। सिर्फ सबेरे ही खेत पर जाती हैं। याने उनके पास वक्त रहता है। उन्हें कातना सिखाया जाय तो वे कातेंगीं। भगवान ने मनुष्य को दो बड़ी भारी शक्तियाँ दी हैं। एक वाणी, दूसरी हाथ। वाणी से भगवान का नाम लेना चाहिये, हाथ से भगवान का काम करना चाहिये।

वैसा आप करेंगे तो आप जो भजन करते हैं वह कृतार्थ होगा। भगवान आप सबको ऐसी प्रेरणा दें, ऐसी प्रार्थना है।

कुचलापुर अर्थात् कौसल्यापुर
१५-३-५१

नौ वां दिन—

: १३ :

लघु-आरंभ का दीर्घ-फल

ग्रामसेविका का प्रेमाग्रह

मैं आज यहां आदिलाबाद से आया हूं। वर्धा से हैदराबाद जा रहा हूं। आप का गाँव रास्ते में तो नहीं था लेकिन आपके यहां की सेविका पार्वती का आग्रह रहा। उसने कहा, "हम यहां देहात में काम कर रहे हैं। आप अभी न आये तो फिर कब आयेंगे कह नहीं सकते। इसलिये अभी ही चलिये।" मैंने सोचा हमारी लाड़ली लड़की आग्रह कर रही है तो हो आऊं। इससे मुकाम पर पहुंचने में चार दिन देर हो जायगी।

यह काम एक बडे वृक्ष का पौधा है

यहां की बालवाड़ी और आरोग्य केंद्र आज सुबह हम देख आये। यह केंद्र छोटा है लेकिन वह पौधा है। ज्ञानदेव कहते हैं, "इवलें से रोप लावियेलें द्वारी ल्याचा वेल गेला गगनावरी" छोटा-सा पौधा लगाया था लेकिन उसकी बड़ी बेल बन कर सारे आकाश पर छा गई। वैसे ही छोटे पौधे की अगर आप लोग ठीक देखभाल करेंगे तो उसको आगे फूल और फल लगेंगे। बच्चा पैदा होता है तब छोटा होता है। लेकिन माँ जानती है कि वह

आगे चल कर बड़ा होनेवाला है और उसकी हिफाजत करती है, उसकी सेवा करती है। वैसे आप भी इस केंद्र की कीजिये।

कस्तूरबा की महत्ता

इस केंद्र का नाम है कस्तूरबा ग्रामसेविका केंद्र। कस्तूरबा गांधीजी की पत्नी थी यह तो आप जानते ही हैं। जैसे गांधीजी पढ़े लिखे थे वैसी कस्तूरबा नहीं थीं। लेकिन उनका भाग्य बड़ा था। गांधीजी और कस्तूरबा ये नाम आज जैसे सार्वभौम हो गये हैं वैसे ही वसिष्ठ और अरुंधती के नाम थे। आज भी विवाह-विधि में वधू और वर को उत्तर दिशा की तरफ मुंह करके खड़ा करते हैं और अरुंधती की तरफ इशारा करते हैं। उत्तर दिशा में वसिष्ठ का तारा है और पास ही चार अंगुलियों के फासले पर अरुंधती का छोटा-सा तारा है। इन दो तारकाओं के दर्शन करके उनको नमस्कार कराने की विधि आज भी विवाह में चलती है। कौन वसिष्ठ और कौन अरुंधती ? लेकिन वसिष्ठ के साथ अरुंधती का नाम भी अमर हो गया है। देह के पास छाया होती है। लेकिन मनुष्य छाया की ओर ध्यान नहीं देता है। फिर भी छाया मनुष्य को छोड़ती नहीं है। अरुंधती का ऐसा ही था। उसका व्रत था कि पति के साथ रहना, सुख में या दुख में। वह संकट में पड़ेगा तो उसके पीछे संकट में पड़ना, और वह स्वर्ग में जाय तो उसके पीछे स्वर्ग में जाना। कहीं न ठहरते हुए जाना इसी व्रत के कारण तो उसका नाम "अरुंधती" पड़ा। ऐसा ही दूसरा नाम सीता का है। हम "राजा राम" के साथ साथ "सीता राम" भी कहते हैं।

रामचंद्रजी वनवास के लिये निकले तो वह भी उनके पीछे निकलीं। रामचंद्रजी ने कहा, "पिताजी ने तुझे तो वनवास नहीं कहा है।" सीता ने जवाब दिया, "आप सुखोपभोग के लिये कहीं निकलते तो शायद मैं न आती, लेकिन आप जंगल में जा रहे हैं इसलिये मैं आये बगैर नहीं रहूंगी।"

इन उदाहरणों के जैसे ही गांधीजी और कस्तूरबा थीं। जहां जहां गांधीजी गये वहां वे गयीं। और आखिर सरकार के साथ सत्याग्रह के युद्ध में लड़ते हुए गांधीजी के साथ जेल गयीं और वहीं गांधीजी की गोद में उन्होंने प्राण छोड़ दिये। कस्तूरबा के स्मरणार्थ यह काम शुरू हुआ है। तो आप लोग इस काम में सहयोग दें और इस केंद्र से लाभ उठायें ऐसी मेरी आप से प्रेमपूर्वक प्रार्थना है।

मांडवी, (जि. आदिलाबाद)
१६-३-५१

दसवां दिन—

: १४ :

सेवा ही तीर्थ-यात्रा है

गाँव की फिक्र गाँववाले ही करें

मैं आज आपका गाँव घूम आया। यहां काफी शक्ति है। दो-चार घरों में कातना चलता है। हर घर में क्यों नहीं चलता? आपके गाँव में कपास बहुत होती है। पहले हमारे यहां सब कातते थे और खेती भी करते थे। तब खेती ज्यादा थी और लोग कम थे। इसलिये खेती में ज्यादा समय जाता था। आज खेती कम है और लोग ज्यादा हैं। फिर कातने के लिये समय क्यों नहीं मिलेगा? मैं आप लोगों को दोष नहीं देना चाहता। यह स्थिति हर गाँव में है। इसे बदलने के लिये हर गाँव में कार्यकर्ता चाहिये। अब कार्यकर्ता हर गाँव में बाहर से कैसे आयेंगे? इसलिये गाँव में से ही कार्यकर्ता निर्माण होने चाहिये।

हम लोगों को एक आदत पड़ गई है कि हम अपने परिवार के बाहर नजर नहीं देते। घर का कचरा पड़ौसी के दरवाजे पर डालते हैं। घर के बरतन साफ रखेंगे लेकिन गाँव का कुआं साफ नहीं रखेंगे। सोचते हैं कि वह तो सब का है मैं क्यों फिक्र करूं? लेकिन चेचक एक को भी हो जाय तो सारे गाव में फैलती है। इसलिये सारा गाँव मेरा और सारे गाँव वाले मेरे इस तरह सोचेंगे तो

गांव वैकुंठ बन जायगा। लेकिन आज तो मैं इतना ही चाहता हूं कि हर गांव में कम-से-कम एक कार्यकर्ता निर्माण होना चाहिये। हिंदुस्तान में यह खूबी है कि जिस गांव में कोई अच्छा आदमी होता है उसके पीछे लोग चलते हैं। मांडवी में अभी मैं गया था। वहां एक अच्छे भाई हैं तो लोग उनके पीछे जा रहे हैं। आप से मेरी प्रार्थना है कि आप अपने गांव के बारे में आज से ही सोचना शुरू करें। जिस गांव में लोग सारे गांव का नहीं बल्कि सिर्फ अपने बारे में ही सोचते हैं वह गांव नहीं बल्कि स्मशान है।

दुखियों की सेवा कीजिये

लोगों को एक ही स्थिति में समाधान नहीं होता। मन की शांति के लिये वे तीर्थ-यात्रा करते हैं। लेकिन हम अगर एक दूसरे की सेवा करेंगे और चिंता करेंगे तो तीर्थ-यात्रा की जरूरत नहीं रहेगी। खाने का आनंद तो पशु को भी होता है। लेकिन खिलाने का संतोष मनुष्य को ही होता है। आपके गाँव में एक भी दुखी आदमी नहीं रहना चाहिये। दुखी आदमी किस जाति का है यह भी नही देखना चाहिये। दुखी लोगों की अलग जाति नहीं होती। वह दुखी है यही उसकी जाति है। वैसे ही पुण्यवान लोगों की भी जाति नहीं होती। आप ने सुना है कि साधु संत सब जातियों में हो गये। हम महात्माओं की जाति नहीं देखते। सब महात्मा महात्मा हैं। वैसे सब पापी पापी ही हैं। मरने के बाद परमात्मा यह नहीं पूछेगा कि तुम ब्राह्मण हो या

रेड्डी। वह यही पूछेगा कि तुमने पाप किया है या पुण्य। यह जो ढबू पैसा आप कमा रहे हैं वह साथ नहीं जानेवाला है। इसलिये जिसके पास जो भी धन है वह लोगों की सेवा में लगा दे। तभी आप भगवान के सामने खड़े रह सकेंगे।

तलमगु (जि० आदिलाबाद)
ता० १७-३-५१

ग्यारहवाँ दिन—

: १५ :

ग्रामोद्योग न छोड़ें

पक्के रास्ते के खतरे

हम लोग वर्धा से हैद्राबाद पैदल जा रहे हैं। आप लोग भी यात्रा के लिये जाते हैं। यात्रा के लिये पैदल ही जाने का रिवाज है। हमारा रास्ता तो आदिलाबाद से इस गाँव से हो कर जाता है। लेकिन रास्ता छोड़ कर मैं मांडवी हो आया। आदिलाबाद जिले में जंगल ज्यादा हैं। देहातों के रास्ते भी अच्छे नहीं हैं। बहुत लोगों को लगता है कि अच्छे रास्ते न होना बड़े दुःख की बात है। शहर वाले सोचते हैं कि रास्ते अच्छे बनाना ही पहली सुधार की बात है। हमारे गाँव वाले भी भोले होते हैं। कहते हैं कि हां रास्ते बनने चाहिये। लेकिन मैं सोचता हूं कि देहातों में रास्ते बन जायेंगे तो उनका कल्याण होगा या अकल्याण? रास्ता अच्छा बन जाता है तो सुभीता हो जाता है सही। लेकिन किन लोगों का सुभीता होता है? सब से ज्यादा सुभीता शहरवालों को होता है। वे यहां आसानी से आ सकते हैं और देहातों को लूट सकते हैं। देहातों में रास्ते नहीं बनने चाहिये, यह मुझे नहीं कहना है। लेकिन रास्ते बनने पर क्या आपत्ति आती है यह मैं समझा रहा हूं। आप के नजदीक के एक गांव में मैं कल घूम आया था।

वहां मैंने देखा कि कई उद्योग चल रहे हैं। रंगारी का काम चल रहा था। वहां रास्ता अच्छा नहीं था इसलिये वह रंगारी का धंधा चल रहा है। लेकिन रास्ता पक्का बन जाने के बाद रंगारी का धंधा जिंदा नहीं रहेगा। कुछ देहातों में चरखे चलते हुए भी देखे। लेकिन मोटर-रोड हो जाने पर वे कहीं भी दिखाई नहीं देंगे। कुछ घरों में हाथ की चक्की चलती हुई देखी। मैं बहुत खुश हो गया। लेकिन रास्ता बनने के बाद कोई पूंजीवाला यहां आ कर मिल की चक्की शुरू कर देगा और सारे देहात वाले अपनी चक्कियाँ छोड़ कर उस मिल के गुलाम बनेंगे।

पीसने का व्यायाम

एक गाँव की बात है। वहां एक मुसलमान रहता था। उसकी बीबी बीमार हो गई। उस आदमी की मुझ पर श्रद्धा थी। उसने मुझे बुला लिया और क्या इलाज करना चाहिये इसके संबंध में मेरी सलाह मांगी। मैंने देखा कि उस बहन को सिवा बदहजमी के और कोई बीमारी नहीं है। मैंने पूछा कि घरमें आटा कौनसा आता है? जवाब मिला कि मिल का आता है। फिर मैंने सलाह दी कि आप एक चक्की घर में लगा दीजिये और बड़ी फजर उठ कर थोड़ा पीसते जाइये। उस आटे की रोटी खाते जाइये। सारा रोग दूर हो जायगा और आज से दुगुनी भूख लगेगी। उसने वैसा ही किया। वह बहन धीरे धीरे चक्की पर पीसने लगी। पंद्रह-बीस दिनों के बाद मैं उस बहन को देखने गया और पूछा कि अब तबियत कैसी है? तो उसने जवाब दिया कि अच्छी है।

हाथ के आटे की रोटी जब से खाना शुरू किया तब से भूख बढ़ी। रोटी भी बहुत बढ़िया लगती है। पीसने का व्यायाम होता है तो तबियत भी अच्छी रहती है। लेकिन मोटर-रोड बनने पर मिल आते ही हम हाथ से पीसना बंद कर देते हैं। हम आलसी बनते हैं। कौन जल्दी उठेगा? फिर मिल सस्ता भी तो पीस देती है। लोग अब छः बजे उठने लगे हैं।

रास्ता होने पर भी उद्योग न छोड़ो

रास्ते आज नहीं कल होने ही वाले हैं। बिना रास्ते के यह जिला पिछड़ा हुआ माना जायगा। लेकिन रास्ते होने पर भी आप अपनी अकल कायम रखेंगे तो आपका कोई कुछ नहीं बिगाड सकता। मैं आपको एक हिसाब बताता हूं। आप सबके बदन पर कपड़ा है। यह सारा आप मोल लेते हैं। हर आदमी के पीछे रोज की आधा सेर ज्वार हम पकड़ें और एक कुटुंब में पांच आदमी पकड़ें तो साल भर में पांच खंडी ज्वार लगेगी। साठ रुपये खंडी का भाव पकड़ें तो तीन सौ रुपये हो गये। अब कपड़े का हिसाब करें। एक कुटुंब के लिये आज के भावसे, ब्लैक मार्केट के कारण सौ रुपये का कपड़ा साल भर में लगता है। याने ज्वार के बाद कपड़े का ही खर्च अधिक होता है। अब यह सारा कपड़ा अगर हम बाहर से खरीदेंगे तो हमारी गृहस्थी कैसे चलेगी और दारिद्र्य भी कैसे मिटेगा?

आप जरा सोचें कि हमने पहले क्या किया था? हिंदुस्तान की मिलों से योरप की मिलों का कपडा बहुत सस्ता बिकता था।

यहां की मिलों का कपड़ा पड़ा रहने लगा। तब हमने विलायत के कपड़े का सस्ता होते हुये भी बहिष्कार किया। तो अब हम भी मिल का कपडा, सस्ता होने पर भी, नहीं लेंगे ऐसा व्रत क्यों नहीं लेते ? ऐसा व्रत अगर नहीं लेंगे तो फिर देहात में कौनसा उद्योग रहेगा ? सारे देहात के उद्योग अगर शहरवाले छीन लेंगे, और हम भी मुख्य बन कर कहेंगे कि बहुत अच्छा हुआ सस्ता मिलने लगा, आप शहरवाले सेवा ही कर रहे हैं, तो फिर अनाज भी बाहर से लेने लगेंगे क्या ? कुछ लोग तो आज कह भी रहे हैं कि अनाज पैदा करने की अपेक्षा तंबाकू पैदा करना अधिक फायदेमंद है। लेकिन तंबाकू से यद्यपि पैसा मिलेगा फिर भी अन्न कैसे मिलेगा ? खाने के लिये अन्न चाहिये इसलिये वह गाँव में ही पैदा करना चाहिये। उसी तरह पहनने के लिये कपड़ा चाहिये तो वह भी गांव में ही तैयार करना चाहिये। घर में कपास होती है। उसको धुन कर पूनी बना लेनी चाहिये। घर में ही कातना चाहिये और बुनना भी घर में ही चाहिये। बुनना कोई कठिन काम नहीं है। ऐसा होगा तो किसान के घर में उद्योग दाखिल होगा और उसका घर सुखी होगा। फिर झगडे भी नहीं होंगे।

आज जहां देखो वहां झगड़े ही झगड़े हैं। खाने को पूरा नहीं मिलता इसके कारण ये सब झगड़े हैं। हमें जो चीजें हर रोज लगती हैं वे अगर हम घर पर ही तैयार कर लेंगे तो हमें कोई लूटेगा नहीं और हम भी किसी को लूटेंगे नहीं। लेकिन इसके लिये पराक्रम करना पड़ेगा।

हाथ-चक्की के चार फायदे

मेरी आप से प्रार्थना है कि रास्ते होने पर भी आप अपने घर के उद्योग मत छोड़िये। आटा घर पर ही पीसिये। मिल हो जाने पर भी वहां नहीं पिसायेंगे ऐसी शपथ लीजिये। आप कहेंगे दो ही पैसे में पिस कर मिलता है। लेकिन रोज के दो पैसे याने महीने में एक रुपया और साल-भर में बारह रुपये हो जाते हैं। आप का गांव ढाई सौ घरों का होगा तो साल भर में तीन हजार रुपये चले जायेंगे।

दूसरी बात यह होगी कि रोज का आपका व्यायाम चला जायगा। आज अपने देहात के लोग कमजोर हैं। और पीसने की आदत छूट जायगी तो बाद में वह काम बहुत कठिन मालूम होगा।

तीसरी बात यह कि मिल का आटा हम छः-छः दिनों तक खाते रहेंगे। ताजे आटे में और हाथ-चक्की पर पीसे हुए में जो ताकत है वह मिल के और बासे आटे में नहीं है।

चौथी बात यह कि हम आलसी बनेंगे, देर से उठेंगे। आज जो भगवान का नाम लेते हैं वह भी नहीं लेंगे। मुझे याद है कि मेरी मां सुबह जल्दी उठ कर करीब घंटा भर पीसती थी। और पीसते हुए भगवान का नाम लेती थी। हमारे संतों ने चक्की पीसते हुए गाने के लिये भजन और अभंग बनाये हैं। मेरी मां तुकाराम का अभंग गा कर पीसती थी। "पहिली माझी ओवी ओवीन जगत्र गाओन पवित्र पांडुरंग"....(यह अभंग विनोबाजी ने पूरा गाकर सुनाया)।

तो अगर चक्की बंद हुई तो ऐसे भजन भी बंद हो जायेंगे। इसलिये मुझे आप को सावधान करना है। आप की सेवा करने के बहाने बाहर से लोग आयेंगे और आप लूटे जायेंगे इसलिये आप अपने गाँव के धंधों को कभी भी मत छोड़िये यही मुझे कहना है।

गुडी हतनूर, (जि० आदिलाबाद)
१८-३-५१

बारहवां दिन—

: १६ :

व्यापार सेवा के लिए

हिंदुस्तान के बाजार का बिगड़ा रूप

आप इतने लोग दूर दूर के गावों से यहां इकट्ठे हुए हैं यह देख कर मुझे खुशी होती है। मुझे इस गांव की कोई जानकारी नहीं थी। लेकिन जिन लोगोंने कार्यक्रम तय किया उन्होंने यहां का मुकाम रखा, और यह अच्छा ही हुआ। क्योंकि आज यहां का बाजार था। दुनिया भर में बाजार कैसे चलता है वह तो दुनिया जाने! लेकिन हिंदुस्तान में जहाँ बाजार भरता है वहां झूठ ही झूठ का बाजार होता है। आज ही का किस्सा है। एक दूकान पर एक आदमी पुस्तक खरीदने गया। दूकानदार ने उसको वह पुस्तक चौदह आने में दी। फिर वह आदमी दूसरी दूकान पर पहुंचा। वहां उसको वही पुस्तक दिखाई दी तो उसने उसके दाम पूछे। दूकानदार ने छह आने बताये। तो फिर वह आदमी पहली दूकान पर वापिस आया और दूकानदार से पूछने लगा कि इस किताब के तुमने चौदह आने कैसे लिये जब कि यह दूसरी दूकान पर तो छह आने में मिलती है? दूकानदार ने जवाब दिया, भाई, मैं तो व्यापारी हूं। मुझे जो दाम लेने थे मैंने लिये। तुमको अगर यह पुस्तक दूसरी दूकान पर छह आने में मिलती थी तो आप वहीं से खरीदते।

याने दूसरी दूकान पर नहीं खरीदा, यह आपका ही दोष है। दूकानदार का कोई दोष ही नहीं है। ऐसा सब हो रहा था। इतने में हममें से एक साथी वहां पर पहुंचा। उसने पूछा क्या बात है? उस आदमी ने कहा कि यह पुस्तक इस दूकानदार ने चौदह आने में दी जब कि दूसरी दूकान पर छह आने में मिलती है। हमारे भाई ने पुस्तक खोल कर दाम देखे और कहा, इस पुस्तक के दाम न चौदह आने हैं और न छह आने हैं बल्कि तीन आने हैं। वह कीमत उस पुस्तक पर छपी थी। उस तीन आने में दूकानदार का कमीशन आदि सब आ गया। इसलिये दूकानदार को उससे अधिक कीमत लेने का कोई हक नहीं था। फिर दूकानदार का और पुस्तक खरीदने वाले का झगड़ा शुरू हुआ। मैं इस बात को आगे बढ़ाना नहीं चाहता। हमारे बाजार कैसे होते हैं यह समझ लो "झूठ ही लेना झूठ ही देना झूठ चबेना।"

व्यापारियों का धर्म

होना तो यह चाहिये कि व्यापारी सेवा का भाव रखें। व्यापार एक धर्म है। हमें शास्त्रकारों ने बताया है कि वैश्यों को व्यापार के धर्म का आचरण करना चाहिये। धर्म का मतलब लूटना नहीं होता, बल्कि सेवा करना होता है। जो चीज एक जगह नहीं मिलती है उसको दूसरी जगह से लाकर लोगों को देना और उसमें अपनी जो मेहनत लगी हो उसको जोड़ कर ठीक भाव से बेचना। इसका अर्थ है व्यापार।

मालिक को जाग जाना चाहिये

वास्तव में किसान मालिक है और व्यापारी सेवक है। तो सेवक कभी स्वामी से बढ़कर नहीं होता। जब हिंदुस्तान में मालिक गरीब है तो सेवक भी गरीब ही होना चाहिये। लेकिन बात उलटी हो गई है। मालिक गरीब बन गया है और सेवक श्रीमान बन गया है। और वह श्रीमान कैसे बना? मालिक को लूट कर। आज अगर उन सेवकों को कोई उनका धर्म सिखादे तो वे नहीं सीखेंगे। इसलिये अब मालिक को ही जाग जाना चाहिये। मालिक के जागने का मतलब यह है कि वह अपना आधार बाजार पर न रखे। मेरा तो विश्वास है कि अगर गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गाँव में बना लेंगे तो हर गाँव बादशाह बन सकता है। यह किसान क्या खरीदने के लिये आता है? उसको भाजी चाहिये तो क्या वह अपने खेत में भाजी पैदा नहीं कर सकता? आंगन में भी भाजी बन सकती है। कोई कपड़ा खरीदने आते हैं। गाँव में कपड़ा क्यों नहीं बन सकता है? अगर कपड़ा नहीं बन सकता तो कल आप रोटी भी बाजार से ही खरीदने लगेंगे। अगर इस तरह बनी बनाई चीजें खरीदते रहोगे तो लूट में से आपको कौन बचायेगा?

भगवान की व्यवस्था से सबक सीखो

हमें गांधीजी ने चरखा चलाने को कहा, और यही कहते कहते वह बूढ़ा मर गया। उनका वह संदेश अब भी सुनने लायक है। लोग कहते हैं अब तो स्वराज्य हो गया अब कातने की क्या जरूरत है? सरकार का काम है कि वह कपड़ा हमें दे। मैं कहता

हूं कि आप कल कहेंगे स्वराज्य आया है तो अब हम हल नहीं चलायेंगे, सरकार को हमें अनाज देना चाहिये। लेकिन स्वराज्य का यह मतलब नहीं है कि हम सारे काम छोड़ दें। दिल्ली के लोग बड़े हैं और बुद्धिमान हैं इसमें शक नहीं है। लेकिन उनसे भी परमेश्वर अधिक बड़ा और बुद्धिमान है। वह किस तरह हमारा पालन करता है देखो। उसने हमको हाथ दिये, पांव दिये, नाक दिया, कान दिये, और बुद्धि दी। और कहा कि अपने हाथों से काम करो, तुम्हारा पेट भरेगा। उसने थोड़ी थोड़ी बुद्धि हरेक को दी। अगर वैसा वह नहीं करता और बुद्धि का सारा खजाना वैकुंठ में ही रखता तो हमारा पालन वह कैसे कर सकता था? उस दशा में भगवान को चैन से नींद भी नहीं आती। लेकिन भगवान तो कहते हैं कि शेषशायी है और योगनिद्रा में सो रहा है। वह इसलिये सो सकता है कि उसने सब को अकल दी और काम करने की जिम्मेवारी का ढंग बताया। हम हाथों से काम करते हैं फिर भी अगर काम नहीं बनता है तो परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं, और वह हमें मदद देता है। हम अगर हाथों से काम नहीं करते हैं तो भगवान भी मदद नहीं करता इसी तरह हम अगर हाथों से काम नहीं करेंगे तो दिल्ली की सरकार भी हमको कुछ मदद नहीं दे सकेगी।

सरकार खास प्रसंग के लिये है

आप कहते हैं कि अब स्वराज्य आ गया है तो हमें कुछ कर्तव्य ही बाकी नहीं है। सब सरकार करेगी। हरेक काम के लिये अगर हम सरकार पर अवलंबित रहेंगे तो वह स्वराज्य होगा या

गुलामी। अपने गाँव में हम शांति नहीं रखेंगे और हर समय पुलिस को मदद के लिये बुलायेंगे तो वह होनेवाली बात नहीं है। विशेष मौके पर पुलिस की हम मदद मांगें तो सरकार दे सकती है। बाकी हमारी रोज की शांति, हमारा अनाज, हमारा कपड़ा, हमारी सफाई, हमारा शिक्षण, सारा गाँव में ही करना चाहिये।

लोग कहते हैं कि सरकार हर गांव में स्कूल खोले। लेकिन सरकार के पास उतना पैसा नहीं है। अधिक कर देने के लिये आप तैयार नहीं हैं। मैं कहता हूं कि आप आपस आपस में क्यों नहीं सिखाते? जो थोड़ा बहुत पढ़ा हुआ है वह अगर रोज एक घंटा दूसरे को पढ़ायेगा तो सारा गाँव शिक्षित हो सकता है। मान लीजिये कि हजार लोक-संख्या के गांव में दस लोग पढ़े हुए हैं। वे अगर हर साल दस लोगों को पढ़ा देंगे तो एक साल में सौ लोग पढ़े-लिखे बन जायेंगे। और इस तरह दस साल में सारा गाँव पढ़ा-लिखा बन जायगा, इतनी यह आसान बात है। यही बात दूसरे कामों के बारे में भी है।

उद्धरेत् आत्मनात्मानम्

हमारे सब काम हमें खुद करने चाहिये। भगवान ने गीता में कहा है, "उद्धरेदात्मनात्मानं" खुद का उद्धार खुद को ही करना चाहिये। दूसरों पर भरोसा रख कर मत बैठो। गाँव का राज्य गाँव वालों को स्थापित करना है। जो स्वराज्य दिल्ली में या आदिलाबाद में है वह आप को काम नहीं देगा। आप को वही स्वराज्य काम देगा जो आप के गांव में बनेगा। यहीं देखो न। बाहर से मनुष्य

के शरीर को वैद्य तब तक ही मदद दे सकता है जब तक शरीर में ताकत बची हुई होती है। अगर शरीर की ताकत खतम हो जाती है तो वैद्य कुछ नहीं कर सकता। इसलिये हमारा काम यह है कि शरीर का आरोग्य हम अच्छा रखें। उसके लिये हमें गांधीजी ने बताया है कि कुदरती इलाज पर आधार रखो। सूर्यप्रकाश, पानी, मिट्टी, आदि से रोग अच्छे करना सीख लेना चाहिये। आज कल तो लोग कहते हैं हर गाँव में एक दवाखाना हो। अभी तक वैसा नहीं हुआ है यह परमेश्वर की कृपा है। अगर ये लोग हर गाँव में दवाखाना खोल सकें तो गाँव का पैसा दवाखाने के निमित्त से बाहर जायगा और रोग दसगुना बढ़ेंगे....जरा कहीं कुछ हुआ तो हम दवाखाने में दौड़ेंगे। और यह समझ लो कि एक दफा वैद्य अगर घर में आता है तो फिर वह घर नहीं छोड़ता। कुछ लोग कहते हैं फलाना डॉक्टर हमारा फॅमिली डॉक्टर है। याने घर में जैसे माता-पिता होते हैं वैसे वह डॉक्टर भी घर का ही एक हिस्सा बन गया। इस तरह हर बात में अगर हम गुलाम बनते जायेंगे तो फिर स्वराज्य काहे का? सरकार का काम आप को बाहर से कपड़ा ला देने का नहीं है। वह आप को कातना बुनना आदि सिखा देगी। वैसे तो सरकार आप की खिदमत करने के लिये ही है। आप जैसा चाहेंगे वैसा वह करेगी। लेकिन आप को उसके लिये पैसा खर्च करने की तैयारी रखनी होगी। आप कहेंगे हम खेती नहीं करेंगे हमें बाहरसे गल्ला दो तो सरकार अमेरिका से गल्ला ला देगी। उसके लिये आप को पैसा देना पड़ेगा। सरकार तो सेवक है। सेवक

से कैसी सेवा लेनी चाहिये यह मैं आप को समझा रहा हूं। आप उसको कहें कि हमें तालीम दो, हम स्वावलबी बनना चाहते हैं।

भगवान झूठे पर प्रसन्न नहीं होता

आप का बाजार देख कर मुझे जो बातें सूझी वह मैंने आप के सामने रखी। जब तक हिंदुस्तान के बाजारों में झूठ चलता है तब तक हिंदुस्तान सुखी नहीं होगा। हम परमेश्वर का भजन करते हैं। लेकिन परमेश्वर झूठे पर कभी प्रसन्न नहीं होता। एक दफा दुर्योधन गांधारी के पास आशीर्वाद मांगने गया था। युद्ध का अवसर था। दुर्योधन ने गांधारी से कहा कि मुझे विजय मिले ऐसा आशीर्वाद दो। गांधारी तो दुर्योधन की माता थी और उसका दुर्योधन पर बहुत प्यार था। लेकिन उसने अपने पुत्र से कहा, "जहां धर्म होगा वहीं विजय होगी यह मेरा आशीर्वाद है।" परमेश्वर का हमारे ऊपर बहुत प्यार है। वह हमें कहता है कि सचाई से बरतो तो तुम्हें मेरा आशीर्वाद है। अगर हम झूठे होंगे तो परमेश्वर हमें उसके लिये सजा देगा। उसमें भी उसकी दया ही होती है। परमेश्वर की दया अजीब होती है। पापी को शुद्ध करने के लिये वह उसको सजा देता है तो उसमें उसकी दया ही होती है। तो अगर हम परमेश्वर का आशीर्वाद चाहते हैं और जीवन सुखी हो ऐसी इच्छा रखते हैं तो सत्य को नहीं छोड़ना चाहिये।

इच्छोडा (जि० आदिलाबाद)
१९-३-५१

तेरहवाँ दिन—

: १७ :

देहात के काम

आप सावधान रहें

आप का यह गाँव बिलकुल ही छोटा है। लेकिन इस गाँव में मैंने जो काम देखा है उससे मुझे बहुत ही आनंद हुआ है। क्यों आनंद हुआ यह आप लोगों को नहीं मालूम हो सकता। बात ऐसी है कि आप के गाँव में मैंने बीस पचीस चरखे चलते हुए देखे। इस तरह चरखों का काम मैंने अपनी इस यात्रा में अभी तक कहीं नहीं देखा। और यह दृश्य देख कर मेरे हृदय को बड़ा संतोष हुआ। लेकिन आप लोगों को मैं जाग्रत कर देना चाहता हूं। यहां अभी तक बाहर के व्यापारियों का ज्यादा प्रवेश नहीं हुआ है। लेकिन आगे चल कर स्थिति ऐसी ही नहीं रहेगी। बाहर के व्यापारी यहां भी आयेंगे। मुझे आज कल व्यापारियों का सब से अधिक डर लगता है। वास्तव में व्यापारी तो होने चाहिये ग्रामों के सेवक। लेकिन इन दिनों ऐसा हुआ है कि व्यापारियों में दयाधर्म नहीं जैसा रह गया है। इसलिये वे जब कहीं जाते हैं तो गांवों की सेवा के बजाय अपने स्वार्थ को ही देखते हैं। आज तामीरातवाले एक भाई मुझसे मिलने आये थे। बातचीत में उन्होंने बताया कि यह जिला जो अभी बहुत पिछड़ा हुआ है पैनगंगा पर

पुल बनने के बाद आगे बढ़ जायगा। क्योंकि फिर बरार के साथ बहुत व्यापार चलेगा। लेकिन फिर यह जिला आगे बढ़ेगा इसका मतलब इतना ही है कि यहां व्यापारियों का जमघट बन जायगा। मतलब उसका इतना ही है कि फिर आपके गाँव में जो अच्छा दृश्य हमने देखा वह देखने को नहीं मिलेगा। बाहर के व्यापारी आपके गाँव में आयेंगे। कपड़ों के अच्छे अच्छे नमूने आपको बतायेंगे, आप लोभ में पड़कर उनसे कपड़ा खरीदने लग जायेंगे और गुलाम बन जायेंगे। आज भी मैं देखता हूं कि आपके गाँव में सूत कतता है। कुछ लोग हाथ का कपड़ा पहनते हैं; लेकिन मिल का कपड़ा भी बहुत चलता है। लेकिन जब वे व्यापारी आयेंगे तब सारा का सारा कपड़ा बाहर से आने लग जायगा। इसलिये मैं आज ही आपको सावधान करना चाहता हूं कि आप शपथ लीजिये कि बाहर का कपड़ा नहीं लेंगे। अगर आप ऐसा नहीं करते तो आप के देखते देखते सारा गाँव दरिद्र हो जायगा। आज मैं आपके गाँव में घूम आया। सारे घर देख आया। घर बहुत तो थे नहीं इसलिये समय भी ज्यादा नहीं लगा। छोटासा गाँव है। आज आप लोग संतोष से रहते हैं। लेकिन अगर आप आलस में पड़े और बाहर की चीजें खरीदने लगे तो आज का यह संतोष नहीं रहेगा।

खादी का व्रत

एक घर में, जो कुछ पड़ा था, लोगों ने बैठने के लिये कहा। मैं वहां बैठा। उन्होंने मेरा स्वागत किया। लेकिन उस घर में मैंने

देखा कि उस घर की लक्ष्मी सारे कपड़े मिल के पहने हुय थी । मैने उन्हें प्रेम से समझाया कि इस घर में मैं आया हूं तो अब यहा बाहर का कपड़ा नहीं आना चाहिये। उन्होंने मेरी बात को मान लिया। अब मैं नहीं जानता कि वे कहा तक अपना वचन पालन करेंगे। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि उन्होंन जो वचन दिया है उसका पालन करने की शक्ति वह उन्हें दे ।

हिंदुस्तान की पहले की स्थिति

मैं अभी हैद्राबाद में होनेवाले सर्वोदय समेलन के लिये जा रहा हूं। सर्वोदय का मतलब है सब की उन्नति। सर्वोदय में यह बात नहीं आती कि किसी एक का भला हो, दूसरे का न हो। इसलिये सर्वोदय का चिंतन करनेवाले मुझ जैसों के सामने यह बड़ी समस्या है कि शहरों के साथ देहातों का भला कैसे होगा ? हम चाहते हैं कि भला शहरों का भी हो और गाँवों का भी। एक जमाने में हिंदुस्तान के सारे गाँव बहुत सुखी थे। परदेश से आनेवाले लोग उसकी गवाह देते थे। बीच में जब अंग्रेज यहा आये तो उन्होंने भी देखा कि यहां हर गाँव में कपड़ा बनता है और दूसरे भी बहुत से उद्योग चलते हैं। तो उन्होंने लिखा है कि गाँव गाँव में दूध बहुत मिलता है। लेकिन आज हम देखते हैं कि लोगों को मुश्किल से दूध मिलता है। दूध नहीं, तरकारी नहीं, कपड़ा नहीं, और आज तो गल्ला भी बाहर से आता है। यह हालत दो सौ साल के अंदर हुई है।

स्वराज्य का कार्यक्रम

अब स्वराज्य आया है। हम चाहते हैं कि हमारे गाव फिर से सुखी हों। लेकिन स्वराज्य आने पर भी अगर हम लोग देहात का रक्षण नहीं कर पायेंगे, देहात के उद्योग कायम नहीं रख सकेंगे तो हमारे गांव सुखी नहीं हो सकेंगे। स्वराज्य का अर्थ ही यह है कि आप लोगों को अपने गांव का कपड़ा पहनना चाहिये। अपने ही गांव की चीजें खरीदनी चाहिये। बाहर का पक्का माल आप को नहीं खरीदना चाहिये, बल्कि अपने गाँव में खुद कच्चे से पक्का माल बनाना चाहिये। आप के गांव में पक्का माल बनेगा तो शहरवाले खरीदेंगे और आप को लाभ होगा। लेकिन अगर आप कच्चा माल पैदा करके पक्का बाहर से खरीदेंगे तो आप को नुकसान होगा। अगर अपने ही गाँव में कच्चे माल से पक्का बनाते हैं तो मजदूरी आप को मिलती है। पक्का नहीं बनाते तो मजदूरी बाहर जाती है। एक जमाना था जब हिंदुस्तान-वाले अपने लिये तो कपड़ा बनाते ही थे लेकिन बाहर भी भेजते थे। उस जमाने मे लोगों को चरखा कातने के लिये समय मिलता था और आज नहीं मिलेगा ऐसी बात तो नहीं है। आज लोगों की संख्या बढ़ गई है, जमीन कम हुई है। इसलिये समय तो खूब मिलता है। अभी एक जगह एक गांव का सर्वे किया गया तो मालूम हुआ कि वहां के लोगों को साल भर में छः माह काम नहीं मिलता है। मैं देखता हूं कि आप के गांव में बगीचे भी नहीं हैं। याने आप के यहां की खेती बारिश के पानी पर ही होती है।

इसलिये वह काम अधिक नहीं रहता। समय काफी बचता है। उसका क्या किया जाय? अगर कोई व्यक्ति ऐसा हो जो आप के गांव की सेवा करे तो आप के गांव की उन्नति होगी। वह व्यक्ति आपके गांव का ही होना चाहिये। काँग्रेसवालों का काम है कि ऐसे गांव की सेवा करें। मुझे तो ऐसे गांव में रहने की इच्छा हो जाती है। यहां रहा तो पहले मैं कातनेवालों को धुनना सिखाऊंगा। आज तो कातनेवाले अपनी पूनी नहीं बनाते। दूसरे लोग उनके लिये पूनी बनाते रहे हैं। अपने घर में कपास बने और दूसरा मनुष्य उसकी पूनी बनावे और फिर मैं कातूं ऐसा क्यों होना चाहिये? अगर हम अपने ही घर में पूनी बनाते हैं तो पूनी अच्छी बनती है और सूत भी अच्छा कतता है। दिल्ली में हमने यह प्रयोग करके देखा। पंजाब की निर्वासित स्त्रियों को कातने के साथ हमने उन्हें पूनी बनाना भी सिखा दिया। परिणाम यह हुआ कि जो स्त्रियां पहले आठ दस नंबर तक कातती थीं वे सोलह बीस नंबर तक सूत कातने लगीं। याने पहले बिलकुल मोटा सूत कातती थीं अब महीन कातने लगी हैं। बारीक सूत से धोतियां और साड़ियां बन सकती हैं। आप देख रहे है कि मदालसा यहां बैठी पूनी बना रही है। पांच पांच छः छः साल के बच्चे भी ऐसी पूनी बना लेते हैं। इस तरह अगर घर में ही पूनी बनने लग जायगी तो सूत अच्छा कतेगा।

फिर आप के यहां ये पहाड़ भी हैं। अगर मैं यहां रहा तो पहाड़ से पत्थर ला ला कर उन पत्थरों से मकान बना लूंगा। इस

तरह अपने परिश्रम से पक्के मकान बन जायेंगे। फिर सफाई का काम शुरू कर दूंगा ताकि गांव में कोई बीमारी न होने पावे। आप लोग बाहर खुले में पाखाना जाते हैं। लेकिन उस पर मिट्टी नहीं डाली जाती। खाद की बरबादी होती है। हमारा हिसाब है कि फी आदमी मैले की कीमत चार रुपया होती है। मतलब यह कि पांचसौ जनसंख्या के आप के गांव में दो हजार रुपयों की आमदनी बढ़ सकती है। इस तरह गांव गांव उत्पादन भी बढ़ेगा और स्वच्छता भी बढ़ेगी। अब यह सारा काम अगर यहां कोई मनुष्य रहेगा तो हो सकेगा। लेकिन बाहर से मनुष्य कहां से लावें? इसलिये यहीं पर कोई कार्यकर्ता मिलना चाहिये।

एक बात और। आप के गांव में प्रेम-भाव बढ़ना चाहिये। जैसा एक परिवार में प्रेम होता है वैसा सारे गांव में होना चाहिये। सारा गांव एक परिवार ही हो जाना चाहिये।

तो आप लोग नित्य गांव में उद्योग बढ़ाइये और प्रेम-भाव बनाये रखिये, यही मुझे आप से कहना था।

निरडगौंडी, (जि० आदिलाबाद)
२०-३-५१

चौदहवाँ दिन—

: १८ :

ग्राम राज्य

गांधीजी का ही संदेश सुनाता हूं

मुझे गांधीजी का आदमी समझ कर आप सब स्त्रियां अपने अपने चरखे लेकर इस सभा में आयी हुई हैं। और आज मैं आपको जो सुनानेवाला हूं वह गांधीजी का ही संदेश है। लोग कहते हैं कि गांधीजी ने जो कहा उससे कोई नई बात यह मनुष्य नहीं कहता है। यह बात सही भी है। क्योंकि गांधीजी के पास मैंने जो सीखा उसे नहीं भूल सकता। अगर गांधीजी का शिक्षण मैं भूल जाऊंगा तो पशु बनूंगा।

सुदर्शन चक्र धारी भगवान के दर्शन

आप लोगों को मैं नारायण समझता हूं। और जब मैंने देखा कि सौ से अधिक स्त्रियां यहां चरखे चला रही हैं तो उस सुदर्शन चक्रधारी भगवान के ही मैंने आज दर्शन किये। इस तरह आपके दर्शन का लाभ लेने के लिये मैं पैदल निकल पड़ा हूं। आज सुबह पांच बजे हम निकले और चौदह मील की मुसाफिरी की। एकदम से इतना चलने से हम लोगों को कुछ तो थकान जरूर लगी। लेकिन जो दृश्य यहां आपके कातने का मैंने देखा उससे वह सारी थकान

उड़ गई। आज की सभा जो भी देखते वे अगर मनमें शंका रखते हैं कि चरखा कैसे चलेगा इन दिनों, तो यह दृश्य देखकर वे समझ जायेंगे। लेकिन आज तो आप लोगों ने बता दिया कि आप खेती का काम भी कर सकती हैं और चरखा चला कर अपना कपड़ा भी बना लेती हैं।

लक्ष्मी की कथा

अब मुझे यही कहना है कि आप यह काम निष्ठा से अधिक बढ़ाइये। अपने गाँव में हाथ का बना कपड़ा ही हमें पहनना चाहिये। बाहर का कपड़ा यहां नहीं आना चाहिये। आप कातती हैं और उसका कपड़ा भी पहनती हैं यह अच्छा है। लेकिन खद्दर ही पहनेंगे दूसरा कपड़ा नहीं पहनेंगे ऐसा व्रत आपने नहीं लिया है। ऐसा व्रत न लेने में क्या खतरा है यह मैं आपको समझाऊंगा। खतरा यह है कि मिल का कपड़ा यहां आता रहेगा और आपको उसका मोह होगा। फिर आप खुद उस मिल के कपड़े को शायद नहीं पहनेंगी। लेकिन अपनी लड़कियों को वह पहनायेंगी और कहेंगी कि कैसी सुंदर दीखती है मेरी लड़की मिल के कपड़े में। लेकिन मैं आपको कहता हूं कि मिल के कपड़े में आपके लड़के लड़कियां खूबसूरत नहीं बल्कि बदसूरत दीखेंगी। क्योंकि मिल का कपड़ा अगर घर में आता है तो घर की लक्ष्मी बाहर चली जाती है। और लक्ष्मी अगर बाहर गई तो फिर घर की क्या शोभा रही? लक्ष्मी की कथा है कि वह शामके समय गाँव में घूमती है। जिस घरमें देखती है कि सायंकाल के समय भी दीपक जल रहा है और

काम हो रहा है उस घर में वह प्रवेश करती है। उसका मतलब यह है कि जहां दिन में भी काम चलता है और रातको सोते तक निरंतर काम और उद्योग चलता है उसी घर पर लक्ष्मी की कृपा होती है। चरखे से इस तरह घर घर काम हो सकता है।

कातनेवालों की जाति नहीं होती

मैं देख रहा हूं कि कुछ स्त्रियां कात रही हैं लेकिन कुछ नहीं कातती हैं। एक बाई से मैंने पूछा कि वह क्यों नहीं कातती? मिल का कपड़ा क्यों पहनती है? उसने उत्तर दिया कि हमारी जाति में कातना निषिद्ध है। यह खयाल गलत है। जो भी कपड़ा पहनता है उसको कातना चाहिये। जैसे बढ़ई की या लुहार की जाति होती है वैसे कातनेवालों की कोई जाति नहीं होती। हरेक जाति को कातना चाहिये। हर घर में रसोई बनती है उसमें जाति का कोई प्रश्न नहीं होता। वैसे हर घरमें कातने का काम होना चाहिये। मैं यह भी देखता हूं कि स्त्रियां तो कातती हैं लेकिन पुरुष नहीं कातते हैं। शायद उनको लगता है कि वे कातेंगे तो उनका धर्म बिगड़ेगा। स्त्रियां कपड़ा पहनती हैं तो पुरुष नंगे थोड़े ही रहते हैं? इसलिये पुरुषों को कातना चाहिये स्त्रियों को कातना चाहिये बच्चों को कातना चाहिये और बूढ़ों को भी कातना चाहिये। गांधीजी रोज नियम से कातते थे। जिस दिन उनका खून हुआ उस दिन भी वे कात कर मरे हैं। इस तरह उन्होंने सारी जिंदगीभर हमारे सामने एक आदर्श दिखा दिया कि हमको रोज कुछ न कुछ सूत कातना चाहिये।

बेकार रहेंगे तो शैतान मन में घर करेगा

लोग पूछते हैं कि अब तो स्वराज्य आया है अब कातने की क्या जरूरत है ? तो आप से यह भी पूछ सकते हैं कि अब स्वराज्य आया है तो रसोई करने की क्या जरूरत है ? स्वराज्य के पहले घर में रसोई करने की जरूरत थी, स्वराज्य के बाद भी जरूरत है। मिल का पराक्रम आप को सुनाता हूं। लड़ाई के पहले मिलें फी आदमी १७ गज कपड़ा देती थीं। और अब १२ गज तैयार करती हैं। इस पर से आप के खयाल में आयेगा कि मिल पर भरोसा रखना कितना घातक है। मैं तो कहना चाहता हूं कि मिलें अगर ५० गज भी कपड़ा तैयार करें तो भी उसको खरीदने में देहातवालों का भला नहीं है। कोई कहते हैं कि मिल का कपड़ा सस्ता होता है। मैं कहता हूं कि वह मुफ्त में भी मिले तो भी हम वह कपड़ा नहीं लेंगे इस तरह का निश्चय हमें करना चाहिये। ऐसा निश्चय अगर देहातवाले नहीं करेंगे तो उनके सारे धंधे खतम हो जाएंगे। और आप के धंधे अगर नष्ट हो गये तो फिर आप को मुफ्त कौन खिलायेगा ? इसलिये मैंने लक्ष्मी का जो चरित्र कहा था वह याद रखिये। उद्योग चले गये तो लक्ष्मी चली जायगी, हम आलसी बनेंगे और फिर आपस आपस में झगड़े शुरू हो जायेंगे। फिर लोगों में तरह तरह तरह के व्यसन शुरू हो जायेंगे। नशाखोरी चलेगी। लोग शराब और बीड़ी पीने लगते हैं। बीड़ी पीनेवाले तो यहां तक आगे बढ़ गए हैं कि जहां प्रार्थना चलती है वहां भी वे बीड़ी पीते हैं। याने साधारण सभ्यता भी वे नहीं जानते हैं कि

जहां लोग इकट्ठे होते है वहां बीड़ी नहीं पीनी चाहिये। जहां उद्योग नहीं होते हैं और मनुष्य खाली रहता है वहां ये सारे ढंग सूझते हैं। फिर झगड़े बढ़ते हैं और उसके साथ व्यभिचार आदि भी चलते हैं। इसीलिए हमारे पुरखाओं ने हमें सिखाया है कि " क्षणार्धमपि व्यर्थं न नेयम् " एक क्षण भी खाली नहीं रहना चाहिये। इस तरह एक एक क्षण का हम हिसाब नहीं रखेंगे तो फिर हमारे मन में शैतान काम करने लगता है और यह विचार शुरू होता है कि दूसरे के जेब से पैसे कैसे लूटे जांय। व्यापार में सर्वत्र झूठ शुरू होता है। चोरियां कैसे की जायं इसकी युक्तियां खोजी जाती हैं। यह सब हिंदुस्तान में शुरू हो रहा है इसलिये मैं आप लोगों को सावधान कर रहा हूं।

ग्रामराज्य और रामराज्य की व्याख्या

जो लोग अपने घर में सूत कातेंगे उनका अपना कपड़ा घर का होगा। लेकिन उनके घर में अगर ज्यादा कपड़ा तैयार होता है तो गांव के दूसरे लोग उसको खरीद सकते हैं। गांव में कुछ लोग जरूर ऐसे होंगे कि जिनके लिए खुद सूत कातना संभव नहीं होगा। तो वे अपने गांव में कते सूत का कपड़ा खरीदेंगे। यह जो मैंने कपड़े के लिये कहा वही दूसरे उद्योगों को भी लागू है। तेल गांव में बनाना चाहिये। गुड़ गांव में बनाना चाहिये, आटा घर घर पीसा जाना चाहिये। इस तरह आप देहात की स्त्रियां और पुरुष काम करेंगे तो यह राज्य आपका होगा। इसको ग्रामराज्य कहते हैं। ग्राम में जब स्वावलंबन होगा, गांव अपनी शक्ति पर खड़ा होगा तब

वह ग्रामराज्य होगा। और रामराज्य तब होगा जब आपस आपस में कोई झगड़ा नहीं रहेगा, सब एक दूसरे पर प्यार करेंगे, सब एक दूसरे का साथ देंगे और सहकार करेंगे। अपने देश के लिये स्वराज्य तो आया है। लेकिन ग्रामराज्य स्थापित करना बाकी है। उसके लिये अब हमें झगड़ना है, मेहनत करनी है। वह बड़ी भारी लड़ाई होगी।

ग्रामराज्य के लिए लड़ाई लड़नी है

स्वराज्य के लिए तो लड़ाई हो गई। लेकिन उससे भी कठिन लड़ाई आगे ग्रामराज्य के लिये होनेवाली है। आज तक हमने जो लड़ाई लड़ी वह अहिंसात्मक थी। वैसे यह लड़ाई भी अहिंसात्मक ही होगी। यह लड़ाई टलनेवाली नहीं है। उस लड़ाई के सिपाही आप सारी बहनें और भाई होंगे। उधर शहरवाले लोग व्यापार में लगे हुए हैं, ग्रामों की कोई चिंता नहीं करते हैं। उनके साथ हमारा कोई भेदभाव तो नहीं है, लेकिन झगड़ा जरूर है। उस युद्ध में हमारे औजार होंगे चरखा और हल। हमारे युद्ध के लिये हमें बम की जरूरत नहीं है, तोपों की भी जरूरत नहीं है। हमें जरूरत है काम करने के औजारों की।

गोपाल पेठ, (जि० आदिलाबाद)
२१-३-५१

पन्द्रहवाँ दिन—

: १९ :

सर्वोदय की महिमा

स्वराज्य शब्द की महिमा

हम सर्वोदय के यात्री अपनी पैदल मुसाफिरी में आप के गांव में आ पहुंचे हैं। सर्वोदय एक महान शब्द है और उसका अर्थ भी महान है। समाज के सामने जब कोई महान शब्द होता है तो उससे समाज को शक्ति मिलती है। शब्द की महिमा अगाध होती है। जिस समाज के सामने कोई बड़ा शब्द नहीं होता है वह समाज शक्ति-हीन और श्रद्धा-हीन बनता है। शब्द की शक्ति का यह अनुभव हर जमात को और हर देश को आया है। हमारे देश में चालीस साल तक स्वराज्य शब्द चला और उसका पराक्रम तथा महिमा सब ने देख ली। १९०७ में स्वराज्य शब्द दादाभाई नौरोजी ने हमें दिया और १९४७ में उसका दर्शन हमें मिला। उसका चमत्कार आखिर तो हैद्राबादवालों ने भी देख लिया। हैद्राबादवाले बहुत दिनों से सोच रहे थे कि बाकी के सारे देश में स्वराज्य का उदय हुआ, हमारा क्या हाल होगा? उनको भी अनुभव हुआ कि जो शक्ति देशभर में पैदा हुई थी उसका स्पर्श यहां भी होना था। यह संस्थान उससे अलग नहीं रह सकता था।

स्वराज्य के बाद का शब्द

इस तरह स्वराज्य शब्द का कार्य हिंदुस्तान में हो गया और उसके साथ साथ महात्मा गांधीजी का अस्त हुआ। उनके जाने के पीछे सारा देश हक्का-बक्का हो गया और कुछ रोज तो सूझता ही नहीं था कि इस देश का क्या होनेवाला है? लेकिन परमेश्वर की कृपा से सब लोग स्थिर हो गये और अब ऐसा समय आ गया है कि देश के प्रगति का अगला कदम रखा जाय। अगला कदम तो तब रखा जा सकता है जब कि जहां जाना है उसकी दिशा तय हुई हो। तो गांधीजी के जाने के बाद चंद लोग इकट्ठा हुए और उन्होंने अपने देश को सर्वोदय शब्द दे दिया। यह शब्द भी गांधीजी का ही रचा हुआ था। और उसकी जड़ हिंदुस्तान की संस्कृति में प्राचीन काल से जमी हुई है। जब स्वराज्य नहीं हुआ था तब तो वही एक शब्द हमारे सामने था और परदेशियों का यहां का राज्य हटाने में हीं हम सब लगे हुए थे। हमारे खेत में तरह तरह के निकम्मे झाड़ उगे हुए थे, उनको काटने का काम हुआ उसीका नाम स्वराज्य था। अब स्वराज्य-प्राप्ति के बाद उस खेत में परिश्रम करना है और बोना है। लेकिन मैं देख रहा हूं कि लोगों का यही खयाल है कि अब तो काटनेका समय है। यह बिलकुल गलत खयाल है। तो वह जो खेती में परिश्रम करके फसल लाना है उसी का नाम है सर्वोदय। सर्वोदय शब्द अगर हमारे सामने न होता तो हम सब ध्येय-शून्य बन जाते।

स्वराज्य के बाद का नैतिक कार्य

सर्वोदय शब्द ने हमारे सामने स्पष्ट उद्देश्य रख दिया। वह उद्देश्य ऐसा है जिसमें सब लोगों का समावेश हो सकता है। मेरे अभिप्राय में स्वराज्यप्राप्ति के बाद हिंदुस्तान में जो तरह तरह के राजकीय पक्ष पैदा हुए हैं उनकी कोई जरूरत नहीं थी। स्वराज्य के बाद हिंदुस्तान में जो असंख्य समस्यायें पैदा हुई वे बहुत सारी अनैतिक थीं। याने जनता की नीति गिरी हुई थी उसका हमें तरह तरह से अनुभव आया। और आज भी हम यही देखते हैं कि जहां जाओ वहाँ नीति-हीनता और शील-भ्रष्टता का दर्शन होता है। इसके लिये मैं जनता को दोष नहीं देता हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि सारी की सारी जनता नीति-भ्रष्ट नहीं हो सकती। लेकिन वैसा नीति-भ्रष्टता का दर्शन अगर सर्वत्र होता है तो यही समझना चाहिये कि उसका कारण परिस्थिति में मौजूद है। जिम्मेदारी चाहे परिस्थिति की हो चाहे जनता की हो लेकिन जो है उसको हमें दुरुस्त करना है। स्वराज्य प्राप्ति के बाद सब लोगों का शील कायम रखना, आपस आपस में प्रेम-भाव कायम रखना आदि बिलकुल बुनियादी काम करना जरूरी हो गया था और है। इस हालत में किसी भी तरह के राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका ही नहीं रहता है। जब समाज का नैतिक स्तर और आपस आपस का प्रेम-भाव बढ़ेगा तब राजकीय उद्देश्यों के लिये मौका आ जाता है। इसलिये जिन जिन लोगों से जब जब बात करने का मौका मिलता है तब उन्हें मैंने यही कहा है कि भाइयो,

यह राजकीय लेबल अब अपने सिर पर मत चिपकाओ। और केवल इन्सान बन जाओ।

आज का परदेशावलंबी स्वराज्य किस काम का

देखिये मैं तो पैदल घूम रहा हूं। बीच-बीच में छोटे-छोटे गाँवों में जाना होता है तो बीच में शहर देखने को मिलते हैं। तो मैं देखता हूं कि उधर गावों की परिस्थिति क्या है और इधर शहरों की परिस्थिति क्या है! देहात में एक तरह का दुःख है तो शहरों में दूसरी तरह का। देहात में देखता हूं कि लोगों को कपड़े पहनने के लिये नहीं हैं और शहर में देखता हूं कि लोग शराबी बन रहे हैं। वस्त्रों का न होना एक बड़ा भारी दुख है तो शराबी होना कोई सुख की बात नहीं है। तरह तरह के व्यसन शहरों में बढ़ रहे हैं। स्वराज्य के पहले स्वदेशी विदेशी का जो फरक हम करते थे वह भी अब भूल गये हैं। जो भी अच्छी चीज देखते हैं खरीद लेते हैं। स्वराज्य के बाद हमारे शहरों की अगर यह हालत हो जाय कि सारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भर जायं तो वह स्वराज्य किस काम का? और मैं आप को विश्वास दिलाता हूं कि आप परदेशी वस्तु खरीदते रहिये, आप के स्वराज्य पर कभी आक्रमण नहीं होगा। आपका स्वराज्य कायम रहेगा। क्योंकि दूसरे देशों को क्या फिक्र पड़ी है कि आप का देश कब्जे में रख कर सारा जिम्मा उठायें अगर उनका माल यहां खपता है? और इन दिनों किसी देश को अपने कब्जे में रखना कठिन काम हुआ है। इसलिये दुनिया के बड़े बड़े

देश यह नहीं सोचते कि दूसरे देशों पर अपनी राजकीय सत्ता कायम करें। अगर व्यापारी सत्ता हासिल है तो राजकीय सत्ता हासिल करने में कोई लाभ नहीं है। मतलब यह हुआ कि फिर हमारे स्वराज्य का कोई अर्थ ही नहीं रहेगा अगर हमारे बाजार परदेशी वस्तुओं से भरे रहे। यह है हमारे शहरों का हाल।

उधर देहातों का हाल यह है कि उन लोगों के पास कोई धंधे नहीं हैं। उनके जो छोटे छोटे धंधे थे वे शहरवालों ने छीन लिये। यहीं देखो, हम जहां बैठे हैं वह एक धान कूटने की मिल है। अगर धान कूटने का धंधा देहात में चला तो लोगों को काम मिलेगा, वह भी शहर में गया तो देहातवाले बेकार हो जायेंगे।

तो उधर परदेशी वस्तुओं से शहर के बाजार भर रहे हैं उनके विरोध में शहरियों का पराक्रम कुछ नहीं चलता है। उनका सारा पराक्रम देहात के धंधे डुबाने का है।

देहात के धंधे सुरक्षित रहें

होना यह चाहिये कि देहात के धंधों को देहात में रखना चाहिये और परदेश से जो माल आ रहा है उसके विरोध में शहरों में धंधे खड़े होने चाहिये। आज की हालत यह है कि परदेश के लोग हमारे शहरों को लूटते जा रहे हैं और शहरवाले हमारे देहातों को लूटते जा रहे हैं। अगर उससे उलटा बना याने परदेश के धंधों के विरोध में शहरवाले खड़े हो गये और देहात के धंधों को उन्होंने बचा लिया तो देहात और शहर दोनों का सहयोग होगा

और यह देश शक्तिशाली बनेगा। हम हमारे कुछ जंगलों को जैसे रिजर्व रखते हैं वैसे देहात के लिये कुछ धंधे रिजर्व रखने चाहिय। इस तरह देहात के धंधों को हमने सुरक्षित नहीं रखा तो देहात उजड़ जायेंगे और आखिर देहाती लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे। तो उधर परदेश के व्यापारी शहरों को लूटेंगे और इधर देहात के लोग शहरों पर टूट पड़ेंगे तो फिर शहरों की क्या हालत होगी आप ही सोचिये। तो स्वार्थबुद्धि से भी आप को देहात की रक्षा करनी चाहिये।

देहात उजड़ जाय तो शहर और देहात की लड़ाई अटल है

तो हम लोगोंकी अकल अब इस बात में लगनी चाहिये कि देहात और शहर दोनों का सहयोग कैसे हो और दोनों मिल कर परदेशी माल के विरोध में कैसे शक्ति पैदा करें? यह नहीं हो रहा है और मुझे देहातवालों को कहना पड़ता है कि भाई तुम्हारे और शहरियों के बीच लड़ाई होनेवाली है। मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता। लेकिन अगर शहरियों का रवैया नहीं बदला तो यह लड़ाई अटल है, यह मैं देख रहा हूं और वही मुझे कहना पड़ता है।

सर्वोदय का ध्येय

मैं उस लड़ाई को नहीं चाहता इसीलिये सर्वोदय के प्रचार के लिये आप को समझा रहा हूं। और मैं कहता हूं कि इस समय इस शब्द में जो शक्ति है वह आप चिंतन करेंगे तो आप को महसूस होगी। सर्वोदय शब्द हमें यह समझा रहा है कि देश में जगह

शक्तिसंचय हो जाना चाहिये। देश में एक घर भी अशक्त नहीं रहना चाहिये। अगर इस तरह हम नहीं सोचते हैं और वर्गों के झगड़ों की बात निकालते हैं या कोई खास लोगों के हित की ही बात सोचते हैं तो हिंदुस्तान सुख में नहीं रहेगा। सरकारी कानूनों में जो भी लूपहोल मिलते हैं उनका लाभ उठाने का व्यापारी सोचते हैं। इस तरह व्यापारी और सरकार दोनों के बीच अकल की लड़ाई चलेगी और इन दोनों की लड़ाई के बीच देहात के लोग मारे जायेंगे। जरूरी इस बात की है कि व्यापारियों की ताकत देहात के हित में लगे, सरकार की ताकत देहात के हित में लगे और शहरियों की भी ताकत देहात के हित में लगे। और देहाती लोग, शहर के लोग, व्यापारी और सरकार चारों मिलकर परदेशी वस्तुओं का और विचारों का जो आक्रमण हो रहा है उसके विरोध में खड़े हो जाँय।

सर्वोदय का लक्ष्य

तो स्वराज्य के बाद सर्वोदय का क्या काम है यह मैंने थोड़े में आपको समझाया। हमारे देश में चार शक्तियां काम कर रही हैं। एक है सरकार की, दूसरी है व्यापारियों की, तीसरी है शहरियों की और चौथी है देहातियों की। इन सब शक्तियों का योग साध्य करना सर्वोदय का काम है। अब आप ही सोचिये कि सर्वोदय में इतना अर्थ भरा है तो इसको छोड़ कर और किस शब्द की आपको जरूरत है? और किन राजकीय पक्षों की आपको आवश्यकता है? सर्वोदय कोई राजकीय पक्ष नहीं है।

लेकिन सारे राजकीय पक्षों को पेट में निगलने के लिये वह पैदा हुआ है। दूसरी भाषा में सबका हृदय एक बनाना, सबकी भावना एक बनाना, और सबकी शक्तियों का समवाय सिद्ध करना सर्वोदय का लक्ष्य है।

भाइयो, मैं आशा करता हूं कि यहां का हरेक जवान और प्रौढ़ इस शब्द से स्फूर्ति पावेगा और इसके लिये जीवन भर कोशिश करेगा। इस शब्द से जो स्फूर्ति मिलती है वह राम-नाम जैसी शक्ति है। और राम वही है जो सबके हृदय में रम रहा है। उसी का भजन अब हम सब मिल कर करेंगे।

निमल, (जि० आदिलाबाद)
२२-३-५१

सोलहवां दिन—

: २० :

सच्चा वर्णाश्रम धर्म

आज प्रार्थना सभा सदा की भांति साढ़े पांच बजे होनेवाली थी। लेकिन आप सब भाई बहनें दूर दूर गांव से यहां आ कर बैठे हैं इसलिये जल्दी ही शुरू कर देता हूं। ये स्त्रियां अपने बच्चों को घर छोड़ कर आई हैं। इसलिये मैं उन्हें जल्दी ही रवाना कर देना चाहता हूं।

ग्रामोद्योग का अर्थशास्त्र

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि आप सूत कातती हैं। लेकिन आपके चारों ओर घटोत्कची माया फैली है। सब तरफ मिलों का कपड़ा छाया हुआ है। आप के लिये इस देश की मिलों और परदेश की मिलों में कोई फरक नहीं है। आप को तो अपने सूत का ही कपड़ा पहनना चाहिये। मुझे इस बात का दुःख है कि आप तो सूत कातती हैं लेकिन यहां के लोग मिल का कपड़ा पहनते हैं। होना तो यह चाहिये कि इस गांव में बना हुआ कपड़ा ही यहां के लोग पहनें। अपने गांव वालों पर जो प्रेम नहीं करते वे प्रेम करना जानते ही नहीं। प्रेम का अर्थ ही यह है कि एक दूसरे की रक्षा करें। गांव में चमार है। वह जूता बनाता है तो उसका जूता हम नहीं खरीदेंगे और बाहर का खरीदेंगे तो

गांव का चमार मर जायगा। इस तरह हमारे चमार को हम रक्षण नहीं देते हैं तो उस पर हम प्रेम नहीं करते। इसी तरह तुम्हारे गांव के तेली का तेल तुम्हें खरीदना चाहिये। अपने गांव के बुनकर का कपड़ा पहनना चाहिये। लेकिन हम कहते हैं कि हमारे गांव के चमार का जूता महंगा है, तेली का तेल महंगा है, बुनकर का कपड़ा महंगा है। इस तरह अगर गांव के चमार का जूता, तेली का तेल, बुनकर का कपड़ा, गांव का गुड़ और गांव की चीजें हमें महंगी लगेंगी तो हम जी नहीं सकेंगे। हम महंगा महंगा कहते हैं, लेकिन वास्तव में वह महंगा नहीं है। गांव के तेली का तेल उसी गांव का चमार खरीदता है और चमार का जूता तेली खरीदता है तो इसका पैसा उसके घर में जाता है, उसका पैसा इसके घर में जाता है। हम अपने घर की लड़कियां दूसरों के घर देते हैं, उनकी लड़कियां हमारे घर लेते हैं। क्या यह सौदा महंगा पड़ता है? इसी तरह अगर तेली का पैसा चमार के घर और चमार का पैसा तेली के घर जाता है तो किसका नुकसान होता है? इस तरह जिसे आप महंगा कहते हैं वह महंगा नहीं है बल्कि उस पर ही हमारे गांव का जीवन चलता है। इस लिये आप लोगों से मेरी प्रार्थना है कि जो माल आप के गांव में बनता है वही खरीदिये। यह मत कहिये कि हमारा देश बड़ा है तो दिल्ली का माल क्यों न खरीदें। दिल्ली हमारे देश में तो है पर दिल्लीवालों का काम है कि वे दिल्ली की चीजें खरीदें, यहांवालों का काम है कि वे यहां की चीजें खरीदें। दिल्ली में जो बारिश होती है वह सुवर्णपुर में नहीं

आती। भगवान हर गांव में बूंद बूंद बारिश बरसाता है। उसी तरह घर घर में और गांव गांव में लक्ष्मी निर्माण करने की शक्ति चरखे में पड़ी है। चरखा धन थोड़ा देता है जैसे बारिश की बूंद भी छोटी होती है। लेकिन बारिश की बूंद छोटी होते हुए भी घर घर बरसती है वैसे ही चरखे का धन थोड़ा होने पर भी घर घर निर्माण होता है। यह जब सोचते हैं तो आप को मालूम हो जायगा कि अपने गांव की रक्षा कैसे हो सकती है।

हमारे यहां पहले से वर्ण-धर्म चला आया है। वर्ण-धर्म का अर्थ यह है कि अगर बाप चमार है तो लड़के को भी चमार का धंधा करना चाहिये। लेकिन अगर हम अपने गांव के चमार का माल नहीं खरीदेंगे और बाहर का खरीदेंगे वैसे ही अपने बुनकर का कपड़ा न खरीद कर बाहरवालों का कपड़ा खरीदेंगे तो चमार का लड़का चमड़े का काम करेगा कैसे? और बुनकर का लड़का बुनकर का काम आगे चलायेगा कैसे?

गांव का शिक्षण ब्राह्मण संभालें

इस गांव में ब्राम्हण भी रहते हैं। ब्राम्हण विद्वान होते हैं। और देहातों में अकसर नहीं रहते। मैं अभी छोटे छोटे देहातों से होता हुआ आया हूं। मैंने कहीं ब्राम्हणों के घर नहीं देखे। छोटा गांव होते हुए भी यहां ब्राम्हण हैं क्योंकि यह क्षेत्र का गांव है। लेकिन यहां ब्राह्मणों के होते हुए भी यहां के लोग शिक्षित नहीं हैं। यहां के लोग मुझे आज सबेरे कहते थे कि यहां एक मदरसा खोलने के लिये सरकार से प्रार्थना की जाय। सरकार हर गाँव में कहां तक

मदरसे खोल सकती है ? और पैसा भी कहां से ला सकेगी ? इस गांव में अगर ब्राह्मण रहते हैं तो यहां के बालकों को वे मुफ्त क्यों नहीं पढ़ाते हैं ? ब्राह्मण लोग रोज एक घंटा पढ़ायेंगे तो पाँच-सात साल में सारा गांव लिखना-पढ़ना सीख जायगा। मदरसा-खोलेंगे तो वहां बच्चों को रोज पांच छः-घंटे पढ़ना होगा। और इतना समय गरीबों के बच्चे निकाल नहीं सकेंगे। इसलिये मैंने ब्राह्मणों से कहा है कि वे सिर्फ एक घंटा पढ़ावें और बच्चे भी एक घंटा सीखें। कुछ लोग शाम को एक घंटा पढ़ायेंगे कुछ लोग सुबह एक घंटा पढ़ायेंगे। पढ़नेवाले बाकी के समय काम करेंगे और पढ़ाने वाले भी काम करेंगे। अगर इस तरह ब्राह्मण बिना शुल्क विद्यादान करेगा तो उसकी प्रतिष्ठा कायम रहेगी। लेकिन ब्राह्मण बन गये लोभी और फिर भी प्रतिष्ठा कायम रखना चाहते हैं। लोभ और प्रतिष्ठा दोनों साथ नहीं रहेंगे। इसलिये मैंने ब्राह्मणों से कहा है कि वे विद्यादान करें।

वर्णाश्रम धर्म कैसे टिकेगा ?

ये सारे ब्राह्मण वर्णाश्रमाभिमानी होते हैं। लेकिन उनके बदन पर मिल के ही कपड़े हैं। अब मैं उनसे पूछूंगा कि भाई आप अगर वर्णाश्रम का अभिमान रखते हैं तो गाँव के बुनकर का कपड़ा क्यों नहीं पहनते हैं ? अगर वे जूते पहनते हैं तो गाँव के चमार के बनाये हुये क्यों नहीं पहनते ? इस तरह वर्ण-धर्म की प्रतिष्ठा कायम रखना उनका काम है। मैं ब्राह्मणों से और सब से प्रार्थना करता हूं कि अपने गाँव के उद्योग कायम रखो और इस

तरह वर्ण-धर्म कायम रखने में मदद करो। ऐसा करोगे तो गोदावरी के तट का यह गाँव फिर से भाग्यशाली और सही माने में सुवर्णपुर बनेगा।

इस गाँव के बहुत से लोग बाहर गये हैं। उन्होंने बाहर अपनी पढ़ाई की है। लेकिन वे अपने इस गाँव की क्या सेवा कर रहे हैं? उनका का काम है कि अपने गाँव का जो ऋण उन पर है वह चुकावें और उसके लिये गाँव की सेवा में लग जायं।

सबसे समान व्यवहार करो

अंत में एक बात और। यह क्षेत्र है। क्षेत्र में ब्राह्मण ऊंचे माने जाते हैं और हरिजन नीच माने जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि मैं इस बारे में कुछ कहूं। लेकिन इस बारे में आप मुझसे मत पूछिये। इस गोदावरी नदी को ही पूछिये। क्या यह गोदावरी ब्राह्मण को पानी पिलाती है और हरिजन को नहीं पिलाती? तो जैसे गोदावरी सब के साथ समान व्यवहार करती है और यह सूर्य सब को समान भाव से प्रकाश देता है वैसे सबके साथ समान भाव से व्यवहार करना ही धर्म है। यह ऊंचा वह नीचा कहने वाले धर्म का आचरण नहीं करते। इसलिए इस क्षेत्र में किसी तरह का भेद-भाव होना ही नहीं चाहिये। दुनियां में दो ही जातियां हैं। एक सज्जनों की और दूसरी दुर्जनों की। भला बर्ताव करनेवाला चांडाल भी ब्राह्मण से बढ़ कर है, और बुरा बर्ताव करनेवाला ब्राम्हण भी चांडाल से बदतर है।

तो मेरे भाइयो, मुझे जो कहना था मैं कह चुका। मैं एक दफा आपके गाँव में आया। फिर कब आऊंगा कौन जाने? हम लोग सर्वोदय यात्रा के लिये निकले हैं। जैसे यह गोदावरी आप के गाँव से होकर गुजरती है वैसे हमारी यात्रा भी सहज ही यहां आ गई है। तो आप से मेरी प्रार्थना है कि इस क्षेत्र को सच्चे अर्थ में क्षेत्र बनाओ। यहां के हर मनुष्य को पढ़ना-लिखना आना चाहिये एक बात, और यहां जो चीजें बनती हैं उन्हीं को आप को खरीदना चाहिये यह दूसरी बात। एक ज्ञान की है और दूसरी प्रेम की। ये दो बातें आप ध्यान में रखियेगा। मेरा आप को प्रणाम।

सोन अर्थात् सुवर्णपुर, (जि० आदिलाबाद)
२३-३-५१

सतरहवाँ दिन—

: २१ :

गाँव गोकुल बने

मुझे बहुत आनंद होता है कि आप इतनी बहनें और भाई दूर दूर के गाँव से हम लोगों से मिलने के लिये आ गये हैं। अभी दो तीन साल के पहले आपका यह हैद्राबाद का राज्य बड़ा दुखी था। रजाकार लोगों का जुल्म चल रहा था और आप सब लोग भयभीत थे। कोई कुछ कर नहीं सकता था। लेकिन रजाकारों की सल्तनत खतम हुई और आप लोग अब आजादी से इकट्ठे हुए हैं। नहीं तो ऐसी सभाओं में कौन आ सकता था?

आज़ादी का मतलब

लेकिन आजादी का यह मतलब नहीं है कि आप बिना काम किये सुखी हो जायेंगे। हम लोग हाथ पर हाथ दिये बैठे रहेंगे तो हम आजाद हो गये हैं इसलिये मुफ्त खाने या पहनने को थोड़े ही मिलनेवाला है!

अपने ही सूतका कपड़ा पहनें

आज मैंने देखा यहां पर बहुत स्त्रियां कात रही थीं, लेकिन वह देख कर भी मुझे आनंद नहीं हुआ। क्योंकि कातनेवाली बहनों के बदन पर तो मिल का ही कपड़ा था। कातने से मजदूरी मिलती है। इसलिये वे कातती हैं। लेकिन हमारे सूत की कीमत

अगर हम नहीं करेंगे तो लोग क्यों करेंगे ? हमें हमारे सूतका ही कपड़ा पहनना चाहिये।

सरकार के सिपाही हैं

लोग मानते हैं कि हमको सरकार अनाज दे, कपड़ा दे। लेकिन क्या सरकार के पास अनाज का और कपड़े का खजाना है? हम सारे हमारी सरकार के सिपाही हैं। अगर हम सिपाही का काम नहीं करेंगे तो हमारी सरकार बेकार हो जायगी। हम काम करेंगे तभी सरकार मजबूत बनेगी।

बाहर मत देखिए

इसलिये आप को मेरी सूचना है कि आप सब मिल कर एक समिति बनाइये। उस समिति द्वारा गाँव का सारा कारोबार चलाइये। गाँव में झगड़ा है तो बाहर की अदालत में नहीं जाना चाहिये। गाँव में कोई न कोई सज्जन होते ही हैं। उनके पास अपना झगड़ा रख कर उनका फैसला मानना चाहिये। सारे गाँव का हिसाब करके उसमें क्या बोना चाहिये वह तय करना चाहिये। आप के गाँव में सब तरह की शक्ति है। अनाज आप तैयार करते हैं, तरकारी आप ही करते हैं, दूध, घी भी आप के यहां होता है। इतना होते हुए भी आप भिखारी हैं, क्योंकि ये चीजें आप खा नहीं सकते, उनको बेचना चाहते हैं। और बेचते क्यों हैं? पैसे के लिये। और पैसा क्यों चाहिये? बाहर से सारा पक्का माल खरीदने के लिये। अपना कच्चा माल आप बेचते हैं और पक्का माल मोल लेते हैं। इस तरह से आप लोग स्वराज्य का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

सारा गांव एक कुटुम्ब बने

और एक बात आप को कहनी है। हरेक गाँव में अलग अलग पार्टियाँ होती हैं। उससे गाँव में झगड़े होते हैं। लेकिन सारा गाँव एक कुटुंब के जैसा होना चाहिये। कोई आपसे पूछे कि क्या आप काँग्रेसवाले हैं या कम्युनिस्ट हैं या समाजवादी हैं, तो जवाब देना चाहिये कि हम हमारे गाँव के हैं और उस गाँव की सेवा यही हमारा धर्म है। भगवान श्रीकृष्ण के गोकुल में सारा गोकुल एक कुटुंब बन गया था उस तरह आप का गाँव गोकुल बनना चाहिये। इस तरह अपने गाँववालों पर प्रेम करना सीखेंगे तो सारा गाँव भगवान का निवास-स्थान बन जायगा।

झुकें नहीं, नम्रता रखें

आखिर में एक बात। आप लोग नमस्कार करने के लिये आते हैं और पांव पर सिर झुकाते हैं। आप लोगों को खड़े रह कर ही नमस्कार करना चाहिये। हमको सीखना चाहिये कि हम किसी के आगे इस तरह अपना सिर झुकायेंगे नहीं! हमारा आदर और प्रेम हमको प्रकट करना है तो दोनों हाथ जोड़ कर नम्रता से सिर झुका कर खड़े खड़े ही नमस्कार करना चाहिये। पैर तक सिर नहीं झुकाना चाहिए। मैं आप सब को प्रणाम करता हूं।

बालकोंडी, (जि० निजामाबाद)
२४-३-५१

अठारहवां दिन—

: २२ :

सच्चा स्वराज्य

आप मेरा भाषण सुनने के लिये इतनी बड़ी तादाद में यहां आये हैं। आप की उत्सुकता मैं समझ गया हूं। आप शांति से बैठे हैं यह देख कर मुझे खुशी होती है।

स्वराज्य आने पर भी हालत क्यों नहीं सुधरी

आज घर पर बात हो रही थी तब कुछ लोगों ने कहा कि स्वराज्य आया है फिर भी कोई खास फरक हम नहीं देखते हैं। मुझे यह सुन कर आश्चर्य नहीं हुआ। देखिये आप के इस निजाम के मुल्क में करीब सात-आठ सौ साल से दूसरों की सत्ता चली आ रही है। और अब दो साल से आप की खुद की सत्ता आई ऐसा कहते हैं। अब यह स्वतंत्रता आप को किस तरह हासिल हुई है? तो बोले पुलिस ॲक्शन से। पहले के जमाने में भी इसी तरह राज्यों में फेर-बदल होते थे। एक राज्य जाता था और दूसरा आता था, लेकिन उस से प्रजा में कोई फरक नहीं होता था। तो प्रजा में कोई फरक हुए बगैर जो राज्य आता है वह स्वराज्य हो ही नहीं सकता। वह परराज्य है, चाहे उसको चलानेवाले अपने लोग भी क्यों न हो।

जब यहां रजाकारों का जुल्म था तब आप लोग भयभीत थे। तो क्या अब आप लोगों ने भय छोड़ कर के यह राज्य हाथ में लिया

है ? लोगों का भय तो जैसा का वैसा ही है। आज भी पुलिस डंडा चलायेगी तो लोग डरेंगे। परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोगों में भय होता है। अगर वह भय कायम है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इसलिये होती है कि लोगों में आपस आपस में एकता नहीं होती। अगर लोगों में आज भी एकता नहीं है तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? परकीय सत्ता इसलिए होती है कि लोग शराबी होते हैं, व्यसनी होते हैं, पराक्रमहीन होते हैं। अगर आज भी लोग शराबी हैं, व्यसनी हैं, और पराक्रमहीन हैं, तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? लोगों में परकीय सत्ता इसलिए होती है कि लोग आलसी ह। अगर आज भी लोग आलसी हैं तो स्वराज्य आया कैसे कह सकते हैं ? इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं होता कि आप लोगों की स्थिति पहले थी वैसी ही आज है। अगर मुझे कोई कहेगा कि कल रात थी और आज दिन हो गया है फिर भी प्रकाश नहीं है, तो मैं कहूंगा कि दिन नहीं हुआ है बल्कि छोटी सी लालटेन लगी हुई है। तो यही समझो कि पुलिस ॲक्शन के पहले रात थी, और आज भी रात है, लेकिन जरासी लालटेन लग गयी। लेकिन उतने लालटेन से दिन नहीं होता है। दिन के लिये तो सूर्य का प्रकाश चाहिये जो हर घर में पहुँचता है।

स्वराज्य का अर्थ

आप के इस गाँव में १२ हजार लोग रहते हैं, लेकिन यहां आपस आपस में सहकार्य से कौनसा काम चल रहा है ? क्या गाँव का शिक्षण आप लोग चलाते हैं ? आप कहेंगे हमारा रक्षण सरकार करती है और शिक्षण हमें सरकार देती है। इस तरह

अगर गाँव का सारा काम हुकूमत ही करती है तो फिर गाँव का स्वराज्य कहां रहा ? यहां कपड़ा बाहर से आता है, तेल बाहर से आता है तो गाँव में आप क्या करते हैं ? यहां बीड़ियाँ बना कर आप बंबई भेजते हैं और वहां से पैसा लाते हैं। उससे क्या हुआ ? शायद पहले से आप अधिक बीड़ियाँ पीने लगे होंगे। स्वराज्य का मतलब तो यह होता है कि हरेक गाँव अपनी-अपनी बहुत सारी आवश्यकताओं को गाँव में ही पूरी कर लेता है। और इस तरह जो गाँव स्वावलंबी होते हैं वे एक दूसरे की पूर्ति कर सकें इसलिये सरकार निमित्तमात्र होती है। सरकार का काम यह नहीं है कि गाँव को हर चीज बाहर से ला दे। सब गाँवों का संबंध बना रखने के लिये सरकार है। सरकार का काम हरेक गाँव को स्वावलंबी बनने में मदद देने का है। मेरी तो व्याख्या यह है कि जहां स्वराज्य नहीं होता है वहां दुर्गुण होते हैं। गोरी चमड़ी वाले लोग गये और काली चमड़ीवाले आये इससे स्वराज्य नहीं बनता। तो मुझे जब लोग कहते हैं कि स्वराज्य के बाद हमारी स्थिति सुधरी नहीं है तो मैं पूछता हूं कि क्या आप के दुर्गुण कम हुए हैं ? अगर हमको यह अनुभव आता है कि पहले से हमारे दुर्गुण कम हुए हैं तो स्वराज्य आया ऐसा समझ सकते हैं। अगर वैसा अनुभव नहीं आता है और चार साल पहले जिन दुर्गुणों में हम थे वे अब भी कायम हैं तो स्वराज्य हमें नहीं मिला है ऐसा समझना चाहिये। इसलिये मुझे आप लोगों को यही कहना है कि अभी स्वराज्य हासिल करना बाकी है ऐसा समझ कर आप जोरों के साथ काम में लग जाइये।

हरेक को दो भाषाओं का ज्ञान हो

अब दूसरी बात जो आज मुझे सूझ रही है वह मैं कहता हूं। हमारी विधान सभा ने हिंदी को राष्ट्रभाषा के तौर पर स्वीकार किया है। इसलिये अब हरेक को राष्ट्रभाषा का उत्तम अभ्यास करना चाहिये। मैंने तो यह उपमा दी है कि जैसे मनुष्य को दो आंखें होती है वैसे हरेक हिंदुस्तानी को दो भाषाओं का ज्ञान होना चाहिये, एक अपनी मातृभाषा और दूसरी राष्ट्रभाषा। मेरा तर्जुमा करने के लिये जो यहां खड़े हैं उन्होंने हिंदी भाषा का अच्छा अभ्यास नहीं किया है। तो हो यह रहा है कि आपके लिये जो विचार मैं भेजता हूं उसमें से कुछ आपके पास पहुंचते हैं और कुछ बीच में खतम हो जाते हैं। यह आज का अनुभव ध्यान में लीजिये और जल्दी से जल्दी राष्ट्रभाषा का अध्ययन सब कर लीजिये।

बड़े राष्ट्र की जिम्मेवारी

इन दिनों छोटे-छोटे राष्ट्र टिकते नहीं हैं। हिंदुस्तान जैसा बड़ा देश ही टिक सकता है। पुराने जमाने में छोटे छोटे राष्ट्र टिकते थे। लेकिन आज जमाना दूसरा आया है। आज बड़े राष्ट्र ही टिक सकते हैं। और आगे तो हम ऐसा स्वप्न देखते हैं कि सारी दुनिया मिल करके एक ही राज्य बन जाय।

तो यह सब ध्यान में लेकर हरेक नागरिक का कर्तव्य है कि भारत की कोई भी एक भाषा और अपनी मातृभाषा अच्छी तरह सीखे। सारे भारत को एक माना है तो यह जिम्मेवारी उठानी ही चाहिये।

आरमूर (जि० निजामाबाद)
२५-३-५१

उन्नीसवां दिन—

: २३ :

हमारे पाप

आज मुझे इस बात की खुशी है कि मैं हिंदुस्तानी में ही बोलूंगा और आप मेरे व्याख्यान को समझ लेंगे। नहीं तो अकसर मेरे वाक्यों का तर्जुमा करना पड़ता था तेलगु में, जिसमें भाषण का बहुतसा सार मैं खो बैठता था। लेकिन वह बात आज नहीं होगी और मेरी आवाज सीधी आपके कानों तक और मैं उम्मीद करता हूं कि हृदय तक, पहुंचेगी।

अभी आप लोगों को सुनाया गया कि हम वर्धा से पैदल-यात्रा के लिये निकल पड़े हैं। [illegible] में सर्वोदय संमेलन होने जा रहा है, वहां जा रहे हैं। वैसे रास्ते में तो आप का गाँव नहीं आता है, थोड़ा बाजू में है। इसलिये यहां आने का मैंने नहीं सोचा था। लेकिन आपके गाँववाले पहुंच गये। उन्होंने बहुत आग्रह किया तो मैं पिघल गया। और आप लोगों के दर्शन करने के लिये आरमूर से आज १७ मील चल कर पहुंच गया हूं।

छोटे देहात में क्यों जाता हूं

अकसर मेरी इच्छा खास कर छोटे छोटे गावों में जाने की होती है। क्योंकि ऐसे छोटे गाँवों में लोग बहुत कम पहुंचते हैं। इसके अलावा पदैल-यात्रा का यह उद्देश्य था कि जिन

देहातों में अकसर जाना नहीं होता है वहां जा कर वहां की स्थिति देखूँ। तो आप का गाँव वैसे छोटा भी नहीं था और रास्ते पर भी नहीं था। दोनों लिहाज से यहां आने का मुझे कोई आकर्षण नहीं था। फिर भी आप लोगों के प्रतिनिधियों ने आपका प्रेम मुझे पहुंचाया वह मुझे यहां खींच लाया है। छोटे देहात में जाना होता है तो घंटा डेढ़ घंटा उस गाँव में मैं घूम लेता हूं। मेरे कार्यक्रम में यह भी एक चीज है। बहुत सारे घरों में जाता हूं; वहां की बहनों से बातचीत करने का मौका मिलता है। इस तरह काफी प्रेमभाव महसूस होता है। मेरे और गाँववालों के बीच कोई परदा नहीं रहता।

शहर की व्याख्या

अब यह बात शहरों में तो नहीं होती। शहर में यह अपेक्षा भी नहीं होती कि सब से परिचय हो। इतना ही नहीं बल्कि मैंने तो शहर की व्याख्या ही यह की है कि शहर वह है जहां मनुष्य अपने पड़ोसी को नहीं पहचानता। अगर आप से पूछा जाय कि आपके पड़ोसी कौन हैं और वे क्या करते हैं, और आप उसका जवाब मुझे दे सकें तो मैं कहूंगा कि आप दर असल नागरिक हैं ही नहीं। आप देहात के रहनेवाले हैं। शहर तो वह है जहां एक दूसरे की पहचान नहीं, एक दूसरे की परवाह नहीं, और जहां प्रेम का कोई सवाल ही नहीं। हरेक अपने अपने में मग्न है। अगर दूसरे किसी से संबंध आया तो अपनी गरज से। टिकट घर पर लोग इकट्ठा होते हैं उनके बीच में कोई संबंध

नहीं होता सिवाय इसके कि हरेक को अपनी अपनी टिकट कटानी होती है। वैसे शहर में जो समुदाय इकट्ठा होता है वह समुदाय की गरज से नहीं बल्कि अपनी गरज से होता है। तिसपर भी मानवता होती है इसलिये कुछ प्रेमभाव पैदा हो जाय तो लाचारी की बात है।

शहरों में नहीं रहते

एक पुरानी कहानी है। उपनिषदों में वह किस्सा आया है। एक राजा था और उसने किसी ज्ञानी का नाम सुना। राजा का दिल बड़ा था। जब वह किसी ज्ञानी का नाम सुनता तो उससे मिलने की उसको बहुत तीव्र इच्छा हो जाती थी। तो राजा ने अपने सारथी को बुला कर कहा कि "जाओ भाई, फलाने ज्ञानी का नाम मैंने सुना है उसका पता लगाओ। वह कहां रहता है? ढूंढ निकालो।" राजा के हुक्म से सारथी गया और उसने सारी राजधानी ढूंढी। लेकिन जिस ज्ञानी को ढूंढना था उसका कोई पता नहीं लगा। वह राजा के पास वापिस आया और कहा, "मैंने सब जगह ढूंढ लिया लेकिन "नाविंद इति प्रत्येयाय"—मुझे वह ज्ञानी नहीं मिला।" तो राजा बोला, "अरे मूरख तू कैसा है, ज्ञानी जहां होते हैं वहां ढूंढना चाहिये। ज्ञानी क्या कहीं शहर में होते हैं?" फिर वह सारथी जंगल में गया। वहां उसको वह ज्ञानी मिला। फिर राजा को आकर सारथी ने यह बात बताई। राजा ज्ञानी के पास पहुंचा और बहुत कुछ ज्ञान उस ज्ञानी से उसने हासिल किया। वह सारा उपनिषद में दिया

है। हम लोगों को आश्चर्य होगा कि वह उपनिषद का ऋषि ज्ञान की आशा ही शहर में नहीं करता है। और इधर देखो तो जो भी विद्यालय, हाईस्कूल या कॉलेज आदि खुले हैं सारे शहरोंमें हैं। मानों सरस्वतीदेवी ने अपने कमलासन को छोड़ कर नगर में ही आसन डाला है। लेकिन उस जमाने में यह बात जितनी सही थी उससे भी आज वह ज्यादा सही है कि शहर में कोई विद्या नहीं है।

शहरों में विद्या का लय

मैं तो बहुत दफा कह चुका हूं कि शहरों में विद्यालय तो बहुत खुले हैं लेकिन वहां विद्या का लय होता है, विद्या का आलय वह नहीं है। आजकल के विद्यालयों में जो विद्या पढ़ाई जाती है वह बिलकुल ही बेकार है। नागरिकों से जो कुछ आशा करनी है उसके लायक विद्या हाईस्कूल, कालिजों में होनी चाहिये, वह वहां मौजूद नहीं है तो वह विद्या किस काम की? आज कल जो विद्या चलती है वह हमारे काम की नहीं है, उसमें फौरन परिवर्तन होना चाहिये; यूं कहते कहते सरदार वल्लभभाई पटेल चले गये। और मैंने तो कई दफा कहा है कि भाई इस तरह की विद्या होने के बजाय न होना बेहतर है। अगर नये ढंग के विद्यालय शुरू करने में देरी लगती है तो कम से कम पुरानी विद्या तो बंद कर दो। चार-छः महीने बच्चों को छुट्टी दे दो, कोई नुकसान नहीं होगा। वैसे तो आज जिस तरह स्कूल चलती है उसमें भी चार-छः महीनों की छुट्टी होती है। गरमी की मौसम में

लगातार दो-दो महीने छुट्टी होती है जब कि किसान धूप में अपने खेत पर काम करता है। लेकिन हम मकानों में बैठ कर विद्या का आदान-प्रदान नहीं कर सकते! इस तरह साल भर में चार-छः महीने छुट्टी लेते हैं और बारह-बारह पंद्रह-पंद्रह साल सीखते रहते हैं। बच्चों पर उनके मां-बाप तालीम के लिये पैसा खर्च करते हैं। और बच्चे बिना काम किये जिंदगी कैसे बसर हो इसकी खोज में रहते हैं। इसमें उनका कोई दोष नहीं है। जो विद्या उन्हें मिली है वह निर्वीर्य है। तो बच्चों के शरीर भी नाजुक बनते हैं। कोई रुहानी याने आत्मिक ताकत मिलती नहीं है, काम की आदत पड़ती नहीं और कोई दस्तकारी सिखाई जाती नहीं। जो उठता है उपदेश देता है कि देश की पैदावार बढ़ाने की आवश्यकता है, और हरेक का काम है कि देश के लिये कुछ न कुछ पैदा करे। इस तरह प्रवचन देनेवाले देते हैं और सुननेवाले सुनते हैं। लेकिन दोनों मिलकर कोई चीज पैदा नहीं होती। चीज तो तब पैदा होती है जब कोई करे। लेकिन करने की तालीम स्कूल में नहीं है। इस हालत में देश का कोई भला यह शहर की तालीम नहीं कर रही है। उससे बेकारी में वृद्धि होती है, मनुष्य के दिल में एक तरह का असंतोष पैदा होता है। इसलिये यद्यपि शहरों में इतने विद्यालय हैं फिर भी देश का भला हो, मानवता ऊंची उठे, दीनों के दुःख मिटें परस्पर सहकार बढ़े, सारा देश वीर्यवान, बलवान हो ऐसा कोई काम हम कर नहीं पाते। और सारे शहर एक तरह से राष्ट्र के लिये भाररूप से हो गये हैं।

युवानो में सर्वोदय का संदेश सुनने की उत्सुकता

ऐसी निकम्मी तालीम दी जाने के बावजूद मैं जब कभी शहरों में हाईस्कूल या कॉलेजों में गया हूं और वहां बोला हूं तो आश्चर्य चकित हुआ हूं। क्योंकि मैं देखता हूं कि वहां के लड़के सर्वोदय के विषय में मैं जो कहता हूं वह सुनने के लिये अत्यत उत्सुक रहते हैं और उससे प्रभावित होते हैं। हाईस्कूल, कॉलेजों के नवयुवकों में एक ऐसी आकांक्षा काम कर रही है जिससे उनका जी छटपटा रहा है कि कुछ न कुछ करना चाहिये जिससे हमारा देश आगे बढ़े। मानव में रजोगुण और तमोगुण काम करते ही हैं, और इन दिनों इन दोनों का नाच बहुत जोरों से चल रहा है। रिश्वतखोरी बढ़ी है, आलस्य बढ़ा है शराबखोरी और दूसरे व्यसन बढ़े हैं, एक दूसरे को लूटने का विचार हो रहा है, यह सब हो रहा है। लेकिन इतना होते हुए भी युवानों में एक ऐसी सद्भावना और शक्ति काम कर रही है जो इस बिगड़ी हुई हवा से बिलकुल अलिप्त है और जिसको अपनी ही कल्पना में विचरने की इच्छा हो रही है। युवानों को लग रहा है कि चाहे साम्यवाद आये, चाहे समाजवाद आये, चाहे सर्वोदय आये, किसी भी तरह से आज जो बुरी हालत है वह जाय। इस तरह की प्रेरणा तरुणों में मैंने देखी है। मैंने सोचा इसका कारण क्या होगा। तो कारण मुझे यही लगा कि इस देश पर भगवान की कृपा हो रही है।

वैसे यह देश एक पुण्यभूमि के तौर पर सारी दुनिया में मान्य है। हम तो कहते ही आये हैं कि "दुर्लभं भारते जन्म"

लेकिन सारी दुनिया कबूल करती है कि हिंदुस्तान के इतिहास में एक ऐसी विशेषता है जो दूसरे देशों के इतिहास में कम पाई जाती है। यहां हमने अनेक प्रकार की तपस्या की है। यहां अनेक खोजें हुई हैं। अनेक तरह के आध्यात्मिक शोध यहां हुए हैं। इन दिनों पश्चिम में जिस तरह वैज्ञानिक और प्रापंचिक शोध हुये हैं वैसे हमारे यहां आध्यात्मिक शोध और प्रयोग हुये हैं। यह देश क्या है? यह तो सारी पृथ्वी का एक दर्शन है। "नाना धर्माणं पृथिवीम् विवाचसम्" अनेक धर्मवाले और अनेक भाषावाले लोग पृथ्वीभर में फैले हुये हैं और "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" यह सारी भूमि मेरी माता है और मैं उस भूमि का पुत्र हूं, यह जो सारी पृथ्वी के लिये वैदिक ऋषि ने कहा था वह इस भरतभूमि के लिये भी उतना ही लागू है। यहां के विचारवान और ज्ञानी लोगों ने कभी आप पर भेद नहीं रखा। जिसे संकुचित देशाभिमान कहते हैं वह इस भूमि में कभी जन्मा ही नहीं। इसलिये दुनियाभर के लोग यहां आये तो उनका बहुत प्रेम से यहां स्वागत हुआ है। इस तरह के कई पुण्य इस भूमि में हुए हैं तो परमेश्वर की कृपा उस पर होनी ही चाहिये।

हमारी भूमि के कुछ पाप

लेकिन जैसे इस भूमि में कुछ पुण्य हुए हैं वैसे कुछ पाप भी हुए हैं। और पापों को पुण्य के साथ भुगतना ही पड़ता है। यह नहीं होता कि पांच रुपयों का पुण्य किया और तीन रुपयों का पाप किया तो आखिर दो रुपयों का पुण्य बचा। पाप-पुण्य का हिसाब पैसे जैसा नहीं होता है। अगर पांच रुपयों का पुण्य

किया है तो वह भी अलग से भोगना है और तीन रुपयों का पाप किया है वह भी अलग से भोगना है। दोनों को भोगना पड़ता है। एक में से दूसरा बाद नहीं होगा। बहुत लोगों को इस बात का खयाल नहीं होता। वे बहुत पाप करके पैसा कमाते हैं और फिर सोचते हैं कि कुछ दान देंगे, धर्मशाला बांध देंगे तो उस पुण्य से पाप खतम हो जायगा। लेकिन पाप और पुण्य दोनों अलग से भोगने पड़ते हैं। तो इस पुण्यभूमि में यद्यपि पुण्य काफी हुआ था तो भी पाप भी हुआ था। वह पाप यह कि यहां के लोगों ने उंच-नीच भाव को बढ़ाया। हमारे समाज की रचना में श्रम के लिहाज के खयाल से वर्ण-व्यवस्था का उदय हुआ और इसमें मैं कोई दोष नहीं देखता हूं। लेकिन उस वर्ण-व्यवस्था में आगे चल कर उच्च-नीच भाव दाखिल हुए और जितने-जितने परिश्रम के उपयोगी काम थे वे सारे नीच श्रेणी के गिने गये। और वे काम करने वाले मनुष्य भी नीच माने गये। यहां तक कि उनमें से कुछ लोगों को अछूत तक हमने माना। काम करना बेइज्जती समझा गया। ज्ञानी काम नहीं करेगा, भक्त माला जपेगा लेकिन काम नहीं करेगा। संन्यासी काम नहीं करेगा। ब्राह्मण काम नहीं करेगा। इस तरह काम न करने वालों की संख्या बढ़ गई और उनकी इज्जत भी बढ़ गई। जो काम करते थे उनकी संख्या घट गई और उनकी इज्जत भी घट गई। यह बड़ा पाप हमारे देश में हुआ। तो उस पर परमेश्वर की अब कृपा हुई और शताब्दियों से हम लोग गुलामी भुगत चुके।

पापों का प्रायश्चित्त हुआ

अब यह दीखता है कि इस देश ने जितना पाप किया था उसका प्रायश्चित्त उसको मिल चुका ऐसा परमेश्वर को लगा। आखिर परमेश्वर कृपालु तो होता ही है। उसने अपनी कृपा इस देश की तरफ फिर से दिखाई, जो पहले भी थी। इसके सिवाय मैं और कोई कारण नहीं देखता कि हमारे जैसे टूटे-फूटे लोग भी गाँधीजी जैसा नेता निमित्तमात्र बनने पर आजादी हासिल कर सके। मैं तो हमारे लोगों में ऐसी कोई शक्ति नहीं देखता हूं कि जिसके बल पर हमको आज़ादी मिली ऐसा हम कह सकते हैं। अगर उस शक्ति का आत्मविश्वास हमें होता तो हिंदुस्तान की आज जो हालत है वह हम नहीं देखते। उसका रंग हमको दूसरा ही दीखता। यह कभी नहीं हो सकता कि स्वराज्य आता है। और लोगों का दुःख, बिमनस्कता और मनोमालिन्य जो पहले था वैसा ही बना रहा। लेकिन ऐसा बना है तो उसका मतलब यह है कि परमेश्वर की इच्छा से ही हम स्वराज्य में दाखिल हुए हैं। इसी कृपा के कारण मैं यह देख रहा कि आज के बिगड़े हुए वातावरण में भी हाईस्कूल और कॉलेजों के युवानों में उच्च आकांक्षा और सद्भावना कुछ अंश में सर्वत्र है।

साम्ययोग से तरुणों को स्फूर्ति

हम लोग आश्रम में काम करते हैं वहां मेरे पास काफी तरुण लोग हैं। बहुत सारे तो हाईस्कूल-कॉलेजों को छोड़ कर आये हैं। और वहां आ कर वे क्या करते हैं? कोई खेती में लग

गये हैं, कोई जमीन खोदते हैं, कोई पानी खींचते हैं, कोई रसोई करते हैं, कोई भंगी का काम करते हैं। हमको कुआं खोदने की जरूरत थी तो आखिर वह भी हमने शुरू कर दिया। जिन तरुणों को उस काम का कोई अनुभव नहीं था वे उस काम को बड़े उत्साह के साथ कर रहे हैं। मैं बड़ा ताज्जुब में रह जाता हूं कि यह प्रेरणा उन जवानों में कहां से आयी। तो सिवाय इसके कि यह परमेश्वर की इच्छा है, मुझे और कोई जवाब नहीं मिलता है। और क्योंकि इसमें मैं परमेश्वर की इच्छा देख रहा हूं तो मेरा उत्साह परमावधि को पहुंचता है। जब मैं हिंदुस्तान की अभी की हालत के विषय में लोगों में निराशा देखता हूं तो उस निराशा का जरा भी स्पर्श मुझे नहीं होता। क्योंकि मैं देखता हूं कि यद्यपि काफी अंधकार फैला हुआ है, फिर भी उसको तोड़नेवाली शक्ति का जन्म हो रहा है, याने युवानों में बलवान प्रेरणा काम कर रही है। उनकी आत्मा उछल रही है। वे देख रहे हैं कि कौन ऐसा मिलता है जो हमें मार्ग बतायेगा जिससे कि सारे हिंदुस्तान में साम्ययोग दीख पड़ेगा। बस साम्ययोग का नाम लीजिये और तरुणों का उत्साह देखिये। इसीलिये जिन्होंने बिलकुल परिश्रम नहीं किया था वे परिश्रम के लिये तैयार हो रहे हैं। और इस तरह का काम जहां भी आप शुरू करेंगे वहां जवान लोग उत्साह से काम करने के लिये सामने आते हैं ऐसा दृश्य आप को दीख पड़ेगा।

मेरा खास दावा

इसलिये मैं बहुत दफा काँग्रेस वालों को सुनाता हूँ। उनको इसलिये सुनाता हूं कि वह एक बड़ी जमात है। उसके पीछे तपस्या का भाव है। पचास-साठ साल के इतिहास में काँग्रेस ने बहुत भारी तपस्या की है। इस युग में कई महान् महान् पुरुष हमारे देश में पैदा हुये और उन सबका प्रयत्न काँग्रेस के द्वारा हुआ। इसका मतलब यह हुआ कि काँग्रेस ऐसी संस्था बनी कि जिसका संपर्क सारे देश से आ गया। इसलिये मैं काँग्रेसवालों को सुनाता हूं। लेकिन मैं दूसरे लोगों को भी सुनाता हूं। समाजवादियों में मेरे कई मित्र हैं। वे जानते हैं कि यह एक ऐसा मनुष्य है जो भेद-भाव नहीं रखता है। मेरा ऐसा खास दावा है कि मैं अपने को किसी पक्ष का कभी समझता ही नहीं हूं। मेरे सिर पर किसी तरह का लेबल कभी चिपका ही नहीं। मेरा दिमाग किसी वाद के पीछे पागल नहीं हुआ है। जहां जहां सत्य का थोड़ा अंश भी दीख पड़ता है वह ग्रहण करने के लिये मैंने अपनी बुद्धि को हमेशा स्वतंत्र रखा है। इसलिये समाजवादियों में भी मेरे कई मित्र पड़े हैं। तो मैं उनको भी सुनाता हूं और सबको सुनाता हूं कि अभी वाद-विवाद छोड़ दीजिये। वाद के लिये अभी मौका नहीं है। देश अभी ही स्वतंत्र हुआ है। जहां देश स्वतंत्र होता है वहां कई तरह की शक्तियां काम करती हैं। उनमें कुछ शक्तियां प्रतिक्रियावादी भी होती हैं। उनका मुकाबला सबको मिल कर करना चाहिये। जब इनका मुकाबला होगा और देश का नैतिक

स्तर चाहिये वैसा बनेगा उसके बाद अपने अपने वादों के लिये अवकाश रहेगा। तब तक वादों को छोड़ो और सारे लोगों की सेवा में लग जाओ।

लोगों की सेवा कैसे होगी

और सेवा व्याख्यान श्रवणादि से नहीं बल्कि प्रत्यक्ष शरीर-परिश्रम से होगी। आज हिंदुस्तान के हरेक नागरिक से, और ग्रामीण से, चाहे वह पुरुष, स्त्री, बच्चा, बूढ़ा कोई भी हो, यह आशा की जाती है कि उस से जो भी प्रयत्न बन सकेगा अपनी मातृभूमि के लिये उसे करना चाहिये। अगर यह नहीं होता है तो हमारे देश की समस्या हल नहीं होगी। लोग मुझे पूछते हैं कि सर्वोदय क्या है? मैं कई तरह के अर्थ समझाता हूं। एक अर्थ यह भी समझाता हूं कि सर्वोदय याने सब का प्रयत्न। एक बच्चा भी ऐसा नहीं रहना चाहिये कि जिसने देश के लिये कुछ न कुछ काम नहीं किया है। इसीलिये गांधीजी ने हरेक को दीक्षा दी कि सूत कातो। और भी दूसरे काम करो। लेकिन कोई इतना कमजोर है कि दूसरा कुछ काम नहीं कर सकता तो वह भी थोड़ा सूत अगर कात लेता है तो देश की पैदावार में उतनी वृद्धि होती है। जैसे बूंद बूंद से नदी बनती है वैसे हरेक मनुष्य से इस वक्त परिश्रम होना अत्यंत जरूरी है।

मैं तो समझता हूं कि आप ऐसा कोई कार्यक्रम प्रत्यक्ष पैदावार का निकालो। गरीबों से एकरूप होने का कार्यक्रम

निकालो कि जिससे अमीर, गरीब, शिक्षित, अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण यह सारा भेद मिट जाय, किसी प्रकार का उच्च-नीच भाव न रहे। इस तरह का कार्यक्रम शुरू करो तो कोई वाद का सवाल ही पैदा नहीं होगा और आप देखेंगे कि तरुणों को कितना उत्साह आता है और कितनी तीव्र प्रेरणा से वे उस कार्यक्रम में शामिल होते हैं।

तो मैं सब से पहले [illegible] को सुनाता हूं फिर समाजवादियों को सुनाता हूं और बाद में और भी जो बहुतसे वादी पड़े हैं उनको सुनाता हूं कि भाइयो, तुम्हारे जो भी अलग विचार हैं वह सारे रखो तुम्हारे पास। मैं यह नहीं कहता कि उनको छोड़ दो क्योंकि जो विचार तुमको अच्छे लगते हैं और तुम्हारे दिल में बैठे हैं वे आप कैसे छोड़ेंगे? और छोड़ना भी नहीं चाहिये। लेकिन उन विचारों को ध्यान में रखते हुए भी यह समझो कि फिलहाल देश को शरीर-परिश्रम की जरूरत है और भेदभाव मिटाने के कार्यक्रम हाथ में ले लो। तो देखोगे कि कितनी महान् शक्ति पैदा होती है। हमने थोड़ा करके देखा है जिससे हमको अनुभव आया है कि कितनी स्फूर्ति उससे मिलती है। देखनेवालों और सुननेवालों को स्फूर्ति मिलती है तो प्रत्यक्ष करनेवालों को कितनी मिलती होगी इसका अंदाजा आप लगाइये।

आज आपके शहर में आया तो यह विचार सहज सूझा कि शहर और देहात में भेद क्यों होना चाहिये? शहरों को देहात की सेवा में लग जाना चाहिये। देहातियों में शहरों को मदद

करने की प्रेरणा होनी चाहिये। इस तरह एक दूसरे को एक दूसरे की मदद करने की प्रेरणा क्यों नहीं होनी चाहिये? ऐसी प्रेरणा यदि होती है तो यह सारा भेद मिट जायगा और सारे मिलकर हिंदुस्तान की सेवा में लग जायेंगे। भगवान ने हरेक को अलग अलग शक्ति दी है। इस तरह की विषमता दुनियाँ में है इसमें दोष नहीं बल्कि लाभ है। अगर संगीत में केवल 'सा' 'सा' 'सा' ऐसा एक ही स्वर होता, 'ग' 'म' आदि कुछ नहीं होते तो संगीत ही नहीं बनता। लेकिन भिन्न-भिन्न स्वर होते हुये भी हरेक में भिन्न भिन्न गुण हैं इसलिये मधुरता होती है और सब मिल कर सुंदर संगीत बनता है। वैसे शहरवालों में कुछ शक्तियाँ पड़ी हैं, लेकिन वे सारी एक दूसरे के खिलाफ काम करती हैं तो उन शक्तियों का जोड़ नहीं होता बल्कि घटती ही होती है। दस के विरोध में अगर आठ खड़े होते हैं तो दोनों मिल कर दो ही शक्ति रह जाती है। लेकिन दस के साथ अगर आठ लगते हैं तो शक्ति अठारह बनती है। यह सीधी गणित की बात है। तो हमारे देश में शक्ति काफी पड़ी है। लेकिन उस शक्ति का साक्षात्कार हमें तब होगा जब कि वह सारी एक दिशा में लग जाय। नदी का पानी जब कई जगहों से एक दिशा में आता है तो शक्तिशाली नदी बनती है। लेकिन पानी अगर इधर उधर दौड़ता चले और नदी न बने तो वह सारा का सारा पानी कहीं न कहीं गायब हो जायगा। उसमें से कोई विशेष महान प्रवाह बनता हुआ दीख नहीं पड़ेगा। वैसे हममें शक्ति कम नहीं है।

लेकिन वह सारी अगर एक दिशा में लग जाती है तो उसका प्रकाश पड़ेगा, उसका स्वरूप दीख पड़ेगा, उसके परिणाम का अनुभव आयेगा।

मेरे भाइयो, मैंने आपको काफी सुनाया। अगर आप के दिलों तक मेरी बात गई है तो कुछ न कुछ उत्पादक शरीर-परिश्रम में लग जाइये और ऊंच-नीच भाव मन में से बिलकुल निकाल दीजिये। यह मेरी आप से प्रार्थना है।

निजामाबाद
२६-३-५१

बीसवाँ दिन—

: २४ :

सज्जनों का समाज

कुष्ठ-रोगियों की सेवा

आप के इस गांव में कोई पंद्रह-बीस साल पहले मैं एक बार आया था। लेकिन यहां गांव के भीतर नहीं आया। कुष्ठ-रोगियों का दवाखाना देखने के लिये आया था जो उन दिनों बहुत मशहूर था। हिंदुस्तान भर में इस तरह के कुष्ठ-रोगियों के दवाखाने ईसाई भाइयों ने चलाये हैं। वैसे हिंदुस्तान में ईसाइयों की संख्या बहुत कम है। और जो बीमार होते हैं उनमें ज्यादातर हिंदू-मुसलमान ही होते हैं, ईसाई कम होते हैं। उन दिनों हमारे मन में विचार आता था कि हम ऐसी सेवा क्यों न करें? वैसे हम लोग दूसरी सेवा तो करते थे, जैसे हरिजन सेवा, खादी आदि। लेकिन कुष्ठ-रोगियों की सेवा का काम हाथ में नहीं लिया था। जब इस सेवा के क्षेत्र में आने की इच्छा हुई तो हममें से एक इस काम के लिये तैयार हो गये। उनकी तीव्र इच्छा हुई कि यह काम करें। तब वर्धा में हमने यह काम शुरू कर दिया। उस दृष्टि से उस समय वह दवाखाना मैंने देखा था और देखकर मुझे बहुत खुशी हुई थी। हमारे मित्र श्री मनोहरजी ने यह काम शुरू किया। वे खुद डॉक्टर नहीं थे। लेकिन इस काम के लिये जरूरी डॉक्टरी का ज्ञान

उन्होंने प्राप्त किया। इतने दिन उन्होंने अकेले ही काम किया। वैसे वर्धा के कुछ डॉक्टरों ने भी उनकी मदद की।

लेकिन अब वहां दो अच्छे कार्यकर्ता इस काम के लिये मिले हैं। बीमारों की व्यवस्था भी अच्छी है। गांधीनिधि वालों ने भी तय किया है कि उस निधि से इस काम को कुछ मदद पहुंचाई जाय। क्योंकि महात्मा गांधी ने जो रचानात्मक कार्य बताये हैं उनमें इस काम का भी समावेश है। हम आशा करते हैं कि वह काम अब ठीक चलेगा।

सेवकों की कमी

लेकिन भारत में सेवकों की बहुत कमी है। और यह सेवकों की कमी हमारे हर काम में बाधा डाल रही है। मानों फसल तो बहुत ज्यादा है और काटनेवालों की कमी है। हमारे देश में आज तरह-तरह के सेवकों की जरूरत है। आज तक स्वराज्य नहीं था तो वह प्राप्त करने में कार्यकर्ताओं की शक्ति लगी थी। लेकिन अब स्वराज्य मिलने पर कार्यकर्ताओं को सेवा के काम में लग जाना चाहिये।

सेवकों का काम

भारत देश में केवल यही एक रोग नहीं है। और भी बहुत रोग हैं। इन सब रोगों से लोगों को मुक्त करना सेवकों का काम है। लोगों को अच्छा खाने को भी नहीं मिलता। अच्छी खुराक के अभाव में रोगों की बन आती है। तो रोगों की भी एक समस्या है। और दरिद्रता की भी एक समस्या है। फिर दरिद्रता की समस्या के साथ व्यसनों की भी समस्या है। जिधर देखो उधर शराबखोरी

चल रही है। इधर इस मुल्क में तो लोग शराब खूब पीते दीखते हैं। सब को शराबखोरी से मुक्त करना हमारा काम है। मतलब यह कि जिधर देखो उधर सेवा का काम पड़ा ही है। इसलिये सेवा में फौरन लग जाना चाहिये। काँग्रेसवालों को और दूसरे जो सेवक हैं उनको भी।

शराब के विरुद्ध प्रचार की आवश्यकता

पुराने जमाने में काँग्रेस पिकेटिंग द्वारा शराब के विरुद्ध प्रचार करती थी। अब तो काँग्रेस का ही राज्य है, लेकिन सरकार को लगता है कि शराबबंदी से सरकार की आमदनी बंद होगी और लोग तो छिप छिप कर चोरी से शराब पीते ही रहेंगे। इसलिये कार्यकर्ताओं का काम है कि चित्रों और व्याख्यानों के जरिये शराब की बुराइयों को लोगों के सामने रखें। जब ऐसे प्रचार से वातावरण तैयार हो जायगा तो गाँव गाँव में प्रस्ताव पास करके सरकार को शराबबंदी के लिये कानून बनाने की बात हम कह सकते हैं। याने इधर ज्ञान-प्रचार द्वारा और उधर कानून द्वारा यह काम करना होगा।

जो व्यसन लोगों में सालों से घुसा हुआ है उसे निकालने में तकलीफ तो होगी; लेकिन यह बात भी सही है कि हमारे सारे देश में वातावरण शराबखोरी के लिये अनुकूल नहीं है, प्रतिकूल है। यद्यपि सब लोग इसके विरोध में हैं फिर भी कुछ जातियां, जैसे हरिजन आदि, शराब अधिक पीती हैं। इसलिये केवल कानून से यह काम हो, ऐसा नहीं मानना चाहिये। हम लोगों को प्रचार भी

काफी करना चाहिये। और ये जो प्रचारक होंगे वे केवल प्रचारक नहीं होंगे बल्कि गाँवों की विविध सेवा करनेवाले कुशल सेवक होंगे। अगर वे ऐसा करेंगे तो आप को यहां कम्युनिज्म का जो डर लगता है उसको भी वे रोक सकेंगे। क्योंकि आखिर कम्युनिस्टों का जो हिंसक तरीका है वह हमारे देश को कभी पसंद नहीं आ सकता। फिर भी क्योंकि देश में गरीबी है, लोग उनकी बात मान लेते हैं। अगर हम लोग देहातों में चले जांय और उनकी सेवा में लग जांय तो उन्हें महसूस होगा कि काँग्रेसवाले हमारी सेवा में लग गये हैं। इस दृष्टि से सेवा के बारे में यह डिचपल्ली का दवाखाना हमें गुरुरूप बना है। दूर दूर से अंग्रेज लोग आते हैं और हमारी सेवा करते हैं यह क्या हमारे लिये शरम की बात नहीं है? काँग्रेसवाले अगर आइंदा इस तरह सेवा के काम में नहीं जुट जायेंगे तो काँग्रेस खतम होगी। यह तो मैंने सेवकों के लिये कहा। किंतु गाँववालों को भी चाहिये कि वे भी खुद अपनी सेवा करें।

सज्जनों का समाज

लोग यह नहीं कह सकते कि हमारे यहां सेवक नहीं हैं। जंगल के जानवर भी शेर आदि हिंसक पशुओं से बचने के लिये आपस में झुंड बना कर रहते हैं, और एक दूसरे की मदद करते हैं। आप लोग तो आखिर मनुष्य हैं। अगर आप प्रेम से रहेंगे और एक दूसरे की मदद करेंगे तो गाँव की रक्षा सहज कर सकते हैं। जैसे हम अपने परिवार की सोचते हैं वैसा सारे गाँव की भी सोचने की आदत डालनी चाहिये। लेकिन अपने परिवार के बाहर हम

सोचते ही नहीं। सालों से यही आदत पड़ी है। इसलिये आप लोगों को गाँव में सज्जनों का एक समाज बनाना चाहिये। जानबूझ कर मैंने इसे 'समाज' नाम दिया है। याने यह जो समाज बनेगा वह किसी तरह का अधिकार नहीं चाहेगा। वह सिर्फ सेवा करना चाहेगा।

गाँव में दुर्जन भी होते हैं। आपस आपस में संघ करते हैं। लेकिन सज्जन लोग ऐसा संघ नहीं करते। हरेक सज्जन अकेला अकेला काम करता है इसलिये सज्जनों की शक्ति प्रकट नहीं हो पाती। इसलिये हम लोगों ने सर्वोदय-समाज कायम किया है। ऐसा सज्जनों का समाज हर गाँव में बनना चाहिये फिर यह सोचेगा कि गाँव की बुराइयों का मुकाबला कैसे किया जाय? इस समाज को चाहिये कि सारी समस्याओं पर सोचे। यही सज्जनसंघ का काम होगा। ऐसा संघ आप अपने गांव में कायम करेंगे और गाँव की सेवा करेंगे ऐसी मैं आशा करता हूं।

डिचपल्ली
ता. २७-३-५१

इक्कीसवाँ दिन—

: २५ :

गाँव स्वर्ग-भूमि है

हम भी देहात में रहते हैं

हम लोग वर्धा से पैदल यात्रा में आ रहे है। वैसे वर्धा तो एक बड़ा शहर है। लेकिन हम लोग वर्धा में नहीं रहते। वर्धा के नजदीक छोटे देहात में हम रहते हैं। आप का जैसा यह छोटा गाँव है वैसा हमारा भी एक छोटा गाँव है। महात्मा गांधी वर्धा में रहे यह सब जानते हैं। लेकिन वे वर्धा शहर में नहीं बल्कि वर्धा से नजदीक एक छोटे गाँव में रहे। वैसे पहले वे वर्धा आये। फिर उन्होंने कहा कि हमें शहर में नहीं रहना है, बल्कि गाँव में रहना है तो कोई गाँव ढूंढो। फिर वर्धा से चार-पांच मील दूर एक छोटा गांव ढूंढ लिया। और उस गाँव का नाम सेवाग्राम रखा। उस गाँव में वे दस-बारह साल रहे। उन्होंने सारे देश का काम उस छोटे गाँव में बैठ कर किया। वहां ही बड़ी बड़ी संस्थायें खुल गई जो सारे देश का काम करती हैं। आप जानते हैं कि बड़े लोग तो बड़े बड़े शहरों में रहते हैं। कोई हैद्राबाद में रहेगा कोई बंबई रहेगा तो कोई दिल्ली रहेगा। हम सब महात्मा गांधी को बड़ा मनुष्य कहते हैं। लेकिन उन्होंने छोटे गाँव में रहना पसंद किया। उनको मिलने के लिये बड़े बड़े लोग

आते थे तो उनको भी वे देहात में घसीट लाते थे। उन्होंने हमें सिखाया कि हिंदुस्तान के गरीब लोग गाँवों में रहते हैं तो उनकी सेवा के लिये गाँवों में जाओ। उनकी आज्ञा और शिक्षण के मुताबिक हम लोग भी छोटे छोटे गाँवों में दस-दस पंद्रह-पंद्रह सालों से रहते हैं।

बैकुंठ की व्याख्या

छोटा गांव याने स्वर्गभूमि है। लेकिन स्वर्ग को भी मनुष्य नरक बना सकता है। हम आज सुबह आपका गांव देखने के लिये आये थे। यहां लोगों में प्रेम बहुत देखा। स्वर्ग और वैकुंठ तो प्रेम को ही कहते हैं। जहां प्रेम है वहां वैकुंठ है। मैंने देखा कि आप के इस गांव में प्रेम बहुत है। तो यह एक स्वर्ग हो सकता है। लेकिन उस प्रेम के साथ ज्ञान भी चाहिये, और स्वच्छता भी चाहिये, तब स्वर्ग बनता है। तो जहां प्रेम है, ज्ञान है और स्वच्छता है वहां वैकुंठ आ गया। आप के घरों में तो कुछ स्वच्छता देखी लेकिन गाँव काफी गंदा था। तो सब लोगों को मिल कर रोज कुछ न कुछ गांव की सफाई का काम करना चाहिये। हमारे यहां छोटे छोटे गांवों में सफाई का काम चलता है। एक रोज पुरुष काम करते हैं, एक रोज स्त्रियां काम करतीं हैं और एक रोज बच्चे काम करते हैं, इस तरह सफाई का काम बांट लिया गया है। इस तरह सारा गाँव साफ करने की तालीम उस गांव को मिल रही है। यह नहीं हो सकता कि आप का गांव साफ करने के लिये शहर से कोई मेहतर आ जाय। आप के घर की स्त्रियां जिस तरह घर का सफाई का काम करती हैं

वैसे सब गांववालों को मिल कर अपने गांव की सफाई करनी चाहिये। जब गांव स्वच्छ होगा तो अपना हृदय भी स्वच्छ होगा। हमें अगर अमंगल जगह में बैठने की आदत पड़ जाय तो हमारा चित्त भी अमंगल बनता है। इसलिये हमारे पूर्वजों ने तालीम दी है कि ध्यान या पूजा करनी है तो पहले जगह साफ कर लो। सफाई के लिये पैसे की भी जरूरत नहीं होती। जरूरत है परिश्रम की। इस तरह आप गाँव के बड़े लोग, स्त्रियां और छोटे बच्चे सफाई के काम में लग जायेंगे तो अपना गाँव वैकुंठ बन जायगा।

गाँव की रक्षा गाँव ही करे

मैंने सुना कि इस गांव में एक साहूकार रहता था। वह डर के मारे गाँव छोड़ कर दूसरे गाँव में रहने गया है। बड़े दुख की बात है कि किसी को गाँव छोड़ कर जाना पड़े। हमारे गाँव का मनुष्य कैसा भी क्यों न हो अपना मनुष्य है। तो हम सबको उसकी रक्षा करनी चाहिये। अगर हमारा किसी से झगड़ा है तो हम उसके साथ प्रेम से झगड़ेंगे। लेकिन उसकी रक्षा तो गाँव में जरूर होगी। किसी के शरीर को जरा भी तकलीफ नहीं पहुंचने देंगे। इस तरह गाँव की रक्षा की जिम्मेवारी हमारी है। जरा कहीं भय मालूम हुआ तो लोग पुलिस को बुलाते हैं। अब पुलिस गाँव में आकर क्या करेगी? वह भी दूसरों को लूटती है। लूटनेवालों ने गाँव को लूट लिया। उसके बचाव के लिये पुलिस आये तो उन्होंने भी गाँव को लूट लिया। तो आप को पुलिस की आशा नहीं रखनी चाहिये और अपने गाँव की रक्षा खुद करनी चाहिये। गरीब लोगों

से ही सरकार को पैसा मिलता है। वह पैसा अगर पुलिस पर ही खर्च होगा तो आपके हित के लिये सरकार कुछ नहीं कर सकेगी। आपको सरकार से कहना चाहिये कि हमारे गाँव में पुलिस मत भेजो। हमारी रक्षा करने के लिये हम समर्थ हैं। हमने जवान लोगों की सेना बनाई है। गाँव में अगर कोई दुर्जन भी रहा तो उसका भय नहीं मालूम होना चाहिये। दुर्जन को भी हमें प्रेम से जीतना है। हमारे गाँव का भाई हमारे घर का मनुष्य है। अगर लड़का ठीक बर्ताव नहीं करता है तो क्या माता उसको घर से निकाल देती है? वह तो उसको प्रेम से जीतेगी। उसी तरह गाँव के सब लोगों को हमें प्रेम से सीधे रास्ते पर लाना है। लोग कहते हैं कि दुर्जन पर हम प्रेम करते हैं तो वह और भी दुर्जन बनता है। लेकिन यह खयाल गलत है। अगर कहीं अंधकार है और उसमें हम दीपक लाते हैं तो क्या अंधकार ज्यादा हो जाता है? इस बात का बहुत अनुभव आ चुका है कि सज्जनता के सामने दुर्जन की बुद्धि भी शुद्ध होती है।

शिक्षण का जिम्मा गाँववाले उठायें

आप के गाँव में एक बहुत अच्छी बात हमने देखी, जो हमारी तरफ उत्तर हिंदुस्तान में नहीं है। किसी देहात में अगर हम सभा करते हैं तो आप के यहाँ स्त्रियाँ भी बहुत आती हैं। लेकिन वहां तो पुरुष ही पुरुष आते हैं। बहुत सी स्त्रियां तो परदे में रहती हैं तो सूर्य का दर्शन भी बिचारी को नहीं होता। आप के यहां स्त्री, पुरुष दोनों प्रेम से एक जगह आते हैं और ज्ञान सुनते हैं,

यह अच्छा है। गाड़ी में दो पहिये होते हैं, वैसे संसार की गाड़ी के भी स्त्री और पुरुष ये दो पहिये हैं। दोनों को ज्ञान की अत्यंत आवश्यकता है, और समान आवश्यकता है। लेकिन मैंने सुना है कि आप के गाँव में जो स्कूल चलता है उसमें केवल लड़के ही जाते हैं, लड़कियां नहीं जातीं। लेकिन लड़कियों को भी अच्छी तालीम मिलनी चाहिये। मैं जानता हूं कि गरीब लोगों के लड़के और लड़कियां स्कूल में नहीं जा सकतीं, उनको घर में काम रहता है। तो मैं कहता हूं कि गाँव में एक घंटे की स्कूल चलनी चाहिये। वह स्कूल सरकार नहीं बल्कि गाँव का पढ़ा-लिखा आदमी चलायेगा। उसके लिये पैसे भी नहीं लगेंगे। वह आदमी प्रेम से रात को एक घंटा सिखायेगा और दिन में भी एक घंटा सिखायेगा। अभी गोदावरी के तीर पर सोन नाम का गाँव है वहाँ, मैं गया था। वहां के लोगों से मैंने कहा कि प्रेम से एक घंटा सिखाने के लिये तैयार हो जाइये। वहां पर वैसे लोग तैयार हुए और मेरे जाने के बाद एक घंटे की पाठशाला वहां शुरू हो गई है। तो जैसे उस गाँव में हुआ है वैसे आप के गाँव में भी हो सकता है।

सहकारी दूकान गाँव में होनी चाहिये

मैने पूछा इस गाँव में दूकानें कितनी है। तो कहा गया कि तीन-चार हैं। लेकिन ये दूकानें खानगी हैं। मैं चाहता हूं कि आप के गाँव में सब लोगों की एक दूकान होनी चाहिये। चार-चार पांच-पांच रुपयों का शेअर बनाइये। इस तरह सब के पैसे से दूकान करेंगे तो आप को अच्छा माल मिलेगा और कोई

किसी को ठगेगा नहीं। अगर हरेक घर से चार-आठ या दस रुपये मिल जाते हैं तो तीन-चार हजार रुपयों की दूकान हो सकती है। इस तरह की बड़ी दूकान अगर गाँव में चले तो सब को ठीक भाव से माल मिलेगा। एक बच्चा भी उस दूकान पर माल खरीदने जायगा तो उसको ठीक भाव से ही माल मिलेगा। वह दूकान आपके गाँव की होगी। आप सब लोगों का उस पर हक होगा। उसमें अगर कोई लाभ हुआ तो वह भी आप सब लोगों को मिलेगा। मैं जानता हूं कि देहात के लोगों के पास धन कम है। लेकिन जो थोड़ा सा है वह इकट्ठा करेंगे तो बड़ा काम हो सकता है। देहात में धन कम है लेकिन शरीर-श्रम करने की शक्ति बहुत है। तो उसका उपयोग करो और सब मिल कर गाँव का काम करो इतना ही मुझे कहना है। मेरा आप लोगों को प्रणाम।

कलवरल, (जि० निजामाबाद)
२८-३-५१

पैदल-यात्रा का इतिवृत्त

विनोबाजीने ८ तारीख को सुबह प्रार्थना करके ठीक ४॥। बजे परंधाम आश्रम से बिदा ली और हैद्राबाद के सर्वोदय समेलन में शामिल होने के लिये पैदल-यात्रा शुरू की।

परंधाम आश्रम से विनोबाजी, महादेवीताई, मदालसाबाई, और रामोदरदास मूंदड़ा तथा गोपुरी से भाऊ पानसे, दत्तोबा और पांडुरंग गाड़ीवाला; इस तरह कुल सात लोगों की टुकड़ी रवाना हुई। बैलगाड़ी में टुकड़ी का सारा सामान रख लिया। यह गाड़ी हैदाबाद तक साथ रहनेवाली है। आगे चल कर व्यवस्था आदि करने के लिये दो सायकलें भी साथ थीं।

वर्धा के श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर में विनोबाजी ठीक ६ बजे पहुंचे। नारायण भगवान का दर्शन करना और वर्धा निवासियों तथा वर्धा की संस्थावालों से बिदा लेना यह छोटा-सा कार्यक्रम रखा गया था। विनोबाजी मूर्ति के सामने खड़े हो गये और ऊंचे स्वर से श्री शंकराचार्य का "अच्युत केशवं रामनारायणं" यह विष्णुस्तोत्र गाने लगे। अंत में गद्‌गद् हो कर भगवान को नमन किया और आशीर्वाद के लिये मनोमय प्रार्थना की। यह दृश्य देखकर कइयों को वह दिन याद आया जब श्री जमनालालजी ने यह मंदिर हरिजन आदि सब के दर्शन के लिये खोल दिया था। विनोबाजी उस दिन

भगवान विष्णु के चरणोंपर दृष्टि लगाये भावावस्था में लीन हो गये और उनकी आंखों से प्रेमाश्रु की अजस्र धार बहने लगी। निर्गुण-सगुण एक हो गये। आधा घंटा ठहर कर विनोबाजी ने अपनी यात्रा आगे चलाई।

तारीख ८ से २३ तक की उनकी यात्रा का वृत्त नीचे दिया गया है।

यात्रा का दिन	तारीख	मुकाम का गाँव	ज़िला	कितने मील चले
(१)	८ मार्च	वायगाँव	वर्धा	१३
(२)	९	रालेगाँव	यवतमाल	१७
(३)	१०	सखी-कृष्णपुर	,,	१४
(४)	११	रुंझा	,,	१०
(५)	१२	पांढरकवडा	,,	१२
(६)	१३	पाटण बोरी	,,	११
(७)	१४	आदिलाबाद	निजामस्टेट, आदिलाबाद	१६
*(८)	१५	म्ल्यापुर	आदिलाबाद	१३
*(९)	१६	मांडवी	,,	११
*(१०)	१७	तलमडगु	,,	१५
(११)	१८	डीहतनूर	,,	११
(१२)	१९	इच्छोडा	,,	८
(१३)	२०	डगांडी	,,	१६

(१४)	२१	गोपाल पेठ	आदिलाबाद	१३
(१५)	२२	निर्मल	,,	५
(१६)	२३	सुवर्णपुर	,,	८

चिन्हांकित गाँव हैद्राबाद के रास्ते पर नहीं थे। लेकिन मांडवा के कस्तूरबा ग्राम सेविका केंद्रवालों के आग्रह के कारण करीब ४२ मील का प्रवास अधिक हो गया।

विशेष बातें

वायगाँव के पहले मुकाम पर ही विनोबाजी ने गाँववालों से बात छेड़ी कि मजदूरों को हर रोज की मजदूरी में पैसे के अलावा कुछ अनाज निश्चित प्रमाण में देना चाहिये। साल्दारों को ऐसा दिया जाता है। कुछ चर्चा के बाद गाँववालों ने विनोबाजी की बात मान ली। विनोबाजी ने दस छटाक ज्वार का प्रमाण स्त्री-पुरुष सब मजदूरों को एकसा ही रखने का सुझाव रखा। ऊपर से जो पैसे देंगे उसमें कमी बेशी कर सकते हैं लेकिन ज्वार हमेशा के लिये दस छटाक देनी चाहिये। गाँववालों ने ज्वार देने का प्रस्ताव किया और शाम की प्रार्थना के बाद लोगों को वह सुनाया भी गया।

रालेगाँव पहुचने के पहले पोटी गाँव में हम लोगों ने वर्धा नदी पार की, और साथ ही वर्धा जिला। नदी में पानी बहुत ही कम था। रालेगाँव से हम यवतमाल जिले में दाखिल हो गये

रालेगाँव में विनोबाजी ने यही बात दोहराई। वहां तीन

लोगों ने दस्तखत कर के वचन दिया कि वे मजदूरी में दस छटाक ज्वार देंगे।

सखी-कृष्णपुर जंगल में बसे हुये गाँव हैं। सखी और कृष्णपुर अड़ोस-पड़ोस में हैं। विनोबाजी का मुकाम सखी गाँव में रखा गया था। इस जगह पर पहुँचते समय जंगल में रास्ता भूलने के कारण कुछ घूम कर हम लोग पहुंचे। चार साढ़े चार मील तक बीच में कोई आदमी भी नहीं मिलता था। पथरीला और ऊंचा नीचा रास्ता था। लेकिन जब गाँव में पहुंचे तो श्रमपरिहार हो गया। बीस-पचीस घास के झोंपड़े थे। लेकिन आम्र-वृक्षों की घनी छाया के नीचे तंबू में हमारा पड़ाव रहा इसलिये चित्त प्रसन्न हो गया। गांव के लोगों ने बड़े प्रेम से खिलाया पिलाया।

शाम की प्रार्थना में बहनें अधिक से अधिक आयें इस दृष्टि से मदालसाबाई हर घर में गई और बहनों को प्रार्थना सभा में ले आई। आसपास के गांवों से भी काफी लोग गाड़ियाँ ले कर पहुंच गये थे। तना छोटा और जंगल के बस्ती का गांव होते हुए भी यहां की सभा अच्छी हुई। बहनें कुछ देर से पहुंची। इसलिये उनके लिये विनोबाजी ने ५-१० मिनिट खास दिये।

मेटी खेड़ा के श्री आनंदराव सरोदे नाम के भाई सभा में आये थे। परंधाम के कांचनमुक्ति के प्रयोग के बारे में उन्होंने सवाल पूछा। बाद में विनोबाजी से उनका निकट परिचय भी हुआ। विनोबाजी ने इनका नाम सर्वोदय ही रख दिया। ये भाई आगे रुंझा में भी मिले।

'दैनिक प्रार्थना' की दो पैसेवाली किताबें लोग बहुत खरीदते हैं। विनोबाजी का साहित्य भी साथ रखा गया है। हर मुकाम पर प्रार्थना के पहले और बाद में साहित्य की बिक्री होती है।

वर्धा से वायगांव पक्का रास्ता था। वायगांव से आगे रुंझा के पास मोहदा गांव तक कच्चे रास्ते से ही मुसाफिरी हुई। मोहदा से आगे पांढरकवडे तक पक्की सड़क ही थी। पांढरकवड़े से फिर कच्चा रास्ता लिया। यवतमाल जिला पैनगंगा के किनारे पर समाप्त हो जाता है। पाटणबोरी से तीन मील की दूरी पर पैनगंगा मिली। इस नदी में भी पानी बहुत कम था। नदी पार करने पर निजाम स्टेट शुरू हो गई। कामई नाम के गांव से फिर पक्की सड़क मिली जो आदिलाबाद और उसके बाद हैद्राबाद तक है।

पांढरकवड़ा गाँव न देहात और न शहर ऐसा अधूरा सा ही है। यहां की प्रार्थना में बच्चों ने असंस्कारिता का ही परिचय दिया। अशांति खूब रही। आपस में मारना-धकेलना भी चलता रहा। विनोबाजी का करीब आधा घंटा बच्चों को समझाने में ही गया। इससे प्रार्थना सभा के लिये जो वातावरण चाहिये था वह नहीं रहा। विनोबाजी ५-१० मिनिट ही बोले। शहरों के बच्चों में मामूली सभ्यता भी दिखाई नहीं देती इसके लिये शालाओं के संचालकों को भी उन्होंने दोष दिया। संस्कारिता की दृष्टि से देहात और शहर का भेद साफ नजर आता था।

पांढरकवड़ा में गंगाविष्णजी, राधाकृष्णजी, अनसूया, शांताबाई रानीवाला और इश्वरभाई रांका आ मिले थे। यवतमाल के डॉक्टर मोरे भी आये। दिल्ली से हिंदुस्तान टाइम्स के संवाददाता श्री कल्हण भी आ पहुंचे। वे दस दिन साथ रह कर निर्मल से वापिस गये। गंगाविष्णजी, राधाकृष्णजी और अनसूया आदिलाबाद तक साथ रहे। शांताबाई रानीवाला मांडवी तक साथ रहीं और वहां से डॉ० मोरे के साथ वापिस वर्धा आ गई। ईश्वरभाई हैदराबाद तक साथ रहेंगे।

विनोबाजी तीन बातों पर खास ध्यान देते हैं: सुबह पांच बजे कूच करना, रात को नौ बजे सो जाना और दोपहर में ११ बजे भोजन करना। ये तीन बातें नियमित रहें तो बाकी का कार्यक्रम अपने आप नियमित बनता है ऐसा वे कहते रहते हैं। सुबह ५ बजे कूच करने का तो बिलकुल नियमित चल रहा है। रात को नौ बजे सोने की बात ५-७ रोज के बाद होने लगी। रात को गाड़ी में सारा सामान भर कर तैयार रखना पड़ता है। सुबह सिर्फ बिस्तरे बांध कर गाड़ी में रखना बाकी रहता है। दोपहर का खाना ११ और १२ के बीच अकसर हो जाता है।

अब यात्रा का सारा कार्यक्रम घड़ी के मुआफिक व्यवस्थित बन गया है। सुबह पांच से दस तक मुसाफिरी का समय रखा था जिसमें नास्ते आदि के लिये एक डेढ़ घंटा रखा था। लेकिन अब मुकाम पर पहुंच कर ही नास्ता करने का रखा है जिससे एक रफ्तार में ही धूप के पहले आठ-साढ़े आठ बजे के अन्दर मंजिल

तय हो जाती है। शाम की प्रार्थना सभा का निश्चित समय नहीं है। छः बजे प्रार्थना हो ऐसी विनोबाजी की इच्छा रही। कुछ रोज वैसा चला भी। लेकिन आदिलाबाद के बाद देखा गया कि आस-पास के देहात से काफी भाई-बहनें सभा और दर्शन के लिये आ जाती हैं। उनको अपने गाँव जल्दी वापिस जाने की सुविधा हो ईस दृष्टि से विनोबाजी चार बजे या कभी कभी तीन बजे भी सभा कर लेते हैं।

आदिलाबाद जिले में और खास करके निर्मल तहसील में गंगारेड्डी नाम के कार्यकर्ता ने देहातों में घूम कर काफी प्रचार किया दिखाई दिया। हर गाँव के प्रवेशद्वार पर बहनें आरतियाँ लेकर हाजिर रहती थीं और देहाती बाजे भी रहते थे। निर्मल तहसील के देहातों में चरखे काफी चलते हैं। निरडगोंडी में पहली बार पचीस-तीस चरखे सिर पर ले कर बहनें सूत कातने के लिये विनोबाजी के डेरे पर पहुँच गईं।

गोपालपेठ में तो हद हो गई। सारा गाँव पानी छिड़क कर साफ किया गया था। रांगोली भी आंगन में खींची गई थी। सड़क की दोनों बाजू आम के पत्तों की पताकाएं लगी थीं। आरतियाँ और बाजे तो थे ही। विनोबाजी की ठहरने की जगह बहुत ही कलामय और मार्मिक थी। इमली के पेड़ के नीचे बड़ और मोह के वृक्षों की डालियों का भव्य मंडप तैयार किया था। कहीं कील या रस्सी का नाम नहीं था। पाखाना, नहाने की जगह, रसोई घर

और विश्राम घर सभी पल्लवों के बने थे। ग्यारह बजे पास के चिचोली गाँव से पचास बहनें सिर पर चरखे ले कर गाने बजाने के साथ आ पहुँचीं। गोपालपेठ के पचास-साठ चरखे थे ही। कुल सौ से ऊपर चरखे जमा हो गये। और सारी बहनें कातने लगीं। इतने चरखे थे लेकिन एक चरखे की भी कर्णकटु आवाज नहीं आती थी। टूटन का तो नाम ही नहीं था। चरखे खड़े थे और लकड़ी की धुरा के थे, सिर्फ तकुआ लोहे का था। चमरख मकई के भुट्टों के पत्तों का और तकुवे की घिर्री अरहर के सूखे पेड़ की। प्रार्थना सभा के बाद सारी बहनों ने अपना कता सूत विनोबाजी को अर्पण किया। करीब साठ गुंडियां थीं। वह सूत वहीं चिचोली गांव में बुनने के लिए दे दिया। हैद्राबाद संमेलन में कपड़ा तैयार होकर आ जायगा।

ता० २३ को गोदावरी के तट पर पहुंच गये। गोदावरी के किनारे सुवर्णपुर—जिसे आज सोन कहते हैं—गांव क्षेत्र माना जाता है। सुवर्ण नदी व गोदावरी का यहां संगम है।

इस के बाद "गोदावर्याः दक्षिणे तीरे" हो कर निजामाबाद जिले में प्रवेश किया।

सोन (सुवर्णपुर) में विनोबाजी ने एक घंटे की पाठशाला चलाने की बात कही थी। उसके अनुसार दो ब्राह्मण पंडितों ने जिम्मा लिया। अब पता चला है कि ८ लड़कियां और १३ लड़के सुबह एक घंटा और शामको एक घंटा बड़े उत्साह से पढ़ने के लिये

आते हैं। और वे पंडित बारी बारी से उनको पढ़ाते हैं। ईशोपनिषद के मराठी श्लोक "दैनिक प्रार्थना" पुस्तिका में से बच्चे कंठ कर लेते हैं।

सोन के आगे निम्न प्रकार प्रवास हुआ।

यात्रा का दिन	तारीख	मुक्काम का गाँव	जिला	कितने मील चले
(१७)	२४	बालकोंडा	निजामाबाद	११
(१८)	२५	आरमूर	,,	१०
(१९)	२६	निजामाबाद	,,	१७
(२०)	२७	डिचपल्ली	,,	१०
२१)	२८	कलवरल	,,	११
(२२)	२९	कामारेड्डी	,,	११

ऊपर की सारी यात्रा निजामाबाद जिले में हुई। ३० तारीख से ५ अप्रैल तक का कार्यक्रम निम्न प्रकार है।

(२३)	३०	रामायणपेठ	मेदक	१७
(२४)	३१	मसाईपेठ	,,	१२
(२५)	१	मनोहराबाद	,,	१२
(२६)	२	मेडचल	हैद्राबाद	१२
(२७)	३	तिलमलगिरी	,,	११

(२८)	४	हैद्राबाद	,,	८
(२९)	५	शिवरामपल्ली	,,	५

आज तक कुल मील ३३९

निजामाबाद और आरमूर में सायंप्रार्थना के बाद स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा का अच्छा कार्यक्रम हुआ।

बालकोंडा में मेटपल्ली के चरखा संघ के आठ-दस कार्यकर्ता पैदल आ कर विनोबाजी से मिले। आरमूर तक वे विनोबाजी के साथ रहे। और वहां से २२ मील फिर पैदल चल कर वापिस गये।

हैद्राबाद स्टेट के चंद बड़े शहरों में निजामाबाद एक बड़ा शहर है। यहां तेलुगु में प्रवचनों का अनुवाद नहीं करना पड़ा और श्रोतागण भी मध्यम श्रेणी के थे। इसलिए विनोबाजी का यह प्रवचन काफी विस्तार से हुआ।

कामारेड्डी से हैद्राबाद केवल ७२ मील है।

इस तरफ के देहातों में खास बात यह देखी गई कि सभा में करीब आधी संख्या स्त्रियों की होती है। और सब भाषण बड़ी शांति से सुनती हैं।

विनोबाजी का साहित्य हिंदी-मराठी में अच्छी मात्रा में बिकता गया। इस बिक्री की खास बात यह है कि केवल किसी

विक्रेता या प्रचारक के पास पुस्तकें नहीं जातीं बल्कि हरेक पढ़ने-वाले के पास वे पहुँच जाती हैं।

पाठकों से सीधा संपर्क स्थापित होता है इस दृष्टि से यह बिक्री विशेष महत्त्व रखती है। हैद्राबाद पहुंचने तक करीब छह सौ रुपयों की बिक्री हो जायगी। हर गांव में कितनी और कौनसी किताबें दी गईं इसकी तालिका रखी गई है।

—दत्तोबा दास्ताने